सेन्ट्रलाइट

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

CENTRALITE

खंड/vol. 46 अंक-01 मार्च/March-2024

विशेष आकर्षण

माननीय कार्यपालक निदेशक
श्री विवेक वाही जी का साक्षात्कार

प्रश्न मंच एक - इनाम अनेक

ऐप आधारित बैंकिंग

बिहार की प्रथम महिला शाखा, राजेन्द्र नगर, पटना का शुभारंभ करते हुए, माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव, साथ हैं, अंचल प्रमुख, श्री डी पी खुराना, क्षेत्रीय प्रमुख, श्री आर. आर. सिन्हा एवं शाखा प्रमुख, सुश्री अर्चना शर्मा.

पटना में आयोजित टाउन हाल बैठक में स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए, माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम वी राव एवं महाप्रबंधक, श्री मुकुल दांडीगे, अंचल प्रमुख, श्री डी पी खुराना, क्षेत्रीय प्रमुख श्री आर.आर. सिन्हा . इस अवसर पर 'ग्लोरियस बिहार' नाम से बैंक के उत्पादों का बुकलेट भी जारी किया गया.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका
A Quarterly House - Journal of Central Bank of India
प्रकाशन तिथि - 10.05.2024 • खंड / Vol. 46 - 2024 • अंक - 1 • मार्च / March 2024

.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

संपादक
पॉपी शर्मा

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
एस. के. गुप्ता
एस. एच. अय्यूबी
राजीव वार्ष्णेय

संपादकीय सहायक
संजय भट्ट
अनिता धुर्वे

Editor
Poppy Sharma

Editorial Board
Vasti Venktesh
S. K. Gupta
S. H. Ayubi
Rajiv Varshney

Editorial Assistant
Sanjay Bhatt
Anita Dhurve

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

Articles Published in this magazine does not necessarily contain views of the Bank.

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 5
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 6
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश 7
संपादकीय 8
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही जी का साक्षात्कार 9
हमारी केरल यात्रा 12
मै नहीं हम (टीम भावना) 15
माँ का आंचल 16
टीमवर्क 17
मोटा अनाज, सेहत का राज़ 19
यत्र प्रतिभा अवसर प्राप्नोति: 20
सबसे अच्छा या सबसे बुरा दोस्त? 21
टीम भावना 22
सेवानिवृत्ति 23
जीवन की धारा 25
महिलाओं को प्रोत्साहन : राष्ट्र की उन्नति में सहयोग 26
पदोन्नति 30
खेल दिवस, केन्द्रीय कार्यालय 31
खेल दिवस, विभिन्न अंचल 32
हिंदी के लिए उपयोगी ई-टूल्स 33
दहेज 37
मै नहीं हम 39
सेन्ट निओ 40
वित्तीय समावेशन: आर्थिक विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण मिशन 41
घरों को सशक्त बनाती - पीएम - सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना 48
पणजी क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण की झलकियां 50
Digital Banking: A New Era of Financial Services and the CENT NEO Project's Pioneering Role 51

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : सुश्री पॉपी शर्मा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

Designed, Edited and Published by Ms. Poppy Sharma for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंधक निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित मैं वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए बैंक द्वारा दर्शाये गये शानदार परिणामों के लिये आप सबको हार्दिक बधाई देता हूँ. मैं 12वें वेतन समझौते के लिये भी आप सभी सेन्ट्रलाइट साथियों को बधाई देता हूँ.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया अब प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. हमारा प्रयास है कि हम बैंक का व्यवसाय बढ़ाने के साथ-साथ अपनी ग्राहक सेवा को लगातार बेहतर बनाते जाएं. हम अपने प्रिय ग्राहकों की सुविधा के लिए उन्हें नवीनतम तकनीक वाली और बेहतर डिजिटल सुविधाएं प्रदान करें. इस दिशा में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कुछ समय पूर्व ही प्रयास प्रारंभ कर दिए थे. हमने इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग जैसी सुविधाएं प्रारंभ कर अपने प्रिय ग्राहकों को कभी भी कहीं से भी 24*7 बैंकिंग सुविधाएं दे दी थीं. इन सुविधाओं का लाभ हमारे करोड़ों ग्राहक उठा रहे हैं.

इस क्रम में अब हम एक नया बैंकिंग ऐप लाने जा रहे हैं. यह ऐप ग्राहकों के लिए एक पूरी शाखा के समान बैंकिंग सेवाएं प्रदान करेगा. इस ऐप के माध्यम से उपयोगकर्ता जमा और ऋण योजनाओं के अंतर्गत खाता खुलवा सकता है, ऋण आवेदन कर सकता है, धन अंतरण कर सकता है, कहीं से धन प्राप्त कर सकता है.

यह ऐप ग्राहकों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है. यह ऐप हमारे बैंक के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाला ऐप होगा ऐसा भी विश्वास है.

सभी सेन्ट्रलाइटों को अपने-अपने स्तर पर बैंक की प्रगति में अपना अधिकतम संभव योगदान देना है. सर्वश्रेष्ठ ग्राहक सेवा देनी है. शाखा परिसर को स्वच्छ रखना है. अपने ग्राहकों को बैंक के डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते रहना है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम.वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सबसे पहले मैं आप सभी को आने वाले पर्वों के लिए मेरी मंगलकामनाएं देता हूँ.

अभी-अभी संपन्न वित्त वर्ष 2023-24 के परिणाम घोषित हुए हैं. इस वित्त वर्ष के दौरान माननीय एमडी एवं सीईओ सर के कुशल नेतृत्व में हमारे बैंक ने उत्कृष्ट परिणाम दर्शाये हैं. इसके लिए मैं सम्माननीय एमडी एवं सीईओ सर सहित समस्त सेन्ट्रलाइट को हार्दिक बधाई देता हूँ.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया अपने ग्राहकों के सुविधा के प्रति हमेशा आगे बढ़कर प्रयास करता रहा है. हमने समाज के हर वर्ग के लिए उनकी ज़रूरतों के अनुरूप और उनके सपनों को पूरा करने के लिए जमा और ऋण दोनों प्रकार के उत्पाद/योजनाएं बनाई हैं. इतना ही नहीं हमने ग्राहकों की सुविधा के लिए अपनी योजनाओं का डिजिटलीकरण भी कर दिया है.

डिजिटलीकरण को और अधिक उपयोगी बनाने की दिशा में हमारा बैंक लगातार प्रयास कर रहा है और वर्तमान में हम एक नए मोबाइल बैंकिंग ऐप पर तेजी से काम कर रहे हैं, जो शीघ्र ही लॉन्च किया जाएगा. इस ऐप के माध्यम से हमारे ग्राहकगण अपने बैंकिंग के कार्य 24*7 करते हुए कहीं से भी हमारी बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे. इस ऐप के माध्यम से जमा खाते खोले जा सकते हैं, सावधि रसीद बनवाई जा सकती है, आवर्ती खाता खोला जा सकता है, स्थायी निर्देश दिए जा सकते हैं. इसके अतिरिक्त इस ऐप के माध्यम से ग्राहक ऋण लेने के लिए आवेदन भी कर सकता है. अपने खाते में राशि जमा की जा सकती है, सम्प्रेषित की जा सकती है, रकम मंगवाई जा सकती है. हमें विश्वास है कि यह बहु उपयोगी ऐप ग्राहकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा.

सभी सेन्ट्रलाइट यह ध्यान रखें कि वह अपने शाखा परिसर में आने वाले हर व्यक्ति के साथ उत्कृष्ट व्यवहार करें. शीघ्रता से सेवा प्रदान करें. शाखा का एनपीए न्यूनतम करें. अपने संपर्कों का लाभ बैंक का व्यवसाय बढ़ाने में करें जिससे बैंक की और अधिक प्रगति हो सके.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

हमारे महान बैंक द्वारा वित्त वर्ष 2023-24 के शानदार परिणामों के लिए सम्मानीय एमडी एवं सीईओ सर के कुशल मार्गदर्शन के प्रति अपना धन्यवाद ज्ञापित करते हुए सभी सेन्ट्रलाइट साथियों को हार्दिक बधाई भी देता हूँ.

इस अवसर पर आगामी पर्वों एवं त्योहारों के लिए भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ.

हमारा प्रिय सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ग्राहकों के लिए निरंतर नई-नई योजनाएं प्रारंभ करता रहता है. यह सुविधाएं ग्राहकों की उपयोगिता के अनुरूप एवं नवीनतम तकनीकी से युक्त होती हैं.

सीबीएस, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग जैसी उन्नत सुविधाएं देने के बाद सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया शीघ्र ही अपने ग्राहकों के लिए नवीनतम डिजिटल सुविधा वाले एक नए बैंकिंग ऐप को लॉन्च करने जा रहा है. इस ऐप के माध्यम से वस्तुत: एक शाखा ही ग्राहक की मुट्ठी में (मोबाइल में) हो जाएगी. इस सुविधा के माध्यम से उपयोगकर्ता व्यक्ति (ग्राहक) सभी प्रकार के जमा खाते खोल सकता है एवं बंद कर सकता है. ऋण लेने के लिए आवेदन कर सकता है, अपना खाता विवरण देख सकता है, पासबुक देख सकता है, धनराशि प्रेषित कर सकता है, टैक्स जमा करवा सकता है, बिलों का भुगतान करवा सकता है. आवश्यकता पड़ने पर बैंक को स्थायी निर्देश भी दे सकता है. इस ऐप की सेवा कभी भी कहीं से भी बिना किसी कार्यालयीन अवकाश के निरंतर मिलने वाली सेवा है. इस तरह से देखा जाए तो ग्राहकों के लिए यह एक अत्यंत उपयोगी ऐप सिद्ध होगा.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट यह ध्यान रखें कि ग्राहकों की सुविधा के लिए नवीनतम तकनीक और सुविधाएं प्रदान करने के अतिरिक्त उन्हें सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करना भी अति आवश्यक है. ऐसा करते हुए आप सभी को टीम भावना के साथ अपनी-अपनी शाखाओं को प्रगति के पथ पर लेकर चलना होगा.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सबसे पहले मैं 31 मार्च 2024 को समाप्त हुए वित्त वर्ष के दौरान बैंक के अच्छे रिज़ल्ट के लिए अपने सम्माननीय एमडी एवं सीईओ सर के कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें बधाई देता हूँ. मैं आप लोगों को भी इन परिणामों के लिए ढ़ेर सारी बधाई देता हूँ.

आप सब जानते ही हैं कि वर्तमान दौर तकनीक का दौर है जहाँ हमारे ग्राहक हमसे निरंतर नवीनतम एवं बेहतर तकनीक वाली सेवा चाहते हैं. सभी व्यावसायिक बैंको की तरह हमारा बैंक भी अपने ग्राहकों को निरंतर नवीनतम तकनीकी सुविधाओं से युक्त सेवा प्रदान करता आ रहा है.

इस श्रृंखला में हमारा बैंक एक अत्याधुनिक तकनीकी वाला नया मोबाइल बैंकिंग ऐप लेकर आ रहा है जिससे हमारे ग्राहकों को 24*7 कभी भी कहीं से भी बैंकिंग करने की सुविधा मिल जाएगी. इस ऐप के माध्यम से कोई व्यक्ति हमारे बैंक में अपना खाता खुलवा सकता है, ऋण लेने के लिए आवेदन कर सकता है. उस ऐप में हमारे बैंक की ढेर सारी सुविधाएं उपलब्ध होगी.

हमारे सभी सेन्ट्रलाइट ऐप के लॉन्च होने के बाद अपने ग्राहकों के बीच इसे लोकप्रिय बनाने के लिए हर संभव प्रयास करें. इस ऐप को डाउनलोड करने एवं इसका उपयोग करने हेतु ग्राहकों को प्रेरित करें. सभी सेन्ट्रलाइट हमारे सेंट पे (यूपीआई) ऐप का उपयोग करें और ग्राहकों को भी इसके अधिक से अधिक उपयोग हेतु डाउनलोड करवायें.

हमारे प्रिय सेन्ट्रलाइट आप जिस भी कार्यालय में जिस पद पर भी कार्य करते हों वहाँ आप अपने सहकर्मियों के साथ सदैव टीम भावना के साथ काम करें. परस्पर बेहतरीन तालमेल बनाकर रखें, मिलजुलकर काम करें. अपने ग्राहकों को सर्वोच्च प्राथमिकता दें. उन्हें सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान करें और उनकी समस्याओं एवं पूछ्ताछ का सदैव संतोषजनक समाधान करे.

ध्यान रखें बैंक की प्रगति का मार्ग ग्राहकों की संतुष्टि से ही आगे बढ़ता है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(महेंद्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

मैं अपने सम्माननीय एमडी एवं सीईओ श्री एम वी राव, अपने तीनों ईडी श्री विवेक वाही, श्री एम वी मुरली कृष्णा एवं श्री महेन्द्र दोहरे जी को हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद देना चाहती हूँ जिनके कुशल नेतृत्व में बैंक ने वित्त वर्ष 2023-24 में शानदार कामकाजी प्रदर्शन किया है. मैं इसके लिए आप सभी को बधाई देती हूँ.

इस वर्ष हमने सभी संवर्गों के लिए पदोन्नती प्रक्रिया आयोजित की तथा निर्धारित समय पर पद नियुक्तियां भी प्रदान कर दी है.

हर्ष का विषय है अभी-अभी बैंक कर्मचारियों एवं अधिकारियों का भारतीय बैंक संघ के साथ 12वां द्विपक्षीय वेतन समझौता संपन्न हुआ. हमने दिनांक 30.03.2024 को अपने सभी कर्मचारियों को एरियर का भुगतान सफलतापूर्वक कर दिया है. यही नहीं हमने पेंशनरों को भी एक्सग्रेसिया और उनके एरियर का भुगतान भी कर दिया है.

मैं इस संपादकीय के माध्यम से आप सभी से यह कहना चाहती हूँ कि जो सेन्ट्रलाइट इस प्रक्रिया में पदोन्नत हुए हैं वे नए पद पर अपनी प्रतिभा कौशल का उपयोग करके बैंक की प्रगति में अपना अधिकतम संभव योगदान प्रदान करें. इसके अतिरिक्त बहुत सारे सेन्ट्रलाइट ट्रांसफर के कारण अन्यत्र स्थानों पर गए हैं. आशा की जाती है कि नए केंद्र पर उनका कार्य निष्पादन और भी बेहतर होगा.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को अपने कार्यालय में अन्य सहकर्मियों के साथ बेहतरीन तालमेल सहित टीम भावना से कार्य करने से बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे.

आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

माननीय कार्यपालक निदेशक

श्री विवेक वाही जी का साक्षात्कार

साक्षात्कार कर्ता: श्री राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा
फोटो: श्री सुनील कुमार साव, सहायक प्रबंधक-राजभाषा

1. सर अभी- अभी वित्तीय वर्ष 2023-24 समाप्त हुआ है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के परिणाम पर आप क्या कहना चाहेंगे?

श्री विवेक वाही- इस वर्ष हमारे परिणाम बहुत शानदार रहे हैं. हमने अब तक का सबसे अधिक लाभ कमाया है. हमारा व्यवसाय 636756 करोड़ हो गया है. हमारी कम लागत की जमायें अब 50% से अधिक हो गई हैं. कुल मिलाकर यह बहुत अच्छे कामकाजी परिणाम है.

2. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने एनपीए के स्तर में काफी कमी की है. इस दिशा में अभी आपकी और क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही- हमारा सकल एनपीए अब 4.50% हो गया है जबकि नेट एनपीए 1.23% रह गया है. हम अपना एनपीए शून्य स्तर पर लाने की ओर बढ़ रहे हैं. हमें आशा है कि हम शीघ्र ही इस दिशा में सफल होंगे.

3. शाखा स्तर पर ग्राहक सेवा में सुधार के लिए सेन्ट्रलाइटों से आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही - मेरा मानना है कि ग्राहक सेवा बैंकिंग व्यवसाय का आधार है. कहते हैं कि एक संतुष्ट ग्राहक चलता फिरता विज्ञापन होता है. शाखा में आने वाले ग्राहक एवं अन्य व्यक्तियों के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार किया जाए. उनके प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया जाए तथा उनके कार्य को शीघ्रतापूर्वक निपटाया जाए. अतिथि देवो भव: के भाव से ग्राहकों के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए.

4. वर्ष 2024- 25 में बैंक के व्यवसाय में वृद्धि के लिए कर्मचारियों से आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही- हमारे बैंक में योग्य कर्मचारी हैं तथा वह परिश्रमी भी हैं. कर्मचारियों से यही अपेक्षा है कि वह अपना कार्य पूरी ईमानदारी के साथ निर्धारित समय के भीतर करें. वे बैंक परिसर के अंदर ही नहीं बाहर भी बैंक के ब्रांड एंबेसडर की तरह व्यवहार करें और विद्यमान तथा संभावित ग्राहकों के साथ शिष्टतापूर्वक व्यवहार करें. यही नहीं बैंक से जा चुके पुराने ग्राहकों को पुन: बैंक से जोड़ने का हर संभव प्रयास करें. शाखा में सतर्कता पूर्वक कार्य करें. किसी भी गड़बड़ी की आशंका होने पर तत्काल उच्च अधिकारियों को सूचना दें.

5. बैंक के कर्मचारियों के प्रोत्साहन हेतु आपकी क्या योजना है?

श्री विवेक वाही - हम अपने कर्मचारियों के प्रोत्साहन के लिए लगातार योजनाएं चला रहे हैं जिसके अंतर्गत कर्मचारियों को नकद पुरस्कार, मनचाही पोस्टिंग सहित पदोन्नति में वरीयता जैसे लाभ दिए जा रहे हैं.

6. बैंक के शाखा विस्तार संबंधी आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही- इस वर्ष हम अपने नेटवर्क को और अधिक विस्तार देना चाहते हैं.

7. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कर्मचारियों के बीच टीम भावना आप कैसी मानते है?

श्री विवेक वाही- मैं कह सकता हूं कि सेंट्रल बैंक आफ इंडिया की टीम भावना बहुत अच्छी है. लेकिन इसमें अभी और सुधार किया जाना आवश्यक है जिसमें हर शाखा एक

टीम के रूप में काम करें और जिसमें हर सदस्य अपनी निर्धारित भूमिका को सफलतापूर्वक निभाए.

8. बैंक के लाभ को बढ़ाने के लिए कर्मचारियों से आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही- कर्मचारियों के सहयोग के बिना बैंक प्रगति नहीं कर सकता है. हमारे कर्मचारियों को निरंतर सजग और जागरूक होकर काम करना होगा जिससे शाखा स्तर पर धोखाधड़ी विशेषकर साइबर अपराध जैसे अपराधों को टाला जा सके. धोखाधड़ी की घटनाएं बैंक की लाभप्रदता पर प्रतिकूल प्रभाव डालने के साथ-साथ बैंक की छवि को भी खराब करती है. इसके अतिरिक्त सभी सदस्यों द्वारा वसूली में भी अपना यथासंभव योगदान देना चाहिए जिससे लाभप्रदता बढ़ सके.

9. टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सेंट्रल बैंक आफ इंडिया ने काफी सराहनीय प्रयास किया है. इस दिशा में अब आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही- हम अपने बैंक को पूरी तरह आधुनिक तकनीक से संपन्न बैंक बनाना चाहते हैं. इस दिशा में हम बहुत सारी सुविधाएं देने के पश्चात अब एक अत्याधुनिक ऐप भी जारी करने की दिशा में तेजी से अग्रसर हैं.

10. पिछले दिनों सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया को बेस्ट एचआर प्रैक्टिस के लिए सम्मानित किया गया था. इस दिशा में आपकी और क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री विवेक वाही- ऐसा माना जाता है कि एक संतुष्ट कर्मचारी संस्था की सफलता की रीढ़ होता है. हमारा प्रयास है कि ईमानदार, कर्मठ और लक्ष्य प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को समय पर पदोन्नति और जहां तक संभव हो मनपसंद पोस्टिंग दी जाएं. उन्हें समुचित सुविधाएं दी जाएं जिससे कार्य क्षेत्र उनके लिए सर्वाधिक पसंदीदा क्षेत्र बन सके जिससे वह आनंदमय वातावरण में उत्साह पूर्वक कार्य कर सके. वह अपनी समस्याओं को उच्च प्रबंधन के समक्ष प्रस्तुत करने में संकोच न करें तथा संस्था के लिए उपयोगी सुझाव भी भेजें. कर्मचारियों में स्वस्थ प्रतियोगिता का भाव रहे तथा वह परस्पर बेहतरीन कार्य करने की स्पर्धा करें. हम नियमित अंतराल पर उनके लिए आकर्षक व मनोरंजक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करते रहते हैं इसमें उन्हें शानदार पुरस्कार भी दिए जाते हैं.

11. सर, कुछ व्यक्तिगत बात की जाए तो आपकी रुचियां क्या-क्या है?

श्री विवेक वाही - मेरी खेलों में रूचि है. मैं क्रिकेट एवं फुटबॉल जैसी खेलों का अनुकरण (फॉलो) करता हूं.

12. सर, ऐसे तो आप बहुत व्यस्त रहते हैं पर फुर्सत के क्षणों में आप क्या करना पसंद करते हैं?

श्री विवेक वाही - मैं खेलों में रूचि रखता हूं. समाचार के चैनल भी देखता हूं.

13. एक कार्यपालक निदेशक के रूप में आप सेंट्रल बैंक आफ इंडिया के कार्य वातावरण को कैसा देखना चाहते हैं?

जो व्यक्ति अपने मार्ग से भटक जाता है, वह विनाश के रास्ते पर निकल जाता है.

श्री विवेक वाही- सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया का कार्य वातावरण बहुत अच्छा है और मैं कार्यालय के वातावरण को बिल्कुल पारिवारिक वातावरण के रूप में देखना चाहता हूं.

14. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया फिजिटल बैंकिंग की दिशा में क्या करने जा रहा है?

श्री विवेक वाही- हम इस दिशा में तेजी से कार्य कर रहे हैं और शीघ्र ही इसे सार्थक करेंगे.

15. क्या सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया कुछ शाखाओं को केवल महिला शाखा के रूप में स्थापित कर रहा है?

श्री विवेक वाही- अवश्य, हम कई महिला शाखाएं खोल चुके हैं और हमारा प्रयास है कि हर क्षेत्र में न्यूनतम एक महिला शाखा अवश्य हो.

16. आपके अनुसार एक आदर्श शाखा प्रबंधक कैसा होना चाहिए?

श्री विवेक वाही- शाखा के प्रबंधक को एक टीम के कप्तान की तरह होना चाहिए. वह अपनी टीम के प्रत्येक सदस्य की क्षमताओं को पहचान कर तदनुसार उनकी भूमिका तय करें. अपनी शाखा की ग्राहक सेवा को वह उच्चतम स्तर पर ले जाए. वह उच्च कार्यालयों की अपेक्षाओं पर भी खरा उतरे और निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में सकारात्मक रूप से आगे बढ़े.

17. इसी क्रम में आपके अनुसार एक आदर्श क्षेत्रीय प्रमुख कैसा होना चाहिए?

श्री विवेक वाही- क्षेत्रीय प्रबंधक ग्रासरूट लेवल पर पहला एग्जीक्यूटिव होता है. जिसे शाखाओं से काम करवाना होता है. एक टीम के कोच की भांति वह शाखा प्रबंधक को समुचित मार्गदर्शन दे सके, कार्य नीति समझा सके, क्षेत्रीय प्रमुख का विजन स्पष्ट हो और वह लक्ष्य उन्मुख कार्य करने वाला होना चाहिए.

18. एक आदर्श अंचल प्रमुख कैसा होना चाहिए?

श्री विवेक वाही- मेरे विचार से अंचल प्रमुख मेंटर की भांति होना चाहिए जो विजनरी भी हो, अच्छा रणनीतिज्ञ भी हो, वह अपने अंचल की भौगोलिक स्थिति और व्यवसाय की स्थिति के अनुसार इनोवेटिव बिजनेस आइडिया के साथ बिजनेस बढ़ाने का हौसला रखता हो.

19. आप सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के भविष्य को कैसा देखते हैं?

श्री विवेक वाही- नि:संदेह उज्जवल है. हमारे वर्तमान एमडी एंड सीईओ सर एक क्लियर एवं ग्रेट विजन के साथ हमारे बैंक को प्रगति के पथ पर लेकर आगे बढ़ रहे हैं जिसमें सभी सेन्ट्रलाइट अपना-अपना योगदान दे रहे हैं. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाला समय सेंट्रल बैंक आफ इंडिया का होगा.

20. आप सभी सेन्ट्रलाइटों को क्या संदेश देना चाहते हैं?

श्री विवेक वाही- बैंक अच्छी दिशा में आगे बढ़ रहा है. पूर्ण समर्पण और ईमानदारी से अपेक्षित कार्य करें. और ग्राहक सेवा को निरंतर उत्कृष्ट बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहे.

हमारी केरल यात्रा

केरल का नाम सुनते ही हमारे आखों के सामने हरियाली आ जाती है. हमने भी इस बार केरल जाने का मन बनाया. मुंबई से हमने फ्लाइट ली और कोच्ची एअर पोर्ट पर उतर कर वहाँ से हमने अपनी यात्रा शुरु की. केरल अपने समुद्री तटों के अतिरिक्त पर्वतीय पर्यटक स्थलों के लिए भी जाना जाता है. इन पर्वतीय स्थलों का अधिकांश आकर्षण पूर्वी घाटों के ऊपरी क्षेत्रों में बसा हुआ है. चाय, कॉफी, रबर तथा खुशबूदार इलायची के बागान हैं. भारत के दक्षिण पश्चिम छोर पर यह प्रदेश बहुत ही सुन्दर और हरा भरा है. मुझे सपरिवार इस प्रदेश की यात्रा करने का अवसर मिला तथा ये यात्रा मेरी अति सुखद और यादगार यात्रा रही.

कोची ऐरनाकुलम सटे हुए दो शहर, केरल के बड़े शहर हैं, ये तटीय शहर हैं, कोची एक व्यावसायिक बन्दरगाह होने के साथ-साथ भारतीय नौसना का मुख्य केन्द्र भी है. केरल का पूरा समुद्रतट कटाफटा है और बैक वाटर धरती के बीच आकर गलियाँ सी बना लेते हैं जो वहाँ रहने वालों के लियें स्थानीय यातायात का साधन भी बन जाती है. इन बैकवाटर की गलियों के तटों पर केले के पेड़ो के झुंड और नारियल के पेड़ों के समूह बहुत ज़्यादा नज़र आते हैं. लगभग सभी तटीय शहरों मे ऐसी व्यवस्था है.

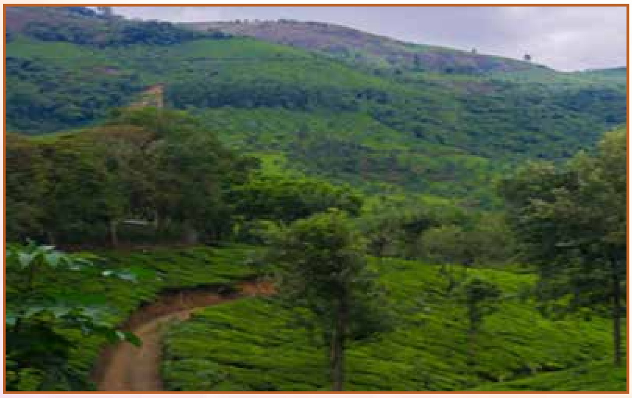

कोची हवाई अड्डे पर उतर कर हम मुन्नार की ओर चल दिये. इस सफर में हमें नीलगिरि पर्वत की चढ़ाई पर सड़क के दोनो ओर के अति मनोहारी दृष्य नजर आए. निचले पहाड़ो पर अधिकतर चीड़ के बड़े-बड़े वृक्ष और केले के पेड़ों के झुंड नज़र आते हैं. कुछ ऊँचाई पर पंहुचने के बाद हमें ढलानों पर चाय के बाग़ान शुरू होते नजर आए. चाय बाग़ान ऐसे लगते हैं मानो दूर-दूर तक प्रकृति ने हरी-हरी मेज़े लगा रखी हों और पाइन के पेड़ छतरी बने खड़े हों. यहाँ की मशहूर चाय कानन देवन है पर अन्य कई प्रकार की चाय भी यहाँ पैदा होती हैं. मुन्नार के पास एक चाय का म्यूज़ियम है, जहाँ मुन्नार के चाय के इतिहास, चाय के प्रकार, चाय के लाभ और चाय की पत्तियों के प्रौसेसिंग की पूरी जानकारी दी जाती है. यहाँ से हमने भी विभिन्न प्रकार की चाय ख़रीदी.

कुछ दूरी पर हमें मैटूपट्टम डैम और रैसरवायर भी देखा, जहाँ नौकाविहार का आनन्द लिया जा सकता है. मुन्नार शहर लगभग 6000 फीट की ऊँचाई पर स्थित है, यह चाय बाग़ानों का मुख्य केन्द्र है. यहाँ मौसम हमेशा सुहावना बना रहता है. पर्यटकों के आने से इस छोटे से शहर में छोटे बड़े बहुत से होटल व रैस्टोरैंट बन गये हैं. यहाँ हज़ारों गमलों मे विभिन्न प्रकार के क्रौटन और फूल लगे थे. इन सुन्दर दृष्यों का शब्दों मे वर्णन करना कठिन है.

नीलगिरि पर्वत पर 5 घन्टे की यात्रा पूरी करके हम पड़ाव टेकड़ी आ गए, पूरी पहाड़ी यात्रा बड़ी सुंदर तथा बड़ी सुहानी थी. यहाँ पर हमने रुक कर फोटोग्राफी भी की. यहाँ से ही पैरियार झील जाकर नौका विहार का आनन्द भी लिया. यहीं से सफारी के लियें भी जाया जाता है. टेकड़ी के आस पास बहुत से मसालों और आयुर्वैदिक जड़ी बूटियों के उद्यान हैं. सबसे ज्यादा सड़क के दोनो ओर इलायची के पौधे दिखाई दिये. मुन्नार चाय का केन्द्र है तो टेकड़ी मसालों का केंद्र है.

यहाँ कई मसाले के उद्यान हैं, वहीं पर मसाले तैयार किये जाते हैं जड़ीबूटियों से तेल और औषधियाँ भी बनाई जाती हैं. पर्यटकों की सुविधा के लियें वहाँ उन्होंने अपने उत्पाद बेचने के लिये दुकान खोली हुई है. हमने भी यहाँ से मसालों की ख़रीदारी की. यहाँ पर काली मिर्च की लतायें किसी भी मज़बूत पेड़ के साथ चढ़ा दी जाती है. काली मिर्च गुच्छों के रूप मे लटकती रहती हैं. इस मौसम मे कालीमिर्च का रंग हरा था उन्होने बताया कि मार्च तक पक कर वो लाल हो जायेंगी तब उन्हे तोड़ा जायेगा, फिर धूप मे सुखाने से वो काली पड़ जायेंगी.कच्ची हरी काली मिर्च हमने तोड़ कर खाई

विनम्रता से सब कुछ खरीद सकते हैं.

बहुत तेज़ नहीं लगी, बड़ी स्वादिष्ट लगी. काली मिर्च का प्रयोग औषधि के रुप में भी किया जाता है. यहाँ इलायची का पौधा क़रीब 4 फुट ऊँचा होता है, इस पौधे के निचले हिस्से से छोटी छोटी पत्ती वाली शाखायें फूटती हैं. इन पर इलायची लगती है. इलायची की फसल हर 45 दिन मे मिलती रहती है. दालचीनी और तेजपत्ता एक ही पेड़ के उत्पाद होते हैं. दालचीनी पेड़ के तने की छाल होती है और पत्ते तेजपत्ता. लौंग एक उँचे से पेड़ पर फूल या कली के रूप मे लगती है. हींग के पेड़ के तनों मे चीरा लगाकर एक द्रव्य निकलता है जो सूखकर हींग बन जाता है. यहाँ पर 2-3 प्रकार के छोटे केले पाए जाते हैं. केले, पतले छिलके वाले,बड़े बड़े केले चिप्स बनाने के काम आते हैं. लाल छिलके के केले मे लौह तत्व बहुत होता है. साबूदाना भी यहाँ उगाया जाता है जो पौधों की जड़ों मे लगता है.

इसके अतिरिक्त आयुर्वैदिक औषधियों और सौंदर्य प्रसाधनों मे काम आने वाली जड़ी बूटियाँ भी बहुत लगाई जाती हैं. हल्दी और अदरक भी यहाँ उगाये जाते हैं. हमें बताया गया कि हल्दी का एक प्रकार, खाने के काम में आता है और दूसरा सौन्दर्य प्रसाधन बनाने में. अदरक से अदरक पाउडर (सौंठ) भी बनाई जाती है. इन्ही उद्यानों में पान, सुपारी और कॉफी भी उगाई जाती है. कौफी के पेड़ों मे बेर के आकार के फल लटके रहते हैं जिनमे कौफी का बीज होता है इस बीज को भूनकर पीसने से कॉफी पाउडर मिलता है. मुन्नार की तरह टेकड़ी भी नीलगिरि पर्वत पर बसा छोटा सा शहर है.

यहाँ से हमारा अगला पड़ाव ऐलेप्पी था जो समुद्र तट पर स्थित है. पहाडी ढलानों पर यहाँ भी काफी दूर तक चाय बाग़ानों के अनुपम दृश्य दिखते रहे. यहाँ सड़क के दोनों ओर रबड़ और इलायची अधिक दिख रहे थे. रबड़ के पेड़ो के तनों मे चीरा लगाकर वहाँ से एक द्रव्य एकत्रित किया जाता है जिससे रबड़ बनती है. केले के वृक्ष के भी लगभग हर भाग को खाया जाता है. आमतौर पर घरों में और कुछ केरल के भोजनालयों में भी केले के पत्ते पर भोजन परोसा जाता है. केरल वासी मछली और सामिष भोजन भी खाते हैं. ऐलेप्पी में हमें हाउसबोट मे लगभग 24 घन्टे रहना था. हाउसबोट का डैक बहुत सुन्दर था. हमने 2 कमरों वाली हाउसबोट ली थी. हाउस बोट के डैक पर बैठकर हम केरल की बैकवाटर मे भ्रमण करने का आनन्द लेते रहें और बाहर के दृष्य देखकर मंत्रमुग्ध होते रहे. हाउसबोट चलती रही ऐलैप्पी शहर के दर्शन करते रहे. यहाँ भी मोटरबोट से स्थानीय यातायात होता है क्योकि बैकवाटर की बहुत सी धारायें हैं जो सड़क का काम देती हैं. छोटी छोटी नावों से भी लोग इधर से उधर आते-जाते रहते हैं. हाउसबोट को रात मे कहीं दूर ले जाकर लंगर डाल दिया जाता है. हाउसबोट का ये मनोरम अनुभव बहुत ही अनूठा था.

उसके बाद हम कोवलम गए. कोवलम तक के रास्ते मे, तटीय मैदान मे नारियल रबड़ और केले के सघन जंगल सड़क के दोनो ओर दिखते रहे. केरल की राजधानी त्रिवेंन्द्रम या तिरुवनन्तपुरम है जो एक बड़ा शहर है. यहाँ आधुनिक और पुरानी बहुत सुन्दर इमारतें दिखाई देती हैं. बड़े-बड़े शोरूम वाले बाज़ार भी दिखाई देते हैं. यहाँ हम एक रिसोर्ट में रुके थे जो समुद्र के पास था. केरल की भाषा मलयालम है. थोड़ी बहुत हिन्दी-अंग्रेज़ी से काम चल जाता है.

कोवलम से हम त्रिशुर गए. त्रिशुर में हमारा समय बहुत ही अच्छा बीता. गर्मियों में घूमने के लिए यह जगह अच्छी है. यहां कई समुद्र तट, बांध और झरने आदि घूमने को मिल सकते हैं. हर साल पर्यटक अपनी छुट्टियां बिताने के लिए यहां पहुंचते हैं.

केरल हमारी आंखों को सुकून देने वाले हरे-भरे जंगलों, ऊँची पहाड़ियों, मनमोहक समुद्र तटों, चाय के बागानों और जादुई बैकवाटर से सजाया गया राज्य है. यहाँ अनेक प्रकार के दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें प्रमुख हैं - पर्वतीय तराइयाँ, समुद्र तटीय क्षेत्र, अरण्य क्षेत्र, तीर्थाटन केन्द्र आदि. इन स्थानों पर देश-विदेश से असंख्य पर्यटक भ्रमणार्थ आते हैं. मून्नार, नेल्लियांपति, पोन्मुटि आदि पर्वतीय क्षेत्र, कोवलम, वर्कला, चेरायि आदि समुद्र तट, पेरियार, इरविकुळम आदि वन्य पशु केन्द्र, कोल्लम, अलप्पुषा, कोट्टयम, एरणाकुळम आदि झील प्रधान क्षेत्र (backwaters region) आदि पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र हैं. भारतीय चिकित्सा पद्धति - आयुर्वेद का भी इस पर्यटन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है.

एक तरह से हमारी केरल यात्रा यहीं समाप्त हो गई.

श्री बीरेन्द्र कुमार
मुख्य प्रबंधक
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

सीसीपीएल 2024 में मुंबई महानगर अंचल विजेता रहा. श्री एम वी राव, एम डी एवं सी ई ओ से विज़ेता ट्रॉफी स्वीकार करते हुए श्री अश्वनी धींगड़ा, अंचल प्रमुख, मुंबई अंचल. साथ में है श्री मुरली कृष्णा, कार्यपालक निदेशक.

हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव दिनांक 18 जनवरी 2024 को अहमदाबाद आगमन के दौरान स्टॉफ सदस्यों को संबोधित करते हुए.

अनावश्यक व्यय कष्टदायक होते हैं.

मै नहीं हम (टीम भावना)

'टीमवर्क वह ईंधन है जो जनसामान्य को कठिन से कठिन लक्ष्यों को प्राप्त करने का साहस प्रदान करता है.'

टीम वर्क कार्यस्थल की सफलता का एक अनिवार्य हिस्सा है. जब दो या उससे अधिक लोग साथ मिलकर किसी काम को करते हैं तो उसे टीम वर्क कहा जाता है. एक टीम में कई लोग भी हो सकते हैं लेकिन उन्हें एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित होना चाहिए. एक अच्छे प्रोजेक्ट या किसी विशेष काम को पूरा करने के लिए अलग-अलग तरह की योग्यता वाले लोगों की आवश्यकता होती है, लेकिन अगर आपके पास एक अच्छी टीम है तो आप अपनी किसी भी योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर सकते हैं. कई बार हम कोई ऐसा काम करते हैं जो हमारे लिए बोझिल हो जाता है और वह पूरा नहीं होता. उस काम में पूरी शक्ति लगाने के बाद भी वह काम अधूरा ही रहता है. इसके विपरीत एक टीम किसी भी जटिल और कठिन काम को आसानी से पूरा कर देती है. टीम वर्क का बहुत महत्व है. यह कहने में आसान लगता है, लेकिन एक टीम को बनाए रखना और उसे प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहना सबसे बड़ी चुनौती है. जिसके कई उदाहरण हमें कहानियों में भी मिल जायेंगे.

यहाँ मैं एक प्रसंग की चर्चा कर रहा हूँ - एक समय की बात है एक व्यक्ति बड़े से शिलाखंड को बैलगाड़ी पर चढाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन काफी मेहनत और कई कोशिशों के बावजूद वह उस पत्थर को बैलगाड़ी पर नहीं चढा पा रहा था. वहाँ से गुजर रहा एक राहगीर बडी देर से उसकी यह कोशिश देख रहा था. कुछ समय बाद वह उस व्यक्ति के पास आया और उससे कहा माफ करें, लेकिन आप गलत तरह से काम कर रहे हैं. इस तरह आप पत्थर को बैलगाड़ी में नहीं चढ़ा पायेंगे. पसीने से लथपथ उस इंसान को गुस्सा आ गया. वह बोला, तुम अपना काम करो, मैं पहले भी पत्थर चढ़ा चुका हूँ. राहगीर जानता था कि वह व्यक्ति स्वाभिमानी है और वह मदद नहीं लेगा. इसलिए उसने कहा, मैं आपको एक तरीका बताना चाहता हूं, जिससे आप आसानी से इसे बैलगाडी में चढा सकते हैं. राहगीर की बात सुनकर वह व्यक्ति थोडा गुस्सा हुआ. उस व्यक्ति ने उस शिलाखंड को जमीन पर टिका दिया और सीधा तन कर खड़ा हो गया और बोला, बताओ, तुम कौन सा ऐसा तरीका बताना चाहते हो? जिसे मैं नहीं जानता. इस पर राहगीर ने पत्थर का एक कोना उठाया और कहा, अगर हम दोनों मिलकर पत्थर को उठाएँ, तो हम इसे बैलगाड़ी में चढ़ा सकते हैं. वह व्यक्ति मुस्कुराया और दोनों ने पत्थर पकड कर बैलगाड़ी में चढ़ा दिया. यह टीम वर्क द्वारा कार्य किया गया.

एक साथ आना एक शुरुआत है, साथ रहना एक प्रगति है और एक साथ काम करना एक सफलता है. - हेनरी फोर्ड

टीम वर्क : यह अपने लक्ष्य को पाने का सबसे अच्छा तरीका है. यह किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए एक समूह का सहयोगी प्रयास है. टीम वर्क एक समूह है जो एक समान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम करते हैं.

टीम का महत्व : किसी भी कार्य को आप अकेले कितना भी कर लें मगर आपको उतनी सफलता नहीं मिलेगी, जितनी उस कार्य को आप टीम के साथ करने में मिलेगी. आप अकेले ज्यादा दूर नहीं जा सकते, कुछ दूर तक तो आप दौड़ लोगे मगर ज्यादा दूर जाने के लिए आपको टीम की जरूरत होगी. हमें कार्य में टीम बनाकर सफलता प्राप्त की जा सकती है. एक आदमी अकेला दिन में 10 घंटे काम कर सकता है. मतलब उसके पास सीमित घंटे होते हैं

काम करने के लिए, लेकिन अगर आप के पास 10 लोग है, अगर एक व्यक्ति एक दिन 8 घंटे काम करा सकता हैं तो आपके पास 10 लोगों द्वारा एक दिन में 80 घंटे हो जायेंगे और इससे आपके काम में लाभ ही होगा.

टीम वर्क किसी भी संगठन में महत्वपूर्ण है. उसके कारण निम्नलिखित है-

- टीम सदस्यों के बीच संसाधनों और जिम्मेदारियों का सहज आदान-प्रदान जो किसी भी परियोजना को आसानी से और कुशलता से काम करने में मदद करता है.
- टीम के सदस्यों के बीच जवाबदेही का विभाजन होता है क्योंकि टीम के सदस्य एक दूसरे को निराश नहीं करना चाहते हैं.
- एक संयुक्त लक्ष्य की ओर एक टीम के रूप में सफलतापूर्वक काम करना सभी को बेहतर काम करने में मदद करता है.
- टीम वर्क से काम जल्दी हो जाता है.
- टीमवर्क से काम आसान हो जाता है.
- स्वयं से जो काम आप साधारण तरीके से कर सकते हैं टीमवर्क से वही काम और बेहतरीन ढंग से कर सकते हैं.

जब आप ऐसे लोगों के समूह के साथ काम कर रहे होते हैं, जो आपकी ताकत के आधार के रूप में खडे होते हैं और आपका समर्थन करते हैं, तो आपकी टीम जल्द ही आपका परिवार बन जाएगी. टीम वर्क का एक सबसे बडा फायदा यह है कि इससे कर्मचारियों में आत्मविश्वास पैदा होता है. खुश कर्मचारियों के साथ काम करने से निर्णय लेने में बेहतर होता है और इसलिए काम बोझ जैसा नहीं लगता है. कर्मचारी खुशी-खुशी कार्यालय में आयेंगे अंतत: उनके कार्यनिष्पादन में वृद्धि होगी.

टीम वर्क सीखने को बढ़ावा देता है -

एक टीम में काम करते हुए आप विभिन्न लोगों से मिलते हैं, आप विभिन्न प्रकार के कौशल और प्रतिभा वाले लोगों का सामना करते हो. एक साथ काम करते हुए आप कुछ नया सीख सकते हो, टीम वर्क हमेशा संसाधन निर्माण की ओर जाता है क्योंकि लोग आगामी चुनौतियों को बेहतर तरीके से संभालना सीखते हैं. इकाई के रूप में काम करते हुए आपको सीखने और बढ़ने के अवसर मिलेंगे.

प्रतिभा खेल जीतती है, लेकिन टीम वर्क और इंटेलिजेंस चैंपियनशिप जीतती है - माइकल जॉर्डन

टीम वर्क टीम के प्रत्येक सदस्य द्वारा टीम के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किया गया सामूहिक प्रयास है. व्यक्तिगत रूप से, हम सभी के पास कुछ कौशल है और हम किसी एक क्षेत्र में अच्छे हैं. यदि हम सब एक साथ आएं और अपना कौशल और विशेषज्ञता का सही दिशा में उपयोग करें तो यह सर्वोत्तम परिणाम देगा. साथ ही, यह प्रत्येक सदस्य को एक-दूसरे से कुछ नया सीखने का अवसर भी देता है.

श्री जय शंकर प्रसाद
क्षेत्रीय प्रमुख
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

माँ का आंचल

आज न जाने क्यूँ रोने का मन किया
माँ के आंचल में सर छुपा के सोने का मन किया
दुनिया की इस भाग-दौड़ में खो चुके थे रिश्ते सब,
आज फिर उन्हीं रिश्ते को एक सिरे से जोड़ने का मन किया,
किसी दिन किसी भीड़ में देखी थी किसी की आंखे
आज फिर उन्हीं आंखों में खोने का मन किया,
रोज सपनों में बातें करता था मैं,
आज ना जाने क्यों खुद से एक सच बोलने का मन किया,
दिल तोडता हूँ सबका अपनी बातों से मैं
आज ना जाने क्यों एक टूटा हुआ दिल जोड़ने का मन किया,
आज न जाने क्यूं रोने का मन किया,
माँ के आंचल में सर छुपा के सोने का मन किया.

अर्पण बाजपेयी
वरिष्ठ प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

हीरा मुख से कब कहे, लाख टका मेरा बोल.

टीमवर्क

टीमवर्क वह ईंधन है जो आम लोगों को असामान्य लक्ष्यों को प्राप्त करने की अनुमति देता है.

टीमवर्क एक बेहद ही महत्वपूर्ण शब्द है जो दूसरों के साथ समन्वय करने के बारे में काफी कुछ बताता है. जहां एक समूह के लोग एक समान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं उसे ही हम टीम वर्क कहते हैं. टीम वर्क एक तरह से किसी गोल को पाने का सबसे कामगार तरीका है.

एक साथ आना एक शुरुआत है, साथ रहना एक प्रगति है और एक साथ काम करना एक सफलता है - हेनरी फोर्ड.

'प्रतिभा खेल जीतती है, लेकिन टीम वर्क और इंटेलिजेंस चैंपियनशिप जीतती है' - माइकल जॉर्डन

एक अच्छे प्रोजेक्ट या किसी विशेष काम को पूरा करने के लिए अलग-अलग तरह की योग्यता वाले लोगों की आवश्यकता होती है. लेकिन जो मुख्य बात है वो है टीम वर्क; अगर आपके पास एक अच्छी टीम है तो आप अपनी किसी भी योजना को सफलतापूर्वक निर्वाहित कर सकते हैं. हम एक स्कूल के प्रोजेक्ट का उदाहरण ले सकते हैं; मान लीजिये आपको कोई एक नमूना सिर्फ दो दिनों में तैयार करना है. ये तो तय है कि इसके लिए कुछ तैयारी तो करनी ही पड़ेगी और जब ये सब कुछ आप अकेले ही करेंगे तो इस बात की काफी संभावना है कि आप कुछ न कुछ भूल जरुर जायेंगे और जब आप यही काम एक समूह में करते हैं तो इसे आप लोगों में बाँट सकते हैं. इस तरह से हर कोई अपने-अपने हिस्से का काम करेगा और वे इसे एक सही तरह से बिना कुछ भूले पूरा कर लेंगे. यह आपको बेहतर परिणाम देने में भी मदद करेगा इसलिए, मैं ये कह सकता हूँ कि टीम वर्क आपकी कार्यक्षमता को बढ़ाता है.

हम सभी की अलग-अलग रणनीतियाँ होती हैं लेकिन एक टीम कुछ सिद्धांतों के साथ एक ही रणनीति पर काम करती है और वे इस प्रकार से हैं :

कार्य का विश्लेषण करना : सबसे पहली बात यह है कि, एक टीम को कार्य का विश्लेषण करना चाहिए और रुचि के अनुसार काम सौंपना चाहिए. ये हमें यह जानने में मदद करता है कि कितना समय लग सकता है और वे कितनी आसानी से काम को कर सकते हैं.

प्रेरणा : यह हमेशा संभव नहीं है कि हम हर बार सफल ही होंगे इसलिए दुखी और निराश महसूस करने की बजाय यह टीम के मुखिया का कर्तव्य है कि वो हमेशा टीम के सदस्यों को प्रेरित करे. जब हम प्रेरित होते हैं, तो यह हमारे मस्तिष्क को सकारात्मक संकेत देता है जो हमारी उत्पादकता और रचनात्मकता को सीधे प्रभावित करता है. इसलिए, प्रेरणा सफलता की एक महत्वपूर्ण कुंजी है.

संघर्ष को कम करना : एक टीम को विपरीत विचारों और संघर्षों से भरा हुआ नहीं होना चाहिए, इससे टीम कभी काम नहीं कर पाएगी. इसलिए, यहाँ पर एक टीम लीडर होना चाहिए और टीम के सभी सदस्यों को उसका सख्ती से पालन करना चाहिए. टीम के सदस्यों के बीच किसी भी तरह के संघर्ष से बचने के लिए समझदारी भरा निर्णय लेना एक टीम लीडर का कर्तव्य है.

स्वतंत्रता : यद्यपि आप एक टीम में काम कर रहे हैं, मगर टीम का हर एक सदस्य सोचने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए और उसका अपना खुद का विचार होना चाहिए ताकि वह अपने प्रदर्शन को और भी तराश सके. यह उनमें से सर्वश्रेष्ठ को सामने लाएगा और निश्चित रूप से आपके काम को सभ्य और सर्वश्रेष्ठ भी बनाएगा.

यहाँ पर कुछ नियम हैं जिनका एक टीम में मौजूद सभी को पालन करना चाहिए, वे इस प्रकार हैं;

अनुशासन का पालन करना चाहिए : किसी कार्य के लिए हमेशा एक समय सीमा होती है और जब आप किसी टीम में होते हैं तो आपको समय का ध्यान रखना चाहिए और उसी के अनुसार अपने कार्य को पूरा करना चाहिए. समय के अलावा, यहाँ पर कुछ अन्य अनुशासनात्मक कार्य भी हैं, जिनका पालन किया जाना चाहिए. हमें अपनी टीम के मुखिया और अन्य अनुभवी कार्यकर्ताओं का सम्मान करना चाहिए क्योंकि अनुभव ज्ञान से ज्यादा बोलता है. संभव है आपके पास बहुत सारा ज्ञान हो सकता है लेकिन व्यावहारिक ज्ञान एक ऐसी चीज है जो आपको विफलता से बचा सकती है.

टीम के सदस्यों के बीच अच्छा संचार कौशल : मान लीजिए कि एक टीम में पांच सदस्य हैं और वे सभी अपने नेता या वरिष्ठ का अनुसरण करते हैं, लेकिन यहाँ पर आपके विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की स्वतंत्रता भी होनी चाहिए, एक टीम का मतलब केवल आदेशों का पालन करना नहीं होता है, बल्कि उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भी स्वतंत्र होना

चाहिए. इससे एक अच्छी टीम बनती है और सभी सदस्यों को लगता है कि वे वाकई में टीम के लिए महत्वपूर्ण हैं और इसकी वजह से वे अच्छा प्रदर्शन भी करते हैं.

अपने लक्ष्य के बारे में स्पष्ट रहें : यह टीम के मुखिया की जिम्मेदारी है कि वो यह सुनिश्चित करे कि सभी सदस्यों को पहले यह पता होना चाहिए कि परियोजना क्या है. उन्हें वास्तव में करना क्या है? और वे इसमें क्या नया जोड़ सकते हैं? ये सभी चीजें दूसरों को सही दिशा में सोचने में मदद करेंगी, अन्यथा, जब एक टीम स्पष्ट नहीं होती है तो वह अपने कार्यों को पूरा करने के लिए नए विचारों और तरीकों को इजाद नहीं कर सकती है.

अपने अहंकार को किनारे रखें : जब आप किसी टीम में काम कर रहे होते हैं तो आपको हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपका अहंकार दूसरों के साथ ना टकराए क्योंकि सभी में कुछ न कुछ अहंकार होता है लेकिन जब वे किसी टीम में साथ काम कर रहे होते हैं तो इसे अलग रखते हैं. यह एक टीम के बुनियादी नियमों में से एक है. अन्यथा, एक टीम लाभदायक विचार उत्पन्न नहीं कर सकती है.

रूचि और योग्यता के अनुसार काम सौंपा जाना चाहिए : हम सभी की क्षमता अलग होती है और बेहतर परिणाम के लिए लोगों को उनकी रूचि के अनुसार काम दिया जाना चाहिए. हमें सीखते रहना चाहिए लेकिन जब समय सीमा होती है, तो हमें अच्छे परिणाम के लिए स्मार्ट तरीके से काम करना चाहिए.

टीम वर्क के फायदे

सीखने को बढ़ावा देता है

एक टीम में काम करते हुए, आप विभिन्न प्रकार के कौशल और प्रतिभा वाले लोगों का सामना कर सकते हैं. अवसर को सर्वश्रेष्ठ बनाते हुए, आप एक साथ काम करते हुए कुछ नया सीख सकते हैं. टीमवर्क हमेशा संसाधन निर्माण की ओर ले जाता है क्योंकि लोग आगामी चुनौतियों को बेहतर तरीके से संभालना सीखते हैं इसलिए, एक इकाई के रूप में काम करते हुए, आप सीखने और आगे बढ़ने के कई अवसरों में आएंगे.

टीमवर्क बूस्ट कॉन्फिडेंस

जब आप ऐसे लोगों के समूह के साथ काम कर रहे होते हैं, जो आपकी ताकत के आधार के रूप में खड़े होते हैं और आपका समर्थन करते हैं, तो आपकी टीम जल्द ही आपका परिवार बन जाएगी. टीम वर्क का एक सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे कर्मचारियों में आत्मविश्वास पैदा होता है. जैसा कि वर्षों से देखा जा रहा है, खुशहाल वातावरण में काम करने से काम बोझ जैसा नहीं लगता है. कर्मचारी खुशी-खुशी कार्यालय में आएंगे जो अंततः उनके प्रदर्शन को बढ़ाएगा.

आप टीम वर्क के साथ स्पीड अप करें

यह स्पष्ट है कि सामूहिक प्रयासों की तुलना में एक अकेला व्यक्ति धीमी गति से कार्य करेगा. टीम के सदस्यों के बीच कार्यों को वितरित करना और कर्मचारियों के प्रभावी प्रदर्शन से टीम वर्क का सही अर्थ प्रतिबिंबित होगा. इसलिए, एक टीम में कुशलतापूर्वक काम करना जहां जिम्मेदारियों को समान रूप से साझा किया जाता है, निश्चित रूप से संगठन के उत्पादन को बढ़ाने के साथ-साथ आपको अपने लक्ष्यों को समय पर प्राप्त करने में मदद करेगा.

टीम वर्क साउंड वर्क रिलेशनशिप को पूरा करता है

मजबूत काम के रिश्ते बिना किसी इफ्स और बट के सिर्फ समझौते से बहुत अधिक हैं. इसके बजाय, यह सभी काम होने और एक-दूसरे के दृष्टिकोण को सम्मान पूर्वक समझने का अभ्यास है. एक टीम में काम करते समय ऐसी विचारधाराओं को अपनाने से बेहतर सहयोग और परिणाम दिखाई देते हैं. टीमवर्क के परिणामस्वरूप आपसी समझ और विश्वास विकसित होगा जो अंततः कंपनी के लिए फायदेमंद होगा. सार्थक रिश्तों को बढ़ावा देने के लिए, आप अपने कार्यस्थल पर मज़ेदार समय की गतिविधियों की कोशिश कर सकते हैं.

टीमवर्क राजस्व उत्पन्न करता है

एक कुशल और प्रभावी कर्मचारी वह है जो हर संगठन के लिए तरसता है. जैसा कि हम सभी जानते हैं कि लाभप्रदता व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य है, इसके लिए योगदान देना और दूसरों को भी करना महत्वपूर्ण हो जाता है. टीमवर्क हर किसी को अपना योगदान देने की अनुमति देता है और इसलिए, कोई भी कार्यभार से अधिक नहीं है. सभी को समान प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करके, निश्चित रूप से एक संगठन को प्राप्त करने में सक्षम करेगा जो वे लक्ष्य निर्धारित करते हैं.

टीमवर्क की शक्ति:

- टीमवर्क से काम जल्दी हो जाता है.
- टीमवर्क से काम आसान हो जाता है.
- खुद से जो काम आप साधारण तरीके से कर सकते थे टीमवर्क से वही काम कहीं बेहतरीन ढंग से हो जाता है.
- मेक माय ट्रीप (Make My Trip) के चेयरमेन और ग्रुप

सीईओ दीप कालरा का कहना है कि लीडरशिप की क्वालिटी अभ्यास से ही मजबूत हो जाती है. जब आप किसी टीम के साथ मिलकर काम करना शुरू करते हैं तो स्किल्स को सुधारना बहुत जरूरी हो जाता है. आपको लोगों को अपने विजन को समझाना पड़ता है. हाई प्रेशर होने पर भी खुद को कूल (Cool) रखना पड़ता है. यदि आप एक लीडर हैं तो बुरी से बुरी परिस्थिति में भी आपको आत्मविश्वास से काम लेना होता है तभी आप सफल हो सकते हैं.

- एक टीम लीडर, अपनी टीम के हर सदस्य की फीलिंग्स को समझने का प्रयास करता है और वह एक ऐसी टीम का निर्माण करता है जो बेहतर प्रदर्शन के साथ-साथ लक्ष्य को सहज ही हासिल कर सके.
- लीडर की सबसे बड़ी क्वालिटी यही होती है कि वह खुद भी नई चीजें सीखता है और दूसरे व्यक्तियों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करता है.

टीम को अपनी फैमिली की तरह ही समझें और साथ रहने, खाने-पीने मौज-मस्ती के अलावा उनके हर अचीवमेंट पर जश्न भी मनाएं. टीम मेम्बर्स को उनके हर सुख-दु:ख में शामिल होना चाहिए. इससे औपचारिकताएं खत्म हो जाएंगी. टीम का हर सदस्य एक-दूसरे के साथ काम करने में सहज महसूस करने लगेगा. अगर वर्कप्लेस पर अच्छा माहौल रहेगा तो, सब मिलजुलकर काम करेंगे तो काम का आउटपुट भी अच्छा ही मिलेगा.

श्री शौकत अली
प्रबंधक
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

मोटा अनाज, सेहत का राज़

मोटा अनाज, सेहत का राज़,
सदियों की परंपरा, मांगे नया आगाज़.
पोषण से भरपूर, मोटापा करें दूर, बाजरा लाए त्वचा पर नूर.
संतुलित करे खून में शर्करा का स्तर,
बाल नाखून व त्वचा बने बेहतर.
प्रोटीन और फाइबर से भरपूर,
हड्डियां और पाचन होगा मज़बूत, ज्वार खाइए जरूर.
पीले रंग की हल्की मीठी-कड़वी, विटामिन कैल्शियम और
आयरन की जैसे गोली.
पोषण से भरपूर है कंगनी,
कैंसर, ह्रदय रोग, मधुमेह रखती दूर है कंगनी.
अमीनो अम्ल और फाइबर का खजाना,
खून की कमी को दूर भगाना,
रोग प्रतिरोधक तंत्र मजबूत बनाना,
यह सब चाहो तो रागी खाना.

पाचन बढ़े और कब्ज भगाए,
सर्दी खांसी में आराम पहुंचाए,
गर्मी और वजन घटाकर देता लाभ सौ,
दिल बनेगा स्वस्थ रोज खाएं जौं.
मोटा अनाज सेहत का राज़, जरूर अपनाएं,
होगा फैसले पर नाज़.
आओ मोटा अनाज अपनाएं, भोजन में विविधता लाएं,
अच्छी सेहत पाएं, किसानों को लाभ पहुंचाएं.
बीमारियों से बचें, पोषक श्री अन्न खाएं,
मोटा अनाज, सेहत का राज़,
इसे जन-जन तक पहुंचाएं.

रंजिता कुमारी
शाखा प्रबंधक सेक्टर 25 पंचकुला, हरियाणा

यत्र प्रतिभा अवसर प्राप्रोति:

जैसा कि विदित है खेल दैनिक दिनचर्या का अभिन्न अंग है और खेल तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों का उपयोग सकारात्मक ऊर्जा, टीम निर्माण और जहां हम काम करते हैं वहां व्यक्ति और संगठन के समग्र विकास के लिए बेहतर काम करने की प्रेरणा प्रदान करने के लिए किया जाता है. आजकल कई संगठन अपने विकास के लिए अपने कर्मचारियों पर ध्यान केंद्रित करने लगे हैं. योग के माध्यम से कार्य जीवन संतुलन को लागू करने के लिए हमारे केंद्रीय कार्यालय ने हैबिल्ड योग ऑनलाइन कक्षाओं के साथ समझौता किया है ताकि सभी कर्मचारी सदस्य दैनिक आधार पर भाग ले सकें.

इसके अलावा सभी स्टाफ़ सदस्यों को प्रेरित करने के लिए केंद्रीय कार्यालय ने अपने एक परिपत्र के माध्यम से हर साल दिसंबर के महीने में खेल दिवस आयोजित करने की घोषणा की है, लेकिन इस साल ये नवंबर के महीने में शुरू की गई है. तो उसके अनुरूप हमारे क्षेत्रीय कार्यालय हुबली ने घोषणा की, कि खेल दिवस 25 और 26 नवंबर 2023 को हुबली में आयोजित किया जाएगा, जहां सभी स्टाफ सदस्यों को उनके परिवार के सदस्यों के साथ विभिन्न आउटडोर, इनडोर गेम्स में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था. इनडोर गेम में कैरम, शतरंज, बैडमिंटन, टेबल टेनिस और डार्ट गेम शामिल थे.

जब मुझे सर्कुलर मिला तो मुझे अपने कॉलेज के दिनों की याद आ गई जब हम खाली समय में अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट और टेबल टेनिस खेला करते थे. चाहे इनडोर हो या आउटडोर खेल गतिविधियाँ सभी प्रतिभागियों को शारीरिक और मानसिक शक्ति प्रदान करती हैं, चाहे आप जीतें या हार जाएं खेल में हिस्सा लेने मात्र से संतुष्टि होती है. इसलिए मैंने स्वयं अपने स्टाफ सदस्य के साथ 25 और 26 नवंबर को हुबली में होने वाली खेल गतिविधि के लिए अपना नाम नामांकित किया.

24 तारीख को मैंगलोर बस स्टैंड से स्लीपर बस में हम हुबली के लिए रवाना हो गए. आमतौर पर बस को हुबली पहुंचने में लगभग 8 घंटे लगते हैं. रात को करीब 11:30 बजे बस एक स्टॉप पर रूकी जहाँ हमने चाय और कुछ हल्का नाश्ता किया. वहाँ से लगभग 4 घंटे के बाद सुबह 4:30 बजे हम हुबली बस स्टैंड पहुँचे, इसलिए उत्साह के साथ हमने नए बस स्टैंड से होटल हरि प्रसाद तक पैदल अपनी यात्रा शुरू की, जहाँ हम सुबह लगभग 5 बजे पहुँचे जहाँ क्षेत्रीय कार्यालय ने पहले से ही हमारे लिए कमरे बुक कर दिए थे. हमने अपने कमरे में कुछ देर आराम किया और फिर तैयार होकर निकल गए हम जिमखाना क्लब हुबली में नाश्ते के लिए. इस उद्देश्य के लिए हमारे हुबली आरओ ने गोकुल रोड स्थित होटल हरिप्रसाद से जिमखाना क्लब तक कर्मचारियों और उनके परिवारों के लिए एक टैक्सी की भी व्यवस्था की है.

जिमखाना क्लब में क्षेत्रीय कार्यालय, हुबली की ओर से श्री राजेश व्ही - मुख्य प्रबंधक, श्री मुदित माँगलिक - मुख्य प्रबंधक, श्री विरल कुमार - वरिष्ठ प्रबंधक एवं आरओ के अन्य स्टाफ़ विभिन्न शाखाओं से आने वाले स्टाफ एवं उनके परिजनों के स्वागत के लिए उपस्थित थे. सुबह 9 बजे नाश्ते की व्यवस्था जिमखाना क्लब के हाल में की गयी थी. उसके बाद वहाँ उपस्थित सभी स्टाफ एवं उनके परिजन क्रिकेट मैच के लिए नेहरू स्टेडियम पहुंच गए. साथ ही बच्चों के लिए स्टेडियम में 50 एवं 100 मीटर रेस भी आयोजित की गयी थी. दोपहर में क्रिकेट मैच की समाप्ति पर वापस सभी लोग जिमखाना क्लब आ गए जहाँ दोपहर के खाने के बाद बैडमिन्टन, टेबल टेनिस, कैरम बोर्ड तथा चैस खेली गई.

'खेल खेलने से हम अपने शरीर, मन, और आत्मा का संतुलन बनाए रख सकते हैं.' - स्वामी विवेकानंद

सांय 07:00 बजे जिमखाना क्लब के प्रथम तल पर संगीत एवं अन्य कार्यक्रम के लिए श्रीमती कविता कोठारी एवं उनकी टीम ने विभिन्न खेलों के द्वारा बच्चों एवं सभी स्टाफ़ का मनोरंजन किया. इसके अंतर्गत स्टाफ़ परिजनों के लिए गेम्स एवं अन्य गतिविधियां जैसे म्यूजिकल चेयर, हॉउसी, कपल गेम आयोजित की गई. अंत

जीवन अनंत है ओर मनुष्य का सामर्थ्य भी अनंत है - यशपाल

में सभी खेलों के विजेता एवं उपविजेता को क्षेत्रीय प्रमुख श्री रमेश एस. सर के द्वारा मैडल देकर सम्मानित किया गया.

इस समारोह के सफल संचालन एवम श्रेष्ठ प्रबंधन के लिए श्री मुदित माँगलिक, मुख्य प्रबंधक एवं श्री अमितेश कुमार सिंह, राजभाषा अधिकारी को क्षेत्रीय प्रबंधक श्री रमेश एस. द्वारा ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया. चूंकि हमारी क्रिकेट टीम ने मैच जीता था इसलिए टीम का हिस्सा होने के नाते मुझे भी हमारे योग्य क्षेत्रीय प्रमुख श्री रमेश एस. सर द्वारा स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया. हमारे क्षेत्रीय प्रमुख से स्वर्ण पदक प्राप्त करना एक सुखद और यादगार अनुभव था.

खेल जीवन का महत्वपूर्ण अभिन्न अंग है. खेल हमें संयमित, संगठित और नियमित बनाता है और हमारी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देता है. खेल हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति को सुधारने का अद्वितीय माध्यम है. खेल का महत्व सिर्फ शारीरिक स्वास्थ्य की ही सीमा नहीं होता है, बल्कि यह हमारे मनोवैज्ञानिक विकास के लिए भी आवश्यक है. इससे हमारे सामाजिक और संघठनात्मक कौशल विकसित होते हैं और हम अन्य लोगों के साथ सहयोग करने का कौशल बनाते हैं. खेल हमारे अन्दर नेतृत्व के गुण विकसित करता है, हमारी सामरिक बुद्धि को मजबूत बनाता है और हमें संघर्ष के साथ सामर्थ्यपूर्ण व्यवहार करने का मौका देता है. खेल हमें नैतिकता और संयम की महत्वपूर्ण शिक्षा भी प्रदान करता है और हमारे अनुशासन, संयम और नैतिक मूल्य विकसित होते हैं. खेल का सामाजिक महत्व भी अद्वितीय है. खेल के दौरान हम दूसरों को समझते हैं, टीमवर्क करते हैं और नेतृत्व के कौशल का अभ्यास करते हैं. यह हमें संगठनात्मक कौशल और समानता की सीख सिखाता है. खेल सामाजिक संपर्क, सद्भावना और समरसता को बढ़ाता है. इस खेल दिवस ने मुझे अपनी कमजोरी और ताकत दोनों को समझने में मदद की. अब मैं अपनी कमजोरी पर काम कर सकता हूं और व्यक्तिगत तथा अपने संस्थान के विकास के लिए लगातार खुद को बेहतर बना सकता हूं.

श्री अमनदीप
वरिष्ठ प्रबंधक
मैंगलोर शाखा

सबसे अच्छा या सबसे बुरा दोस्त?

जब भी दोस्तों की बात आती है, तो हमारे मन में अच्छे साथी के रूप में गुजारे लम्हें जेहन में आ जाते हैं. दोस्त होते भी ऐसे ही हैं, जो आपको हर अच्छे बुरे वक्त में सहारा और मार्गदर्शन देते हैं. आज हम एक ऐसे दोस्त की बात करेंगे जो एक चमत्कार से कम नहीं है. जब यह हमारे जीवन में आया था तो हमारी प्रसन्नता और कोतूहल का कोई ठिकाना नहीं था. यह सब होना भी चाहिए था क्योंकि इसने न केवल बिना तार के बातचीत को संभव बनाया बल्कि अलार्म, रेडियो, कैलकुलेटर और कुछ सीमित खेल के अवसर भी हमें उपलब्ध करवाए. धीरे-धीरे हमारा यह दोस्त तरक्की करता गया और अपने नए-नए फीचर्स के साथ हमारे जीवन में उपयोगी और आवश्यक बनता गया. एक दोस्त जो हमारे जीवन को सरल, सुखद और मनोरंजक बनाने आया था, धीरे-धीरे हमारा सब कुछ बन के बैठ गया. आज पति-पत्नी, मां-बाप, बच्चों और पड़ोसी के बीच ये एक अदृश्य दीवार बन के बैठ गया है. इसके बिना हमारा दिन शुरू नहीं होता और दिन के खत्म होने का तो सवाल ही नहीं. ये हमारे नाश्ते की टेबल, स्टडी टेबल, और बेडरूम तक आसानी से घुसपैठ कर चुका है. युवा वर्ग तो बुरी तरह से इसकी चपेट में आ चुका है. इससे कई तरह की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ संबंधी समस्याएं भी सामने आ रही हैं. इस प्रकार ये दोस्त हमें सुख, और चैन देने के लिए आया था, पर आज इसके असंयमित इस्तेमाल ने हमारा सुख और चैन दोनों छीन लिए हैं. कुछ समय तक इससे दूर होने पर लोगों को नोमोफ़ोबिया की समस्या होने लगी है.

अब आप ही सोचिए आपका मोबाइल फ़ोन आपका सब से अच्छा दोस्त है या सबसे बुरा दोस्त??

मनोज कुमार अनेजा
सहायक प्रबंधक, शाखा- सेक्टर 25
पंचकुला,हरियाणा

टीम भावना

भारतीय संस्कृति में मैं और हम दो ऐसे शब्द है जो किसी भी संस्था, व्यापार या व्यवसाय की प्रगति एवं विकास की नींव हैं. किसी भी संस्था, व्यापार या व्यवसाय में यदि 'हम' मानसिकता हो तो उसकी प्रगति निश्चित है. इस वाक्य की पुष्टि हेनरी फोर्ड की एक वाक्यांश से की जा सकती है 'एक-साथ आना एक शुरुआत है. साथ रखना प्रगति है. साथ काम करना सफलता है.' टीम भावना एक समान लक्ष्य की दिशा में काम करने के लिए टीम में व्यक्तियों के बीच प्रेरणा और सहयोगात्मक व्यवहार पैदा करती है. यह प्रत्येक व्यक्ति को पूरे उत्साह के साथ काम करने और सहयोग के कौशल का प्रदर्शन करने में सक्षम बनाता है.

प्रसिद्ध वाक्य 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' हम सब ने सुना है. इसके अर्थ भी बचपन में ज़रूर सुने होंगें. जब इस वाक्य के व्यापक मायने की ओर मुड़कर देखते हैं तो कई सारे निहितार्थ समझ में आते हैं. अकेला चना यानी वह व्यक्ति जो समर्थवान तो है लेकिन अपनी ताकत और क्षमता का सही तरीके से इस्तमाल नहीं कर पा रहा है. हालांकि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अकेले बहुत सही प्रदर्शन करते हैं, लेकिन उन्हें टीम में डाल दिया जाए और टीम में काम दिया जाए तो वे टीम-भावना से और टीम में सबके साथ बेहतर समन्वय से प्रदर्शन नहीं कर पाते. शायद अकेले अच्छा करते हैं क्योंकि उसमें किसी और से समायोजन बैठने, संपर्क के दरकार नहीं होते. जितना कि टीम में समन्वय, संपर्क की आवश्यकता पड़ती है. वे अकेला काम करने में विश्वास करते हैं. इस तरह एकल निर्वाहक तो होते हैं, लेकिन उनमें टीम में काम करने की दक्षता और रूझान की कमी नज़र आती है. ऐसे में टीम लीडर की जिम्मेदारी होती है कि ऐसे निर्वाहक को उसके प्रकृति और कौशल के अनुरूप काम सौंपे. धीरे-धीरे उस व्यक्ति को टीम भावना और टीम वर्क की ओर अग्रसर किया जा सकता है.

वहीं दूसरी ओर, कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो अकेले में काम करने की बजाय समूह जिसे टीम वर्क कहा जाता है, उसमें विश्वास करते हैं. उनमें टीम के अन्य सदस्यों के साथ कैसे भावनात्मक और पेशेवर व्यवहार करना है, इसकी समझ होती है और उसी के अनुरूप व्यवहार भी करते हैं. समूह में काम करने वालों में समायोजन, संचार, संप्रेषण और रणनीति बनाने की क्षमता कुछ ज्यादा विकसित होती है. इन्हीं बुनियादी कौशल के आधार पर ऐसे निर्वाहक बेहतर प्रदर्शन करते हैं. इसमें टीम लीडर की सूझ-बूझ की पहचान भी हो जाती है कि क्या उसकी नज़र में सभी सदस्यों की क्षमता और दक्षता की पहचान है या नहीं. क्या लीडर की नज़र में सिर्फ बेहतर प्रदर्शन करने वाले सदस्य ही हैं या वे टीम मेंबर भी हैं जो थोड़े कमतर प्रदर्शन कर पा रहे हैं? जो थोड़े कम प्रदर्शन कर पा रहे हैं क्या उनके लिए लीडर के पास कोई विशेष कार्य नीति, रणनीति है या उन्हें वह नज़रअंदाज़ तो नहीं कर रहा है? ये ऐसे टीम लीडर की विशेषताएं होती हैं, जो टीम में काम करने की भावना को हमेशा हवा दिया करता है. टीम में कैसे संप्रेषण करना है, कैसे समन्वय करना है और ज़रूरत के अनुसार सूचना कब और कैसे देनी है आदि की समझ टीम लीडर की विशेषता होती है. एक बेहतर टीम लीडर कमतर निर्वाहक से भी अच्छा काम ले सकता है. उसके पास हर किस्म के और हर स्तर के मानव संसाधन से काम लेने और व्यक्ति को प्रेरित करने की दक्षता होती है. एक बेहतर टीम लीडर किसी भी सदस्य को पीछे नहीं छोड़ सकता. वह हर व्यक्ति की वैयक्तिक ख़ासियत को ध्यान में रखता है और समय और स्थान के अनुसार उसे समुचित इस्तमाल करता है. यदि टीम लीडर में इस प्रकार की विशेषता नहीं है तो कई बार वह व्यक्ति की वैयक्तिक ख़ामियों को बयां कर देता है. इसका परिणाम यह होता है कि उसका एक सदस्य, जो अच्छा परफ़ॉर्मर था, वह धीरे-धीरे डाउन होने लगता है. इससे न केवल टीम के प्रदर्शन पर असर पड़ता है बल्कि कंपनी और टीम के अन्य सदस्यों पर भी विपरीत प्रभाव छोड़ता है. यदि टीम के प्रेरक स्तर को बरकरार रखने के लिए समय समय पर टीम रचना के लिए कुछ अभ्यास करानी चाहिए. कुछ कंपनियों के टीम लीडर और प्रबंधक अपनी टीम को दफ्तर के बाहर या भीतर ही कुछ कार्यशाला या समूह यात्रा की योजना बनाते हैं ताकि कार्यालय कामकाज के तनाव से बाहर निकल कर टीम आपस में संवाद कर सकें. इस गतिविधि का परिणाम यह होता है कि कार्यालय के वर्क कल्चर

के बाहर निकल कर हर सदस्य एक दूसरे की वैयक्तिक ख़ासियतों से वाकिफ हो पाता है. एक दूसरे को बेहतर तरीके से जान पाता है साथ ही टीम भावना विकसित हो पाती है.

एक अच्छी टीम भावना के तीन मुख्य कारक

1. एक सामूहिक मिशन

एक टीम एक समान लक्ष्य को पूरा करने के लिए मिलकर काम करती है, यही इसके होने का कारण हैं. आम तौर पर, टीम संपूर्ण का हिस्सा होती है और अपने दृष्टिकोण और मूल्यों को एक समान दिशा की ओर ले जाती है. कठिनाई के समय में, यह मजबूत, साझा सामूहिक भावना ही है जो चुनौतियों और बाधाओं को दूर करने में मदद करेगी.

2. प्रतिक्रिया

टीम भावना स्पष्ट और निर्बाध संचार के साथ-साथ चलती है. चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, सामूहिक बुद्धिमत्ता और समूह कार्य को बढ़ावा देने का एक तरीका है. इसका उद्देश्य कठिनाई के क्षेत्रों पर ध्यान आकर्षित करना है, इससे पहले कि वे समस्याग्रस्त हो जाएं, बल्कि छोटी और बड़ी सफलताओं का जश्न भी मनाना है. जब सही ढंग से कार्यान्वित किया जाता है, तो फीडबैक देने से कर्मचारियों का अपने साथियों और उनके प्रबंधक पर विश्वास बढ़ता है.

3. निहितार्थ और सशक्तिकरण

सामान्य महत्वाकांक्षाओं के इर्द-गिर्द एक टीम को एक साथ लाने के लिए, प्रबंधक के लिए खुद को एक नेता के रूप में स्थापित करना पर्याप्त नहीं है. उसे मार्गदर्शक की भूमिका निभाने और समूह तालमेल बनाने के लिए सहभागी प्रबंधन और सह-निर्माण का उपयोग करने की भी आवश्यकता है. यह कर्मचारी सहभागिता को प्रोत्साहित करता है. टीमों को सशक्त बनाना और सभी की राय और योगदान को ध्यान में रखना टीम भावना (भले ही दूरस्थ रूप से) में सुधार के लिए निर्विवाद कारक हैं.

टीम भावना युवाओं में खेल से विकसित होता है. जिस प्रकार से खिलाड़ी टीम लीडर के साथ एकजुट हो अपने सभी मतभेदों को भूलकर अपनी टीम को विजयी बनाने के लिए प्रयास करते रहते हैं. उसी प्रकार से हम सभी भी अपने जीवन में सामाजिक, आर्थिक एवं राष्ट्रीय विकास के लिए कुशल नेतृत्व में सामूहिक रूप से कार्य करना चाहिए.

बालकृष्ण स्वाईं
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय भुबनेश्वर

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री राजेश वर्मा
महाप्रबंधक

श्री सतीश अग्रवाल
महाप्रबंधक

श्री मनोज कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री मोहन बाबू सुरे
उप महाप्रबंधक

श्री उल्हास शिवदेव
उप महाप्रबंधक

श्री मो. साजिद अख्तर
उप महाप्रबंधक

श्री शरद अग्रवाल
उप महाप्रबंधक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के
31 मार्च 2024 को समाप्त वर्ष के वित्तीय परिणाम

- ❖ बैंक ने सभी व्यावसायिक मानदंडों पर सतत रूप से बेहतर प्रदर्शन प्रदर्शित किया है।
- ❖ 31 मार्च 2024 को समाप्त 12 महीने की अवधि के लिए शुद्ध लाभ 61.13% बढ़कर ₹2549 करोड़ हो गया है, यह पिछले वर्ष की इसी अवधि में ₹ 1582 करोड़ था.
- ❖ मार्च, 2024 को बैंक का कुल व्यवसाय ₹636756 करोड़ हो गया है, इसमें विगत वर्ष के ₹ 577075 करोड़ की तुलना में ₹ 59681 करोड़ (वार्षिक आधार पर 10.34%) की वृद्धि दर्ज की गई है.
- ❖ वार्षिक आधार पर सकल अग्रिम 15.60% बढ़कर ₹251745 करोड़ हो गया, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह ₹217779 करोड़ था.
- ❖ वार्षिक आधार पर 394 बीपीएस के सुधार सहित सकल एनपीए 4.50% हो गया है.
- ❖ शुद्ध एनपीए वार्षिक आधार पर 54 बीपीएस के सुधार सहित 1.23% हो गया है.
- ❖ प्रावधान कवरेज अनुपात वार्षिक आधार पर 110 आधार अंकों के सुधार सहित 93.58% रहा.
- ❖ 2024 तक बैंक के अखिल भारतीय नेटवर्क में ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में 2938 शाखाओं (65.29%) सहित कुल 4500 शाखाएं, 4084 एटीएम और 11682 बीसी प्वाइंट्स 20266 टच प्वाइंट्स शामिल हैं.

www.centralbankofindia.co.in

सेन्ट्रलाइट पढ़िए और आकर्षक इनाम जीतिए

प्रश्नमंच क्र - 1

कृपया QR कोड स्कॅन करें

दिनांक 30.05.2024 तक प्राप्त सर्वश्रेष्ठ 20 विजेताओं को राशि रु. 500 /- प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा!

जीवन की धारा

फुरसत में जब खुद पर गौर करता हूं,
झांक कर अपने मन के चारो ओर देखता हूं,
एक तरफ अधूरी ख्वाहिशें - एक तरफ पूरी हुई फरमाइशें दिखती हैं,
जो बची हुई दो दिशाएं हैं वही ज़िन्दगी को सताएं हैं,
एक बुलाती है पीछे और कहती है कि पुराने दिए में नई रोशनी जलाएंगे
दूसरी कहती है चल आगे मेरे साथ, बिना दिया जलाये ही अंधेरे दूर हो जाएंगे
इस दोराहे पे खड़ा देख मुझे, हंसता है बस्ता मेरा,
चिढाती है वो आवारगी पुरानी
आवारगी :जो ले जाती थी कभी भी कहीं भी,
बस्ता : जो लटक कर चल देता था कभी भी कहीं भी,
आज ये दोनों ही सोये हुए हैं,
क्योंकि ज़िन्दगी में सुकून और बेफिक्री के पल खोये हुए हैं.

ज़िन्दगी इतनी तेज चली है जैसे इसके पास समय की भारी कमी है,
भविष्य का अनुमान तो भगवान श्रीकृष्ण को भी था,
फिर भी महाभारत के युद्ध को रोकना नियति के विरुद्ध था.
इंसान भी अंदर ही अंदर एक युद्ध लड़ता है,
महाभारत की तरह इस युद्ध के मैदान में भी दोनों तरफ अपने ही हैं,
एक तरफ अपना दिल है तो एक तरफ दिमाग.
दिल चाहता है कि दिमाग हार जाए दिमाग कहता है कि दिल गलत है
दोनो में से कौन जीतेगा, ये अब वक़्त ही बतायेगा.

अर्पण उपमन्यु
मा.सं. विशेषज्ञ
क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

महिलाओं को प्रोत्साहन : राष्ट्र की उन्नति में सहयोग

कुछ बेहद खास उपलब्धि हासिल करने पर अँग्रेजी में कहा जाता है कि फलां ने ग्लास सीलिंग तोड़ दी. लेकिन क्या कभी आपने काँच की छत के टूटने की आवाज़ सुनी है. शायद नहीं क्योंकि महिलाएं तो बड़े से बड़ा मुकाम भी उसी खामोशी और धैर्य के साथ हासिल करती हैं, जैसे वे बिना शोर मचाए अपनी तमाम जिम्मेदारियों को पूरी शिद्दत से निभाती रहती है. अब समय आ गया है, भारत में महिलाएं एक उभरती ताकत बन रही हैं. राजनैतिक मोर्चे पर उनका मत मायने रखने लगा हैं. चुनाओं में महिला मतदाताओं की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही हैं. राजनैतिक दलों ने भी महिला मतदाताओं की ताकत पहचानने में देरी नहीं की है, वे भी उन्हें 'गृहलक्ष्मी' और 'लाड़ली बहना' बनाकर लुभाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं. "मुफ्त सिलेंडर" और "बस यात्रा" की पेशकश, यहाँ तक कि 'स्वच्छ भारत' और 'हर घर नल' कार्यक्रम का भी उन्हें समर्पित होना यही दर्शाता हैं. इसी सितम्बर 2023 में महिला आरक्षण विधेयक को मंजूरी दी गई, जिसमें उनके लिए लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में एक-तिहाई सीटें सुरक्षित करने का प्रावधान है.

उद्योग और महिलाएं -

अक्तूबर 2022 में नीति आयोग की एक रिपोर्ट से पता चला है कि देश में केवल 20% उद्यमों, जिनमें ज़्यादातर सूक्ष्म इकाइयां ही हैं, का स्वामित्व महिलाओं के हाथ में हैं. यह तब है, जब सिर्फ 2 साल पहले, बोस्टन कंसलटिंग ग्रुप के एक अध्ययन से पता चला है कि महिलाओं द्वारा स्थापित व्यवसाय अपनी कार्य संस्कृति में अधिक समावेशी होते हैं. भले ही उन्हें अभी तक पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया हो लेकिन भारतीय महिलाएं अपने मताधिकार के बूते पर अपनी राजनैतिक ताकत का एहसास करा रही हैं. लाड़ली बहना, मुफ्त सिलेंडर जैसी "सरकारी पहल" इसी का नतीजा हैं. हालांकि, बदलाव नजर आ रहा है. कार्पोरेट कंपनियों में समावेशिता और विविधता के नए मूलमंत्र बन रहे हैं. ड़ियाजियों इंडिया में एम डी और सीईओ हिमा नागराजन ने 2025 तक अपने कार्यबल में 50% महिलाओं को शामिल करने का लक्ष्य रखा है. मोनिका शेरगिल और अपर्णा पुरोहित भी नेटफ्लिक्स और प्राइम विडियो पर कुछ ऐसा ही कर रही हैं. जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स में और एक्सिलेंस प्रमुख मनीषा मल्होत्रा भी खेलों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए ऐसा ही कर रही हैं. उनका दृढ़ विश्वास है कि भारतीय महिलाएं कई खेलों में पुरुषों की तुलना में विश्व विजेता बनने की अधिक काबिलियत रखती है.

वायु सेना, नौसेना और थल सेना के कार्यबल की तरफ नजर दौड़ाएँ तो महिलाएं क्रमशः सिर्फ 14%, 6% और 4% ही हैं. महिलाओं के साइंस पढ़ने से अपने कदम पीछे हटाने का एक कारण उनकी शादी भी है. अगर कोई लड़की जरूरत से ज्यादा योग्य हो जाए तो उससे भला शादी कौन करेगा? इसी तरह की भावना का सामना निकहत जरीन को उस दिन करना पड़ा जब उनकी माँ ने बॉक्सिंग क्लास में एक लड़के के साथ मुक़ाबले के बाद उनका खून से लथपथ चेहरा देखा. निकहत ने उन्हें सिर्फ एक तर्क देकर चुप करा दिया 'जिस दिन नाम कमा लूँगी, उस दिन मुझसे शादी करने के लिए लड़कों की कतार लग जाएगी'. कई लड़ाइयां जीती जा चुकी हैं, लेकिन कई मोर्चे अभी बाकी हैं. इस लेख में हम उन महिलाओं की उपलब्धियों का जश्न मना रहे हैं जो उन महिला शख्सियतों की शानदार फेहरिस्त है, जिन्होंने अलग-अलग किस्म की विषमताओं-गरीबी, लैंगिक गैर-बराबरी, भीतर धँसे और अवचेतन के पूर्वाग्रह, अवसर और पूंजी के अलावा ओर भी कई भेदभाव-पर फतेह पाई, अपने शिखर पर पहुँचने का रास्ता बनाया. ये पेशे भी राजनीति, कारोबार, कानून, विज्ञान, शिक्षा, खेल, सामाजिक कार्य, कला, मनोरंजन और संस्कृति जितने भिन्न-भिन्न हैं. देश में अनगिनत तादाद को देखते हुये यह सम्पूर्ण फेहरिस्त नहीं हैं, बल्कि यह सबसे तेज चमकने वाली महिलाओं पर रोशनी डालती है.

1) जनता की महामहिम : दौपदी मुर्मू, भारत की राष्ट्रपति, 65 वर्ष - सर्वोच्च पद, सबसे बड़ा प्रतीकवाद, ओड़ीशा के एक आदिवासी परिवार से राष्ट्रपति भवन तक की दौपदी मुर्मू की यात्रा भारत की लोकतान्त्रिक संभावनाओं का प्रमाण है. आदिवासी समुदायों के कौशल और विरासत तक

पहुँच बढ़ाने की दिशा में योगदान देने के अलावा मुर्मू ने पूर्वोत्तर के 8 राज्यों में से 6 का दौरा किया. उन्होनें अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम की विधानसभाओं को संबोधित किया. राष्ट्रपति भवन में बिताए पहले वर्ष के दौरान उन्होने इन राज्यों के अपने दौरे के अलावा लगभग 16,000 लोगों से मुलाक़ात की.

2) राजकोष की रक्षिता : निर्मला सीतारामन, केंद्रीय वित्त और कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री, 64 वर्ष

देश की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री होने के नाते उन्होनें गैर-लोकलुभावन और दीर्घकालिक नजरिए के साथ वैश्विक मंदी के रुझान को धता बताते हुये कोविड के अंधकार भरे संकटग्रस्त वर्षों के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था को बाहर निकाला. उन्होनें घड़ीसाज़ की लगन के साथ अपना पेचीदा काम शुरू किया और मौजूदा वक्त की जरूरतों और युग की पुकार दोनों के प्रति एक साथ जागरूक रहीं. सुधारों पर उनके ज़ोर के चलते 2020 में सार्वजनिक क्षेत्र के 10 बैंकों का 4 में विलय हुआ. इनमें आंध्रा बैंक भी था. सीतारामन को भारतीय शास्त्रीय संगीत में हिंदुस्तानी और कर्नाटक दोनों, बहुत अच्छा लगता है.

3) दुनिया की चिंता: रुचिरा कंबोज - संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि, 59 वर्ष

संयुक्त राष्ट्र में भारत की पहली महिला राजदूत रुचिरा कंबोज ने अपने दशकों लंबे राजनयिक कैरियर के दौरान कई तरह की जिम्मेदारियाँ निभाई हैं. उनके सफलता का मंत्र है - "कड़ी मेहनत आपके सामने अवसरों के दरवाजे खोल देती है, पूरी तरह समर्पित रहें, भाग्य आपका साथ देगा. रुचिरा 1987 सिविल सर्विसेज बैच की टॉपर थीं. उनकी राजनयिक यात्रा 1989 में पेरिस से शुरू हुई, जहां उन्होनें 1991 तक फ्रांस में भारतीय दूतावास में थर्ड सेक्रेटरी के तौर पर काम किया. 1996 से 1999 तक वें मॉरीशस में भारतीय उच्चायोग में फ़र्स्ट सेक्रेटरी (आर्थिक और वाणिज्यिक) रहीं. पेरिस में यूनेस्को में भारतीय राजदूत रहते हुये कंबोज ने भारत के लिए महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहलों का समर्थन किया था.

4) राष्ट्र की बैंकर : ए मानिमेखलाई - एमडी और सीईओ, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, 56 वर्ष -

जब ए मानिमेखलाई ने 3 दशक से भी अधिक समय पहले चेन्ने के विजया बैंक में प्रोबेशनरी अधिकारी के रूप में बैंकिंग क्षेत्र में प्रवेश किया, तो उनके लिए चीजें आसान नहीं थी. उनको ग्रामीण शाखा में रोजाना 120 किलोमीटर स्कूटर चलाना पड़ता था. वे शहर से बहुत दूर स्थित उस शाखा में अकेली महिला थी. लेकिन उत्कृष्टता हासिल करने की चाहत ने उन्होनें परेशानियों को भुला दिया. उन्होनें कई जिम्मेदारियों को संभाला जिसमें रणनीतिक योजना, संगठनात्मक लक्ष्य निर्धारित करना, अनुपालन और आंतरिक नियंत्रण, अन्य चीजें शामिल थी. वे कहती हैं कि पिछले कुछ वर्षों में विजया बैंक में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाना कोई बड़ी चुनौती नहीं थी क्योंकि आप आकांक्षा तभी पालते है जब आपको मालूम हो कि आप इसके लिए तैयार है. वे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से पहले केनरा बैंक में कार्यपालक निदेशक (ईडी) थीं और उन्होनें सिंडीकेट बैंक के साथ केनरा बैंक के सफल एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. एक महिला के रूप में उन्हें पूरे केरियर में किसी भी तरह के भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा.

5) स्वतंत्र सोच की स्वामिनी : न्यायमूर्ति बी वी नागरत्ना, न्यायाधीश, सुप्रीम कोर्ट, 61 वर्ष

अक्सर अनछुए रास्ते को चुना है न्यायमूर्ति बंगलोर वेंकटरमैया नागरत्ना ने. वे अदालत कक्ष में कभी भी आपा न खोने के लिए जानी जाती है. 2 जनवरी को उन्होनें 2016 की नोटबंदी की कवायद को "गैरकानूनी" घोषित कर दिया, इस तर्क के साथ कि यह फैसला भारतीय रिजर्व बैंक के केंद्रीय बोर्ड ने नहीं, बल्कि केंद्र सरकार ने लिया था. 5 न्यायाधीशों की इस पीठ में वे सबसे कम उम्र की और एकमात्र महिला थी और असहमति की एकमात्र आवाज़ थी. दिल्ली से इतिहास और कानून में स्नातक, न्यायमूर्ति नागरत्ना 1987 में कर्नाटक में एक वकील के रूप में एनरोल हुई. उन्होनें 2020 में तलाक के एक मामलें का फैसला सुनाते समय

भारत में पितृसत्ता की आलोचना करते हुये कहा, यह समाज नहीं जानता कि किसी सशक्त महिला के साथ आखिर किस तरह का व्यवहार किया जाय? वे 2027 में 54वां सीजेआई बनने की कतार में है और इस तरह वे शीर्ष न्यायिक पद संभालने वाली पहली महिला हो सकती है.

6) **अन्तरिक्ष का हिसाब अन्नपूर्णी के पास : अन्नपूर्णी सुब्रमण्यम, निदेशक, भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान, 55 वर्ष -**

2019 में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स की पहली महिला निदेशक बनने वाली अन्नपूर्णी सुब्रमण्यम ने लंबे समय से पुरुषों के दबदबे वाले इस क्षेत्र में हर कदम पर जेंडर बैरियर को तोड़ा है. केरल के पलक्कड की रहने वाली वे फिजिक्स में मास्टर डिग्री के बाद शोध में कैरियर बनाना चाहती थी और उनका इरादा स्पष्ट था कि 'आकाश से संबन्धित कुछ भी' करना है. इसरो और रमन रिसर्च इंस्टीट्यूट की तरफ से खगोल विज्ञान में कराये जाने वाले एक प्रोग्राम को चुना, इसके बाद, 1990 में आइआइए ने उन्हें रिसर्च फ़ेलो के तौर पर एक पद की पेशकश की और करीब 3 दशक बाद 2019 में वे उसी आईआईएम की प्रमुख के तौर पर ज़िम्मेदारी संभालने वाली पहली महिला बनीं.

7) **सेहत है सबसे पहले : आरती सरीन, वाइस-एडमिरल, डायरेक्टर जनरल मेडिकल सर्विसेस (नौसेना), 59 वर्ष**

भारतीय नौसेना की थी स्टार रैंक वाली इस इकलौती महिला अफसर की देखरेख में 7,000 मेडिकल कर्मी हैं. सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा में कमिशन प्राप्त वाइस एडमिरल आरती सरीन को करीब चार दशक लंबे शानदार करियर में तीनों सेनाओं में काम करने का गौरव हासिल है. 1999 में कारगिल युद्ध से ठीक पहले उन्हें कुपवाड़ा जिले के द्रगमुला में एक फॉरवर्ड बेस सर्जिकल सेंटर में तैनात कर दिया गया.

8) वैश्विक लीग में शामिल : डॉ किरण मुजूमदार शॉ, एक्सिक्यूटिव चेयरपर्सन, बायोकॉम और बायोलॉजिक्स, 70 वर्ष -

उनको 1978 की वह बात अच्छी तरह याद है जब वे बायोकोन में पहली बार कर्मचारियों को नियुक्त करने की कोशिश कर रही थी. नौकरी चाहने वाले बेंगलुरु के कोरमंगला स्थित उनके घर पर आते क्योंकि उस घर के गराज से ही उनका दफ्तर था. वे कहती है आज हमने उच्च स्तरीय अनुसंधान और वैज्ञानिक क्षमताओं वाली एक वैश्विक स्तर की बायोटेक कंपनी बना ली है. इसमें 15,000 से ज्यादा वैज्ञानिक और इंजिनियर हैं. वे देश में बायोटेक इकोसिस्टम तैयार करने के बाद अब बायोसिमिलर में वैश्विक बढ़त हासिल करने की कोशिश कर रही हैं. उनका कहना है कि भारत में बायोटेक क्षेत्र के 2047 तक 500 अरब डॉलर तक बढ़ने की उम्मीद है.

9) **जबरदस्त रफ्तार : निसाबा गोदरेज, एक्सिक्यूटिव चेयरपर्सन, गोदरेज कंज़ूमर प्रोडक्टस, 45 वर्ष**

दोहरे अंक में बहुदशकीय वृद्धि की क्षमता वाली नई श्रेणियों के साथ कंपनी को आगे बढ़ाने में उनके नेतृत्व की अहम भूमिका रही है. उन्होनें महिला कार्यबल पर फोकस किया है. "जीसीपीएल" में उनके कुल कार्यबल में 47% प्रतिनिधित्व महिलाओं का हैं. लेकिन वरिष्ठ नेतृत्व के स्तर पर यह भागीदारी केवल 25% है. वे वरिष्ठ नेतृत्व में इसे 30% पर पहुंचाने का लक्ष्य हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं. वे 12 अरब डॉलर (रु 98,818 करोड़) मूल्य वाले गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्टस (जीपीसीएल) को मजबूती से आगे बढ़ाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं.

10) **नया मैदान, पुरानी दिग्गज : अरुंधति भट्टाचार्य, चेयरपर्सन और सीईओ, सेल्स फोर्स इंडिया, 67 वर्ष**

एसबीआई में तकनीकी बदलाव में मदद की और अब सोफ्टवेयर दिग्गज के भारतीय कारोबार की अगुआ हैं. वे कहती है "हार मन लेना

आसान काम है, यह आपका आखिरी विकल्प होना चाहिए" एसबीआई से सेवानिवृत्त होने और सेल्सफोर्स जॉइन करने से पहले अरुंधति ने विप्रो बोर्ड में स्वतंत्र निदेशक के तौर पर काम किया. वे अभी भी आरआईएल बोर्ड में निदेशक है और ग्लोबल पेमेंट नेटवर्क में शामिल स्विफ्ट इंडिया की अध्यक्ष है. यहाँ काम करते हुए वे अक्तूबर 2017 में इसकी पहली महिला अध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्त हुई. प्रौद्योगिकी को लेकर ख़ासी उत्साही होने के बावजूद अरुंधति ने कभी कल्पना नहीं की थी कि एसबीआई से सेवानिवृत्त होने पर अमेरिकी कंपनी सेल्सफोर्स इंक के इंडिया ऑपरेशन में वे पूर्णकालिक तकनीकी नौकरी करेंगी.

11) **बेमिसाल बैंकर : जरीन दारुवाला, क्लस्टर सीईओ, इंडिया एंड साउथ इंडिया मार्केट्स, स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक, 58 वर्ष -**

उनकी अगुआई में बैंक चुनौतीपूर्ण दौर के बाद सतत वृद्धि दर्ज करने की राह पर लौट आया. भारत के सबसे सम्मानित चार्टर्ड लेखाकार में से एक वाई एच मालेगाम ने उन्हें आईसीआईसीआई बैंक जॉइन करने की सलाह दी, जहां सीनियर पदों पर पहले ही कई महिलाएं थी. उनका ऊंचा लक्ष्य यह रहा कि एक बार उन्होंने कहाँ कि जनरल मैनेजर के पद पर पहुँच सकती हूँ. उनकी बॉस ने हल्के से उन्हें धौल जमाते हुए कहा, लक्ष्य मत रखो और फिर दोबारा मत कहना. वे कहती है कि "हमारे ग्राहकों के बीच डिजिटल बैंकिंग अपनाने का स्तर 75% है, जो बाज़ार औसत से 10% ज्यादा है" वे कहती है, स्थानीय तौर पर रिपोर्ट किए गए नतीजों के आधार पर 2022-23 के वित्त वर्ष में "स्टेनचार्ट इंडिया" भारत का दूसरा सबसे ज्यादा मुनाफे वाला विदेशी बैंक है. बेशक, इसका श्रेय दारुवाला को जाता है.

12) **जांच को नहीं आंच : अमीरा शाह, एम डी, मेट्रोपोलिस हेल्थकेयर, 44 वर्ष**

अपने पिता की एकल डायग्नोस्टिक लैब को रु 8,243 करोड़ की मल्टीनेशनल चेन में बदला. उनके अनुसार बोर्डरूम सलाह है कि "लोग बोर्डरूम में राय-मशविरा और विचारों में मूल्यों की अपेक्षा करते हैं, जिसके लिए आपको अनुभव हासिल करने के साथ नियमों और क़ानूनों की समझ पैदा करने की जरूरत होती है"

13) **माइंड मेन्टोर : नीरजा बिरला, फाउंडर और चेयरपर्सन, आदित्य बिरला एज्यूकेशन ट्रस्ट, 52 वर्ष**

साल 2016 में शुरू एमपावर ने देशभर के 33 जिलों में करीब 28 लाख लोगों के जीवन को बदला है. वे युवा महिलाओं को सलाह देती है कि "दिल की सुनें, महिलाओं में यह प्रतिभा जन्मजात होती है - संवेदनशीलता के साथ नेतृत्व हमें अलग बनाता है"

14) **मुक्के में है दम : निक़हत जरीन, दो बार की विश्व चैम्पियन मुक्केबाज, 27 वर्ष -**

भारत की सबसे प्रतिष्ठित मुक्केबाजों में से एक जरीन भारतीय महिलाओं के लिए आशा की प्रतीक और खासकर मुस्लिम लड़कियों के लिए एक आदर्श है. उनके अनुसार यह सच है कि "अपना एक लक्ष्य बनाओ. जब तक वह पूरा होगा भी तो कैसे? प्रतिभा हर किसी में होती है; आप को इसे ढूँढना और निखारना होगा"

15) **दिलचस्प कहानीकार : सुधा मूर्ति, लेखिका एवं परोपकारी, 73 वर्ष -**

2023 में पद्मभूषण से सम्मानित मूर्ति ने इंफोसिस फाउंडेशन में अपने काम और लेखन से कई लोगों का जीवन बदला. उनके अनुसार जीवन का आनंद "मेरे लिए हर दिन काम करने का दिन है और हर दिन छुट्टी है क्योंकि मुझे अपने काम में मज़ा आता है" उनके दादी की सीख कि 'सीखने की कोई उम्र नहीं होती'.

16) **बढ़ाया हिंदी का मान : गीतांजलि श्री, लेखिका, 66 वर्ष**

2022 में, उनके उपन्यास "रेत समाधि" जिसका अँग्रेजी में अनुवाद टुंब ऑफ सैंड के रूप में किया गया, ने अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीता. "शुरू करने की वही ठीक जगह है जहां आप खड़ी हैं. काहे की झिझक" उनकी पसंदीदा किताब "महाभारत" है. उन्हें फुर्सत में पढ़ना, संगीत सुनना, घूमना, अच्छे लोगों के साथ वक्त गुजारना, कभी कुछ भी न करना. उनकी पहली कहानी "खेल पत्र" 1987 में छपी थी. उनके उपन्यास "माई" के साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता अँग्रेजी अनुवाद से उन्हें व्यापक पहचान दिलाई.

भारतीय महिलाएं बीते कुछ दशकों से नई ऊँचाईया छू रही हैं. अब यह बहुत साफ है कि देश की अग्रणी खगोल भौतिकीविद्, अन्तरिक्ष उद्यमी, सूर्य के हमारे मिशन की कमान संभाल रही एक वैज्ञानिक, ठेठ जमीन पर भारतीय रेल्वे को चला रही एक अफसरशाह, सुप्रीम कोर्ट की न्यायाधीश, विराट बहुराष्ट्रीय कंपनियों की सीईओ, हेल्थकेयर, टेक्नालोजी, सॉफ्टवेयर, फार्मा और बैंकों से लेकर सोशल मीडिया और मनोरंजन की चहल-पहल भरी दुनिया की विशालकाय कंपनियों तक समूचे विस्तार में फैले कारोबारों की मालिक, एक वाइस चांसलर, एक वाइस एडमिरल, एक चैम्पियन बॉक्सर, एक क्रेक कमांडो प्रशिक्षक, ये सब महिलाएं हैं जिन्होनें भेदभावों की काँच की दीवार अनूठे अंदाज में तोड़ दी हैं.

उन्हें सम्मानित करने के सम्मोहक कारण है जिन्होनें "माओ" के शब्दों में, "आधा आसमान थाम रखा है" सालाना अखिल भारतीय उच्च शिक्षा सर्वेक्षण (एआईएसएचई) की रिपोर्ट ने 2015 और 2020 के बीच विश्वविद्यालयों के महिला दाखिलें में 18.2% की बढ़ोत्तरी दर्ज की और अब अनुमान है कि कोलेज के छात्रों में पहली बार करीब 50% लड़कियां हैं - 2 करोड़ से ज्यादा. इस तरह शिक्षित महिलाओं की पलटनें कामयाब महिलाओं के नक्शेकदम पर चलने के लिए नेपथ्य में इंतजार कर रही हैं. 70% वैश्विक खपत की अगुआई महिलाएं कर रही हैं और ऐसे में तमाम अध्ययन बताते हैं कि "महिलाओं को साथ" रखने वाली कंपनियाँ बहुत बेहतर प्रदर्शन करती हैं. भारत इस पुण्यचक्र में अभी दाखिल ही हो रहा है. तथाकथित, सी-समूह (सीईओ, सीएफओ, सीओओ आदि) में महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ना तय है, जो सीईओ के मामलें में अभी 4.7% है. यह देखकर हौसला बढ़ता है कि स्थानीय स्वशासन में महिलाओं को 44.4% मौजूदगी दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है.

सुश्री मधुलिका कांबले
वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

श्री आशीष श्रीवास्तव
उप महाप्रबंधक

श्री रोहित कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री अनिल कुमार
उप महाप्रबंधक

खेल दिवस, केन्द्रीय कार्यालय

खेल दिवस, विभिन्न अंचल

धैर्यवान और बुद्धिमान मनुष्य के लिए शोक, विलाप और रुदन सभी अवस्थाएं त्याग देने योग्य हैं - वाल्मिकि

हिंदी के लिए उपयोगी ई-टूल्स

हिंदी का एक शब्द "समृद्ध" जिसका अर्थ फलता-फुलता हुआ; भरा-पूरा; प्रभावशाली आदि शब्दों से है. इस शब्द का उल्लेख करना इस लिए भी आवश्यक है कि जितनी हिंदी, अपने साहित्यिक रूप में समृद्ध है उतनी ही अपने प्रयोजनमूलक रूप में भी समृद्ध है. जिस तरह भारतभूमि को गंगा एवं उसकी सहायक नदियों ने समृद्ध बनाया है उसी तरह हिंदी और उसकी सहायक बोलीयों ने भारत को एक सूत्र में पिरोये रखा है.

किसी भी भाषा की समृद्धी का अनुमान आमतौर पर उसके व्यवहार क्षेत्र से लगाया जाता है और भारत जैसे देश में जहां "चार कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बाणी" जैसे कहावत प्रचलित है, वहाँ भी हिंदी में जल का चरित्र समाहित है. जिसने हिंदी को जिस रूप में ढालना चाहा हिंदी उस रूप में ढली. हिंदी के समृद्ध सम्राज्य को देखते हुए ही उसे जब राजभाषा होने का सम्मान प्राप्त हुआ तो उसके एक नये रूप की आवश्यकता महसूस हुई, यह रूप उसका प्रयोजनमूलक रूप है. भारत में हिंदी आमतौर पर तीन रूपों में व्यवहार की जाती है- क) समान्य हिंदी अर्थात् बोलचाल की हिंदी, 2) साहित्यिक हिंदी, और 3) प्रयोजनमूलक हिंदी. हिंदी के ये तीनों रूप उसे एक दूसरे से भिन्न बनाते है.भारत के भिन्न हिस्से में बोली जाने वाली हिंदी अपने अलग-अलग ढंग दिखाती है.उत्तर भारत में बोली जाने वाली हिंदी, दक्षिण भारत में बोली जाने वाली हिंदी सें काफी अलग होती है, शब्द को काफी हद तो एक ही होती है लेकिन उच्चारण में काफी भिन्नता देखने को मिल जाती है. भाव व्यक्त करते हुए हम व्याकरण आदि का ध्यान, साहित्य में इस्तेमाल होने वाली हिंदी की तुलना में कम रखते है. साहित्य में जो हिंदी व्यहार होती है उसमें विशेष सौंदर्य रहता है और रचनाकार से यह अपेक्षा भी की जाती है कि वे पाठक के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़े.हिंदी का वो रूप जो वर्तमान में चर्चा में है वह है उसका प्रयोजनमूलक रूप. "प्रयोजन" से तात्पर्य है- उद्देश्य, जिस भाषा का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए किया जाए,उसे प्रयोजनमूलक भाषा कहा जाता है.हिंदी में यह शब्द निदबजपवदंस संदहनंहम के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है, जिसका अर्थ है- जीवन की विविध विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जाने वाली भाषा.

हिंदी जो कि अब राजभाषा के रूप में संसद,न्यायालय और प्रशासन की भाषा भी. 80 के दशक तक, ब्रिटिश पूर्वाग्रह से कारण हिंदी इतनी सहज नहीं बन पायी थी जितनी की आज है. हिंदी को बोलचाल की भाषा से,साहित्य की गलियों में घूमते हुए आज विभिन्न कार्यालयों में प्रयोग की भाषा बनने में काफी संघर्ष करना पड़ा है, इस संघर्ष में इन ई-टूल्स ने बखूबी साथ निभाया है. हिंदी को जन-जन के लिए सहज बनाने के लिए भारत सरकार, राजभाषा विभाग के प्रयास प्रशंसनीय है. डिजीटल इंडिया कार्यक्रम के तहत मिशन मोड में कई योजनाएं, इलेक्ट्रोनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा चलायी जा रही है ताकि न केवल हिंदी का बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं का भी विकास हो सके.

हिंदी के उन सभी उपयोगी ई-टूल्स की चर्चा करना आवश्यक है जिसने की हिंदी को केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं रहने दिया और उसे जन-जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया. इस क्रम में सी-डैक के एप्लाइड ए.आई.ग्रुप द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर लीला का विशेष महत्व है. किसी का भाषा का प्रयोग हम तभी बेहतर तरीके से कर सकते है जब हम उसकी आधार से भली-भाँति परिचित हो,उसके बारिकियों को समझ कर ही हम उसका उचित रूप पहचान सकते है.यह कहना कहीं भी गलत नहीं है कि हिंदी, व्याकरण की दृष्टि से विश्व की सबसे परिपक्व भाषा है.इन्हीं व्याकरणिक गुणों को आत्मसात करने हेतू लीला का निर्माण किया गया है. जैसा कि नाम से ही स्पस्ट है खेल-खेल में हिंदी सीखों. यह एक तीन स्तरीय हिंदी सीखों कार्यक्रम है जिसमें वर्णमाला से लेकर दैनिक प्रयोग के वाक्य प्रयोगो पर विशेष जोर दिया जाता है. इसमें अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं असामी, बोडो, बंग्ला, गुजराती, कन्नड़, कश्मिरी, मलयालम, तेलगू, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, और तमिल के माध्यम से हिंदी सिखायी जाती है.लीला में तीन पाठ्यक्रम शामिल है- प्रबोध, प्रवीण, और प्राज्ञ. ये सभी पाठ्यक्रम इस तरीके से तैयार किये गये है कि उपयोगकर्ता चरणबद्ध तरिके से हिंदी का ज्ञान अपनी मनचाही भाषा में प्राप्त कर सके. चूंकि ये ऐप आपको अपकी मातृभाषा में ज्ञान देती है, अत: पाठ्यक्रम सहज प्रतीत होता है. पाठ्यक्रम में वर्णमाला, शब्दावली, शब्दकोश,

उसपर आधारित अध्याय,समान्य प्रचलन के शब्दों से तो अवगत कराती ही है साथ ही कार्यालय में प्रयुक्त होनी वाली विभिन्न- ई-मेल, कार्यसूची, निविदा, विज्ञापन, मसौदा, टिप्पणी आदि का भी ज्ञान देती है. संक्षेप में कहे तो लीला एक पूर्ण ऐप है जो की हिंदी का विकास और प्रचार-प्रसार करने में बेहद उपयोगी है.

हिंदी को समृद्ध बनाने में अनुवाद की एक बड़ी भूमिका रही है.विश्व भर की लिखित और डिजिटल माध्यमों पर उपलब्ध जानकारी को भारत में अपने उपयोग में लाने के लिए अनुवाद की महत्ता बहुत है. यूँ तो अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है और कठिन अभ्यास से ही इसे साधा जा सकता है, हां मगर यह कहना गलत नहीं होगा कि कृतिम मेधा के आने के बाद विभिन्न ऐप के माध्यम से जो अनुवाद किये जा रहे है उनमे और एक मनुष्य द्वारा किये गए अनुवादों में बहुत कुछ समानता देखने को मिल रही है. कंठस्थ इस कड़ी में मील का पत्थर साबित हुआ है. "कंठस्थ" और अब इसका दूसरा संस्करण "कंठस्थ 2.0" किसी भी जटिल अनुवाद को बड़ी ही सटीकता के साथ करता है, कंठस्थ ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम) मशीन साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है .ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुत: एक डेटाबेस है जिसमें स्त्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उन वाक्यों के अनुदित रूप को एक साथ रखा जाता है. ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस प्रणाली की मुख्य विशेषता है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के रूप मे पुन: प्रयोग कर सकता है. यदि अनुवाद की नई फाईल का वाक्य टी.एम के डेटाबेस से पूर्णत: या आंशिक रूप से मिलता है तो यह प्रणाली उस अनुवाद के को टी.एम से लाता है. ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्त्रोत भाषा में उसके अनुदित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है.अनुवाद के लिए प्रणाली का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम का डेटाबेस उत्तरोत्तर बढ़ता रहता है.

"मंत्र राजभाषा" भी एक मशीन साधित अनुवाद टूल है. इसका प्रयोग मुख्य तौर पर प्रशासनिक, वित्त, कृषि, लघु उद्योग, सूचना, स्वास्थ, शिक्षा एवं बैंकिग जगत में अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद करने के लिए किया जाता है.यह प्रणाली मंत्र तकनीकी पर आधारित है और इसे सी-डैक के एप्लाइड आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस ग्रुप(एएआई) द्वारा विकसित किया गया है.इस ऐप की एक खूबी ये है कि इसका प्रयोग आप बिना किसी नेटवर्क के भी कर सकते है और नेटवर्क के साथ भी. इनके अलावा सरकार एक राष्ट्रीय अनुवाद मिशन भी चला रही है जिसका उद्देश्य अनुवाद को एक उद्योग के रूप में स्थापित करना एवं अनुवाद के माध्यम से छात्रों एवं शिक्षकों को भारतीय भाषाओं मे उच्च शिक्षा की पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध कराना है.इस परियोजना का एक लक्ष्य भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में वर्णित भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना है. एनटीएम मैसूर के द्वारा ट्रासलेशन टुडे नाम से पत्रिका प्रकाशित हो रही है, इसे यूजीसी द्वारा मान्याता भी प्राप्त है.

"वाचान्तर" वाचान्तर सी-डैक द्वारा विकसित एक वाक से पाठ अनुवाद तंत्र है. यह अंग्रेजी ध्वनि को इनपुट के तौर पर लेता है तथा हिंदी पाठ में आउटपुट देता है यह कार्य आंतरिक रूप से दो चरणों में होता है,पहले वाक से पाठ इंजन अंग्रेजी ध्वनि को अंग्रेजी पाठ में बदलता है फिर मशीनी अनुवाद "मंत्र राजभाषा" उसका हिंदी पाठ में अनुवाद करता है.गूगल द्वारा विकसित गूगल ट्रांसलेटर भी एक कमाल का अनुवादक टूल है. यह वास्तविक अनुवाद के काफी हद तक समीप रहता है. इसमें एक खास बात इसकी गूगल लेंस पद्धति है जो कि किसी भी पाठ को कैमरे की सहायता से स्कैन करके तुरंत ही स्त्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा में अनुवाद कर सकते है.थोड़े बहुत संशोधन के बाद इस अनुवाद पाठ का प्रयोग किया जा सकता है.

"अनुसारक" एक अंग्रेजी से हिंदी भाषा अनुवाद सॉफ्टवेयर है,जो पाणिनि की अष्टध्यायी(व्याकरण नियमों) से प्राप्त एल्गोरिदम को नियोजित करता है.अनुसारक का नाम संस्कृत शब्द "अनुसरण" से लिया गया है जिसका अर्थ है "अनुसरण करना". इसे ऐसे भी कहा जाता है, क्योंकि अनुवादित अनुसारक आउटपुट परतों में दिखाई देता है-यानी चरणों का एक क्रम जो उपयोगकर्ता को अंतिम अनुवाद प्रदर्शित होने तक एक-दूसरे का अनुसरण करता है. अनुसारक का उद्देश्य उपयोगकर्ताओं को स्त्रोत भाषा से अनुवाद के बाद किसी भी भारतीय भाषा में पाठ तक पहुंचने की अनुमति देना है. आज के सूचना युग में बड़ी मात्रा में जानकारी अंग्रेजी में उपलब्ध है, चाहे वह प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी हो या समान्य पढ़ने की .बहुत से लोग जिनकी प्राथमिक भाषा हिंदी या कोई अन्य भारतीय भाषा है, वे अंग्रेजी में जानकारी प्राप्त करने में असमर्थ है. अनुसारक का उद्देश्य उपयोगकर्ता को अनुसारक में एक अंग्रेजी पाठ दर्ज करने और उसे अपनी पसंद की भारतीय भाषा में पढ़ने की अनुमति देकर इस भाषा की बाधा को दूर करना है.

भाषा का महत्व इससे भी बढ़ जाता है कि वो समाजिक विकास

सरलतापूर्वक कहे गए वचन को अन्यथा नहीं लेना चाहिए - अश्वघोष

में कितना योगदान निभा रही है. भारत सरकार ने गांधीनगर में डिजिटल इंडिया वीक कार्यक्रम में कई डिजिटल अर्थव्यवस्था संबंधी पहलुओं को जोड़ा है उन्ही में से एक है "भाषिणी". भाषिणी एक स्थानीय भाषा अनुवाद मिशन है जिसका उद्देश्य उपलब्ध तकनीक का उपयोग करके विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच की बाधा को तोड़ना है. इसका लक्ष्य कृत्रिम मेधा और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण संसाधनों को सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध कराना है, जिसका उपयोग भारतीय स्टार्ट-अप, एमएसएमई और व्यक्तिगत निवेशकों द्वारा किया जा सकेगा. इससे निर्माताओं को सभी भारतीयों को उनकी मूल भाषाओं में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान करने में मदद मिलेगी. इस ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में एक अलग "भाषादान" अनुभाग भी है जो व्यक्तियों को कई पहलों में योगदान करने की अनुमति प्रदान करता है. योगदान इन चार तरीकों से किये जा सकते है-सुनो इंडिया, लिखो इंडिया, बोलो इंडिया, और देखो इंडिया. जहाँ उपयोगकर्ता को जो सुना है उसे टंकित करना होगा या दूसरों द्वारा लिखित पाठ को मान्य करना होगा. चूंकि हिंदी भाषा का लक्ष्य किसी भी क्षेत्रीय भाषा से प्रतिस्पर्धा करना नहीं है बल्कि सभी भाषाओं के गुणों को आत्मसात करते हुए सबका विकास करना है. 'भाषिणी' के महत्व पर नजर डाले तो,2001 की जनगणना के अनुसार, भारत में 22 अधिकारिक भाषाएं, 122 मुख्य भाषाएं और 1599 अन्य भाषाएं हैं. लेकिन वर्तमान में वेब की दुनिया में अधिकांश सामग्री केवल अंग्रेजी पर ही उपलब्ध है, सरकार का प्रयास केवल भाषा बंध को तोड़ना है. सभी भाषाओं के साथ ही भारत का पूर्ण विकास संभव है.

हिंदी का ज्ञान होना और कंप्यूटर पर हिंदी ज्ञान होना दोनों अलग-अलग बात है. कंप्यूटर को अंग्रेजी भाषा के आधार पर बनाया गया था बाद में उसमें विभिन्न भाषाएं जोड़ी गयी, विभिन्न हिंदी टूल्स आ जाने के बाद कंप्यूटर पर हिंदी सहज हो गयी. कई तकनीकी विशेषज्ञों का मानना है कि प्रोग्रामिंग के लिए सबसे सरल भाषा हिंदी ही है. कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने में एक जो बड़ी समस्या आती है वो है हिंदी टंकण की, बाजारों में मिलने वाले ज्यादातर की-बोर्ड पर केवल अंग्रेजी अक्षर उकरे रहते है इसलिए ऐसे पाठक जिन्होने अभी कंप्यूटर सीखना शुरू ही किया है उन्हे ऐसा प्रतीत होता है कि कंप्यूटर केवल अंग्रेजी में ही कार्य करता है. सरकारी नियमों के अनुसार अब सरकारी और सरकारी अधीनस्थ कार्यालयों में सभी की-बोर्ड का द्विभाषी होना अनिवार्य कर दिया गया है, जिससे कि किसी भी कर्मचारी को हिंदी का प्रयोग करने में कोई भी कठिनाई न हो.जहां तक बात टंकण की है तो राजभाषा विभाग के प्रयास से सी-डैक ने "वाचान्तर" टूल का निर्माण किया है. यह सॉफ्टवेयर हिंदी में बोली गयी ध्वनि को टैक्स्ट के रूप में बदल देता है, इससे टंकण में लगने वाले समय में भी बचत होती है. इनके अलावा गूगल इंडिक की-बोर्ड और माइक्रोसॉप्ट इंडिक की-बोर्ड एक ऐसे विकल्प है जो कि आपको अंग्रेजी में ही टंकण करने की सुविधा देते है और उसे साथ ही हिंदी देवनागरी लिपि में परिवर्तित करके आपके सामने रखते है.ये पद्धति अंग्रेजी शब्द का हिंदी अर्थ नहीं बताती बल्कि उसका देवनागरी में लिप्यांतरण कर देती है. साथ ही लिप्यांतरण करते समय यह कई विकल्प भी आपके सामने रखता है ताकि आप अपने अनुसार उचित को चुन सके. ये तकनीक कई मायनों में कारगर है क्योंकि इससे संविधान में वर्णित देवनागरी को काफी बढावा मिलता है.साथ ही ऐसे कर्मचारी जो हिंगलिश भाषा में टंकण कर पा रहे है वे अपनी हिंगलिश के साथ-साथ देवनागरी में टंकण कर सके.इन टूल्स की एक और खासियत ये है कि वे किसी ज्यादातर भारतीय भाषाओं के लिपि को देवनागरी में बदल सकने में सक्षम है.टंकण करते समय वर्तनि की चूक करना एक बड़ी समस्या बन जाती है कई बार एक छोटी सी दिखने वाली बिंदी भी अर्थ का अनर्थ कर देती हैं. इंडिक टूल में वर्तनी के भी कई विकल्प मिलते है जो की इस तरह के भूल को सुधारने में सहायक है.

कंप्यूटर पर हिंदी को आसान बनाने में "यूनिकोड" का महत्व बहुत ज्यादा है.मूलत: हमारे कंप्यूटर संख्याओं की सहायता से कार्य करते है.उसमें प्रत्येक के लिए एक संख्या निर्दिष्ट करके अक्षरों और अन्य पात्रों को संग्रहित करते है. यूनिकोड के आने के बाद हिंदी का अंतर्राष्ट्रीयकरण संभव हो पाया. यूनिकोड से पहले का समय देखे तो हिंदी में टंकित कोई भी जानकारी जब ऐसे कंप्यूटर पर भेजी जाती थी जो कि यूनिकोड समर्थित नहीं है वहां जानकारी की प्रदर्शनी कूट भाषा के रूप में होती थी अत: जानकारी को पढ़ पाना असंभव हो जाता था.लेकिन यूनिकोड के आने के बाद विश्व के किसी भी यूनिकोड समर्थित कंप्यूटर पर हिंदी को पढ़ा और समझा जा सकता है.जानकारी का लेन-देन अब बहुत ही सहज हो गया है.यूनिकोड का महत्व इससे लगाया जा सकता है कि जापान जैसे देश में जहाँ चित्रात्मक भाषा का प्रयोग किया जाता है, वहां भी यूनिकोड कारगर है.

यूनिकोड पर आधारित एक हिंदी टूल है "प्रवाचक-राजभाषा", यह हिंदी पाठ से ध्वनि मे बदलने की एक प्रणाली है जिसे भी सी-डैक द्वारा विकसित किया गया है.यह हिंदी पाठ को हिंदी भाषण में बदल देता है,इससे आपको वेब-पृष्ठ या पाठ या फिर किसी डॉक फाइल से चयनित हिंदी पाठ को पढ़ने की सुविधा मिल जाती है. इसमें आप ध्वनि को अपनी मनचाही गति के साथ सुन सकते है क्योंकि इसमें एक विशेष स्पीड बटन होता है जो गति को कम या ज्यादा कर देता है.

समान्य तौर पर देखने मिलता है कि, किसी समान्य बोलचाल के शब्दों का अर्थ निकालने के लिए विशेष संघर्ष नहीं करना पड़ता लेकिन जब बात पारिभाषिक शब्दावली की आती है तो लोगो को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है- कम शब्द ज्ञान, जटिल शब्दों का प्रयोग, बाक्य प्रयोग में उचित शब्दों का प्रयोग करने में कठिनाई आदि. ऐसे में इन समस्याओं से निपटने के लिए "ई - महाशब्दकोश" का निर्माण,राजभाषा विभाग के प्रयास से किया गया है. ई-महाशब्दकोश उच्चारण के साथ डोमेन आधारित द्वि-भाषी और द्वि-दिशात्मक हिंदी/अंग्रेजी शब्दकोश है. ये शब्दकोश हिंदी शब्दों और वाक्यांशों के प्रचलित उच्चारण और जानकारी प्रदान करता है. प्रत्येक अंग्रेजी प्रविष्टि के लिए, उसका समतुल्य हिंदी अर्थ एक या उससे अधिक प्रदान करता है. ये शब्दकोश बहुत सी आवश्यक जानकारी प्रदान करते है जो कि समान्य शब्दकोश में उपलब्ध नही है, जैसे किसी शब्द का उच्चारण, विभक्ति रूप, उपयोग और वितरण.इसके अलावा शब्द की परिभाषा और वाक्य प्रयोग के माध्यम से शब्द के प्रयोग की उचित जानकारी दी जाती है.

इन सभी ई-टूल्स के अलावा आधुनिक युग की पसंद "चैट-जीपीटी" का उल्लेख किये बिना शायद सभी टूल्स की गणना पूरी नहीं हो पायेगी.चैट-जीपीटी कृत्रिम मेधा पर आधारित एक ई-टूल है जिसका उद्देश्य रोजमर्रा के कार्यो को आसान बनाना है. आपको किसी भी विषय पर जानकारी देने से लेकर आपके लिए आवेदन पत्र तक बनाने का कार्य इससे सेकेण्डों में पूरा किया जा सकता है.वैसे तो यह तकनीक अंग्रेजी भाषा पर आधारित है लेकिन आप इसे अपनी सहुलियत के हिसाब से बदल सकते है.अपार संभावनाओं के साथ ये युवाओं की पहली पसंद बन गयी है.

हिंदी के लगभग सभी बड़े ई-टूल्स का संक्षिप्त विवरण प्राप्त कर लेने के बाद ये कहा जा सकता है कि भाषा के रूप में हिंदी का व्यापार बहुत समृद्ध है. हिंदी समृद्धि के हर पहलु पर खरी उतरती है. इन टूल्स ने प्रयोगकर्ता को कार्य करने की स्वतंत्रता प्रदान की है, मन में बैठी झिझक को दूर किया है, नये-नये मार्ग प्रशस्त किये है.

ए.व्ही. रमण मुर्ति
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय, जलगांव

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा हमारे उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया. निरीक्षण की झलकियां.

अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बेहतर है यह कार्य दूसरे करें.

दहेज

मॉर्निंग वॉक से शर्माजी जैसे ही लौटे, उनकी पत्नि निर्मला उन पर भादों के बादलों सी अनायास ही बरस पड़ी - "अजी! सुनते हो SS !"

"क्या है? क्यों आसमान सिर पर उठा रखा है? भागवान !" - शर्मा जी बोले.

"सिर पर उठाया नहीं, अपने कॉम्प्लेक्स में आसमान टूट पड़ा है." - निर्मला का स्वर और ऊंचा हो गया.

"क्यूँ? क्या हुआ?" - शर्मा जी ने शाँत भाव से पूछा.

वे अपनी पत्नि की संवेदनशील प्रकृति से भली-भाँति परिचित थे. उन्होंने अनुमान लगाया - आज काम करने वाली बाई ने अचानक छुट्टी कर ली होगी या फिर किसी की लड़की किसी लड़के के साथ चम्पत हो गयी होगी. कोई भी मामूली घटना निर्मला को बदहवास कर सकती थी.

"पूछो, कि क्या नहीं हुआ?" - निर्मला बोली. इतनी बेताबी जैसी रेलवे-स्टेशन पर सुलभ शौचालय की क़तार में लगे लोगों को होती है.

"हाँ-हाँ बताओ, क्या हुआ?" - पिंड छुड़ाते हुए शर्मा जी बोले.

"वो जो 304 नम्बर वाले सक्सेना जी हैं?" - आवाज़ अब फुसफुसाहट में तब्दील हो रही थी.

"हाँ हैं, क्या हुआ उनको?"

"उनकी बहू जल गई."

"हे राम ! कैसे ?

"रात में दूध गरम करने रसोई में गई थी कि बस ...."

"हरे राम! हरे राम! ये सुबह-सुबह क्या ख़बर बोलती हो? अभी छः महीना पहले ही तो उनके बेटे की शादी इतनी धूम-धाम से हुई थी. याद है हम लोगों ने भी 151/- रुपये का शग़न डाला था और डिनर में आईस क्रीम तक नहीं मिल पायी थी." - गंजी खोपड़ी खुजाते हुए शर्मा जी ने कहा.

"अरे भाड़ में गई, तुम्हारी आईस क्रीम! जल्दी से लुंगी उतार कर कुर्ता-पैजामा पहनों और जाकर पता लगाओं कि क्या, कब और कैसे हुआ?" निर्मला ने नारी सुलभ जिज्ञासा का प्रदर्शन करते हुए कहा.

अक्सर, इस प्रकार की घटनाएं हमारे आस-पास घटती हैं. किसी के घर का दुख दूसरों के लिए जिज्ञासा भरे मनोरंजन मात्र से अधिक कुछ नहीं. थोड़ी देर में शर्मा जी लौटे तो घबराये हुए थे. आते ही बोले - सुनती हो, सक्सेना की बहू जली नहीं जलाई गई है, बेचारी.

"क्या कहा? बेचारी? ऊँह, किस काम की थी वो?" - निर्मला ने व्यंगपूर्ण लहजे में कहा.

"क्यूँ, इतनी सुन्दर व सुशील, घर सम्हालने वाली लड़की आजकल मिलती ही कहाँ है?" - शर्मा जी बोले.

"तुम तो बस सारी उम्र बुद्द ही रहोगे. अरे ज़माना बदल गया है. घर सम्हालने की बातें पुरानी हो गई हैं. 2000/- रुपये की बाई भी घर सम्हाल सकती है. आज तो नौकरी वाली बहू चाहिए जो हर महीने बीस-पच्चीस हज़ार नग़द कमा कर लाए." - निर्मला ने जैसे सामाजिक-अर्थशास्त्र को परिभाषित किया.

शर्मा जी अवाक रह गये. पत्नि निर्बाध बोले जा रही थी. शर्मा जी अपने जीवन की फ्लैश-बैक में गुम थे.

उन्होंने अपना जीवन नगर-निगम के बाबू के ओहदे से शुरू किया था. नौकरी होते ही पिता जी ने पंडित जी को किसी अच्छे घर से रिश्ता कराने की प्रार्थना की. पंडित जी ने पास ही के नगर इटारसी के कान्य-कुब्ज ब्राहम्ण परिवार से निर्मला को खोज निकाला. जिसका चेहरा शर्मा जी ने सात फेरों के बाद ही लालटेन की मद्धिम रोशनी में पहली बार देखा था. कितनी शरमा गई थी निर्मला? अभी तक याद करके उन्हे गुद-गुदी हो जाती थी. वही निर्मला क्या-क्या बके जा रही थी. उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था.

निर्मला का स्वर और ऊँचा होता जा रहा था.

"उसका बाप भी धूर्त निकला"

सुन कर शर्मा जी चौंके और वर्तमान में लौट कर पूछा - 'कैसे'?

"उसने शादी में फलैट दिलवाने का वादा किया था लेकिन शादी होते ही जैसे शमशान से लौट कर स्नान करते हैं वे भी नहा धो कर अपना वादा भूल गये. इसी का नतीजा है यह. ठीक ही तो है, ऐसी बहू से क्या फ़ायदा !" - निर्मला ने मानो कि फ़ैसला सुना दिया.

शर्मा जी भौचक्क रह गये. उनकी अपनी बेटी 7 वीं कक्षा में पढ़ रही थी. रिटायरमेन्ट में बस 5 साल बाकी थे. जवान होती बेटी को देख कर उनका दिल बैठा जाता था.

क्या उनकी बेटी सुलभा के साथ भी ऐसा ही होगा? आज यह प्रश्न केवल किसी एक पिता के सामने नहीं है. हर पिता इस विकट परस्थिति से स्वयं को घिरा पाता है. हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि शिक्षा के प्रचार-प्रसार के बावजूद यह बीमारी हमारे समाज का पीछा नहीं छोड़ रही है.

इस स्थिति के कारण क्या हैं? और निवारण क्या हो सकता है? क्या इसके लिये हम सब सामूहिक रूप से जिम्मेवार नहीं है? दहेज़ विरोधी नारे लगा कर, लोग दहेज-विरोधी संस्थाओं का गठन करते हैं. परन्तु अपने बेटे की शादी, शहर से बाहर जा कर धूम-धाम से कर दान दहेज समेट चुप-चाप साधु वेश में लौट आते हैं.

हम में से हर एक को इस 'डबल-स्टैन्डर्ड' मानसिकता से उबरना होगा. किसी की बेटी हमारी बहू व हमारी बेटी किसी की बहू बनेगी. बहू को बेटी मान कर चलें तो किसी के मन में उसके प्रति दुर्भावना आ ही नहीं सकती. दहेज़ और लालच की नींव पर बनी रिश्तों की इमारत रेत के महल की तरह पल भर में टूट सकती है. इसका अनुमान आज हम लोग समाज में बिखरे हुए परिवारों व मासूम बच्चों की उजड़ती जिन्दगी से लगा सकते हैं.

बच्चों का जीवन पैसे से नहीं संस्कारों से सुधरता है. अच्छे संस्कार होंगे तो धन - वैभव स्वयं ही आयेगा.

आने वाली पीढ़ी के उज्जबल भविष्य के लिये हम सभी का कर्तव्य है कि अपने संकीर्ण नज़रिये को बदल कर एक ऐसे मज़बूत समाज की नींव रखें जिस पर खड़ी इमारत सदियों तक टिक पाए. तभी उसके मुख्य द्वार पर हमारे नाम का पत्थर हमारे योगदान की गवाही देगा.

महेश कुमार बजाज
पुणे
पूर्व महाप्रबंधक - सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1	सामान्य आदेश	General Orders
2	संकल्प	Resolution
3	परिपत्र	Circulars
4	नियम	Rules
5	प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6	प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7	संविदाएं	Contracts
8	करार	Agreements
9	अनुज्ञप्तियां	Licences
10	निविदा प्रारुप	Tender Forms
11	अनुज्ञा पत्र	Permits
12	निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13	अधिसूचनाएं	Notifications
14	संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

मै नहीं हम

आज की दुनिया में एक या सभी क्षेत्र में मास्टर होने से सफलता नहीं मिलेगी यदि आप एक टीम के हिस्से के रूप में काम करने में असमर्थ हैं. टीम वर्क के महत्व पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए. वर्तमान अर्थव्यवस्था में, हमारी अधिकांश नौकरियों में दूसरों के साथ बातचीत करना शामिल है, इसलिए, अपने सहकर्मियों के साथ अच्छा प्रदर्शन करने में सक्षम होना विकास और सफलता प्राप्त करने की कुंजी है. व्यवसाय के हर पहलू में, सफलता प्राप्त करने के लिए हमारी टीमों के विविध कौशल की आवश्यकता होती है. हमारे संगठनात्मक लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करने के लिए टीम वर्क एक आवश्यक कौशल है.

अलग-अलग दृष्टिकोण और फीडबैक से टीम वर्क को फायदा होता है.

एक टीम वातावरण व्यक्तियों को समस्या समाधान के लिए अपने विविध दृष्टिकोण लाने की अनुमति देता है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से समाधान तक पहुंचने में उनकी सफलता बढ़ जाती है. टीम मीटिंग में मांगे जाने पर सभी के योगदान को अधिक महत्व दिया जाता है. "ग्रुप आईक्यू" में सुधार संतुष्टिदायक है और टीम को प्रभावित करने वाले निर्णयों में दिखाई देता है. जब किसी टीम के सभी सदस्य अनुचित पदानुक्रम के बिना काम करते हैं और सभी की प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं, तो लोग अपने विचारों के बारे में अधिक खुले होते हैं. यदि आप अपने साथियों के साथ सुरक्षित संबंध की भावना महसूस करते हैं, तो आप निर्णय के डर के बिना आत्मविश्वास से अपनी राय और विचार साझा करने की अधिक संभावना रखेंगे, भले ही विचार से असहमत हों. टीमों में "मनोवैज्ञानिक सुरक्षा" के ऐसे माहौल के परिणामस्वरूप अधिक जुड़ाव, रचनात्मकता और नवीनता आती है.

टीम वर्क से सीखने को मिलता है.व्यक्तियों के पास कौशल और शक्तियों का अपना सेट होता है. जब पूरी टीम एक इकाई के रूप में काम करती है तो सभी को एक-दूसरे से सीखने का अवसर मिलता है. यह प्रक्रिया संसाधन निर्माण की ओर ले जाती है और टीम को नई चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित करने में सक्षम बनाती है.

टीम वर्क से दक्षता और उत्पादकता में सुधार हो सकता है.किसी प्रोजेक्ट पर काम करने वाले एक व्यक्ति को कई लोगों के सहयोगात्मक प्रयासों की तुलना में इसे पूरा करने में हमेशा अधिक समय लगेगा. दक्षता के नियम तब बनते हैं जब किसी टीम के भीतर काम को उचित रूप से विभाजित किया जाता है, जिम्मेदारियां साझा की जाती हैं, और कार्यों को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने की अधिक संभावना होती है. अच्छी टीमवर्क समूह के परिणामों और संगठनों की मापने योग्य प्रभावशीलता को भी बढ़ाती है.

टीमवर्क संचार और मजबूत कार्य संबंध विकसित करता है. कार्य संबंध बनाने में टीम वर्क प्रभावी होती है. हमारा मतलब यह नहीं है कि टीम के सदस्यों को सबसे अच्छे दोस्त होने चाहिए. बल्कि, एक बेहतरीन कामकाजी रिश्ता सही मानसिकता से निकलता है जहां आप सकारात्मक इरादे, सम्मान और सक्रिय रूप से सुनने के साथ सहयोग करते हैं. महान टीम संचार आपसी समझ और विश्वास की इच्छा पर आधारित होता है. जब एक समान लक्ष्य पर एक साथ काम किया जाता है या समग्र रूप से वितरित किया जाता है, तो व्यक्तिगत सदस्य लगातार एक-दूसरे को प्रोत्साहित और समर्थन करते हैं. वास्तव में, अच्छी टीम वर्क के सबसे बेशकीमती लाभों में से एक कथित कार्य तनाव में कमी है. टीम के सदस्यों के बीच सौहार्द और दोस्ती की भावना उच्चतम स्तर के मनोबल और नौकरी से संतुष्टि से जुड़ी है.

टीम वर्क से उपलब्धि की विस्तारित भावना आती है.जब कोई टीम किसी परियोजना पर एक इकाई के रूप में काम करती है, तो हम जिस उपलब्धि की अनुभूति का अनुभव करते हैं, वह हमारी व्यक्तिगत उपलब्धियों से परे विस्तारित होती है. टीमवर्क स्वयं से बड़ी किसी चीज़ में शामिल होने और योगदान देने की मानवीय इच्छाओं को पूरा कर सकता है. यह एक और कारण है कि टीम वर्क कौशल विकसित करना हर किसी के निवेश के लायक है.

मो.मकबूल आलम
सहायक प्रबंधक, गोरखपुर क्षेत्रीय कार्यालय

सेन्ट निओ

बैंक में काम करते समय, अगर आपको कहीं से यह लग रहा है कि हमारा बैंक आने वाली सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगति मे कई हद तक पीछे है. अगर हम सभी बैंक के सूचना प्रौद्योगिकी में हुई हैरान करने वाली प्रगति की तरफ देखें तो हम अपने बैंक के बारे मे सोचने को मजबूर हो जायेंगे. इसी बात को मद्दे नजर हमारे उच्च प्रबंधन ने हमारी बैंक कही पीछे न रह जाए. इसीलिए सेंट निओ, एक बहुत महत्त्वाकांक्षी विभाग बनाया है.

यह अपनी बैंक को एक डिजिटली मजबूत बैंक बना कर, सभी सेवाएं ग्राहकों तक ऑनलाइन माध्यम से पहुंचायेगा.

इस साल सबसे ज्यादा भुगतांन डिजिटल माध्यम से किये जा रहे हैं. पेमेंट बैंक एवं एनबीएफसी भी ग्राहकों को सभी सुविधाएं बड़े बैंकों के समान प्रदान कर रहे हैं. इस समय क्या हमें किसी से पीछे रहना हैं? या सबसे आगे जाने की चाह रखना गलत होगा?

आए दिन हम कोई ना कोई बैंकिंग में प्रगति बदलाव को किसी माध्यम से सुनते हैं. समय आ गया है कि हम भी पूरी तरह से डिजिटल बन जाएं. ताकि इस डिजिटल दुनिया में हमारे बैंक को एक पूरी तरह प्रगति और डिजिटल बैंक की पहचान मिले.

हम विलंब से ही क्यो ना हो लेकिन हमने ये फैसला किया है, तो इसे पूरा करने की जिम्मेदारी सभी नियो कर्मचारियों की है. ये अति महत्वाकांक्षी काम हम पूरी निष्ठा से करेंगें.

सेंट नियो में कुल मिलाकर सभी सेवाओं को ऑनलाइन कर दिया जाएगा. अभी हमारे दोनों ग्राहक सेवा केंद्र सक्रिय हो चुके हैं. आगे हमारे ऋण और जमा पूंजी की सभी योजनाएं डिजिटल होने जा रहीं है. इसके साथ ही धन प्रबंधन, लघु मध्यम एवं कृषि ऋण से संबंधित सभी योजनाएं भी डिजिटल की जा रही है. यह इतना सरल बनाया गया है, कि कोई भी पढ़ा लिखा आम आदमी अपने मोबाइल के माध्यम से सभी सेवाओं से लाभान्वित हो सकेगा. इन सेवाओं को निश्चित समय में पूर्ण समाधान के साथ पूरा करने के लिए वेंडर के स्टाफ भी साथ ही में उसी जगह कार्य समापन कर रहे है.

आधुनिकीकरण एक कदम हैं जिसको हमें पहले ही कर लेना था. लेकिन हमारा बैंक पीसीए एवं कोरोनो वायरस, इत्यादि समस्याओं से जूझ रहा था. इसीलिए हम थोड़ा देर से इसे हासिल कर रहें है.

मुझे लगता है की सेंट नियो हमारे बैंक को एक पारंपरिक बैंक से आधुनिक तकनीकी बैंक बना देगा. अभी जल्द ही हम इस मुकाम पर जरूर पहुंच जायेंगे.

आधुनिक तकनीकी रूपांतरण के साथ हमें डिजिटल सिक्योरिटी, डेटा गवर्नेंस एवं डेटा सिक्योरिटी को निश्चित तौर पर प्राथमिकता देनी है. इसीलिए नियो में भी सुरक्षा टीम कार्यरत है. उन पर ग्राहक डेटा एवं आर्थिक व्यवहार के डेटा को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी है.

इन सभी बातों को आम आदमी को समझना मुश्किल हो सकता है लेकिन आज कल के डिजिटल युग में यह एक ज़रूरत है. हैकर्स और आर्थिक अपराध बहुत बढ़ गए है. इसलिए हमें सतर्क रह कर बैंक को डिजिटल बनाना है. आर्थिक व्यवहार को सुरक्षित बनाने में भी नियो की तकनीकी टीम काम कर रहीं है.

आज के बिग डेटा वाले युग में ग्राहकों के खर्चे, उनके उम्र, उनकी आमदनी, लेन देन आदि को जांच कर उनमें से सबसे ज्यादा कौन सी ग्राहक सेवा का निश्चित तौर पर लाभ लेना चाहेगा ऋण हो या जमा राशि यह एक मॉडल के द्वारा निकाला जा रहा है, और हमारे विपणन विभाग के द्वारा सभी शाखाओं तक पहुंचाया जा रहा है. इसी तरह विविध मॉडल नियो में बनाए जा रहे है. जिसे बैंक को ग्राहकों तक पहुंचने में आसानी होगी. फ्रॉड प्रिडिक्शन मॉडल, एनपीए मॉडल आदि प्रकार के मॉडल बना कर हम बैंक को आनेवाली आर्थिक क्षति से बचा सकते है. हमारा नियो ये सभी योजनाएं बना रहा है, और आनेवाले समय में यह एक भारतीय बैंकिंग में क्रांतिकारी कदम होगा. मुझे आशा है कि अब हम एक प्रगत आधुनिक बैंक के नाम से कूच करनें जा रहे हैं.

नियो का उद्देश्य हमारे बैंक की तमाम सुविधाएं ग्राहकों तक एक ही माध्यम में एकत्रित करना है. ताकि हर एक सुविधा के लिए उसे केवल एक ही ऐप में लॉगिन करना पड़े. अब हमें यह निर्णय लेना होगा हम कितनी सुविधाएं ऑनलाइन माध्यम में ग्राहकों तक पहुंचा सके. ऋण, जमा सेवाएं, आस्बा, यूपीआई, बीबीपीएस, धन प्रबंधन, इत्यादि सेवाए एक ही चैनल (ओमनी चैनल ऐप) द्वारा प्रदान की जानी है.

बैंकिंग में 2 बार बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया है. उसके बाद प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी और हर बैंक ग्राहक संतुष्टि में निरंतर सुधार कर रहे हैं. उसके बाद अभी फिनटेक का समय है. भारत फिनटेक को अपनाने वाला दुनिया का सबसे बड़ा देश है. आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) बैंको को ग्राहकों को समझने, उनका प्रमाण संख्या उनका सेगमेंटेशन, अच्छा व्यापार प्राप्त करने में मदद, आर्थिक स्थिति के बारे में सुझाव, क्रेडिट स्कोरिंग, फ्रॉड डिटेक्शन, वसूली, प्रोसेसिंग में अपार क्षमता आदि में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं.

बिग डेटा एनालिटिक्स से जानकारी की प्रसंस्करण कर निर्णय क्षमता बहुत बढ़ी है. फॉरेक्स ट्रेडिंग, चैटबोट, ब्लॉकचेन, विनियामक अनुपालन आदि ऑटोमेशन के जरिए आसान हो गया है. इन सभी तकनीकों को हमारे बैंक में सुचारु रूप से समावेश करने का काम नियो कर रहा है. मुझे विश्वास ही नहीं भरोसा है कि आनेवाले कुछ दिनों में हम बैंकिंग क्षेत्र मे अपनी नई छवि बनायेंगे और एक प्रमुख और श्रेयस्कर बैंक बनेंगे.

रितेश वाकोड़े, सेंट नियो
मुख्य प्रबंधक

वित्तीय समावेशन: आर्थिक विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण मिशन

"वित्तीय समावेशन सतत और संतुलित आर्थिक विकास का एक प्रमुख प्रेरक तत्व है जो आय की असमानता और गरीबी को कम करने में सहायता प्रदान करता है."

श्री शक्तिकांत दास, गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक (15 जुलाई 2021 को दिये गए भाषण का अंश)

समूचे विश्व में आर्थिक वृद्धि और गरीबी उन्मूलन की दृष्टि से, वित्तीय समावेशन की अवधारणा को लगातार एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में मान्यता प्राप्त हो रही है.शासकीय पहल और योजनाओं के अंतर्गत वित्तीय सेवाओं की पर्याप्त उपलब्धता न केवल रोजगार के अवसर उपलब्ध कराती है बल्कि आर्थिक संकट की दुश्वारियों को दूर करते हुए मानव सम्पदा में निवेश को भी बढ़ाती है. भारत के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विचारकों ने सर्व समावेशी, सुदीर्घ और सर्वांगीण विकास का जो सपना देखा था, उसे साकार करने में वित्तीय समावेशन की अवधारणा एक निर्णायक भूमिका अदा कर रही है. इस बात के प्रमाण लगातार बढ़ रहे हैं कि वित्तीय समावेशन के प्रभाव से राष्ट्रीय स्तर पर न केवल आर्थिक समानता में वृद्धि हुई है बल्कि इससे लैंगिक समानता यानी आर्थिक स्वावलम्बन की दृष्टि से महिलाओं की भागीदारी में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. दूसरे शब्दों में वित्तीय समावेशन महिला- सशक्तीकरण के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है क्योंकि यह न्याय-संगत विकास की अवधारणा पर आधारित है और बिना किसी भेद्भाव के समाज के सभी वर्गों विशेषकर गरीब वर्ग के विकास पर जोर देता है.

वित्तीय समावेशन क्या है?

वित्तीय समावेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत सरकार आम व्यक्ति को अर्थव्यवस्था के औपचारिक ढांचे में शामिल करती है. वस्तुत: वित्तीय समावेशन के विचार के तहत यह सुनिश्चित किया जाता है कि समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी आर्थिक विकास के लाभ से जोड़ा जा सके ताकि वह इसके सुपरिणामों से वंचित न रहे.

परिभाषा

सभी व्यक्तियों और व्यवसायों को उनकी हैसियत या कम्पनी के आकार का ध्यान रखे बगैर बिना किसी भेदभाव के कम लागत पर उन्हें वित्तीय उत्पाद और सेवाएं उपलब्ध कराये जाने को हम वित्तीय समावेशन कहते हैं. वित्तीय समावेशन लोगों के बेहतर जीवन जीने के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए वित्तीय सेवाओं को सुगम बनाता है. इसे समावेशी वित्त भी कहा जाता है. अन्य शब्दों में यह कह सकते हैं कि वित्तीय समावेशन संस्थागत प्रतिभागियों द्वारा पारदर्शी तरीके से समाज के कमजोर वर्गों के लिए आवश्यक वित्तीय उत्पाद और सेवाओं की सस्ती कीमत पर उपलब्धता सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है.

वित्तीय समावेशन भारत में क्यों आवश्यक है?

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में केवल 59 प्रतिशत परिवारों को बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध थी. आबादी के एक बड़े हिस्से की बैंकिंग सुविधाओं तक पहुंच न होने से वे गरीबी, अशिक्षा और कर्ज के कुचक्र में फंस जाते हैं. अत: इस सच्चाई को नजरंदाज कर कोई भी देश वित्तीय रुप से स्थायी प्रगति की ओर गतिमान नहीं हो सकता. यदि देश के सम्पूर्ण आर्थिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना है तो वित्तीय समावेशन इसका एक महत्त्वपूर्ण माध्यम हो सकता है. वित्तीय समावेशन आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता को मजबूती देता है तथा कमजोर व गरीब वर्ग में औपचारिक वित्तीय स्रोतों के माध्यम से बचत, बीमा,पेंशन और ऋण की सुविधा प्राप्त करने के महत्त्व को रेखांकित करता है.

वित्तीय समावेशन का उद्देश्य

वित्तीय समावेशन का मुख्य उद्देश्य औपचारिक वित्तीय सुविधाओं से वंचित वर्गों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ना, रोजगारपरक एवं गरीबी उन्मूलन योजनाओं को बैंक के माध्यम से उन तक पहुंचाना, ग्रामीण अशिक्षित जनता को महाजनों और साहूकारों के चंगुल से छुड़ाना है ताकि देश का समग्र और संतुलित विकास सुनिश्चित किया जा सके.

वित्तीय समावेशन कैसे कार्य करता है?

विश्व बैंक अपनी वेबसाइट में वित्तीय समावेशन पर कहता है कि वित्तीय समावेशन लोगों को विभिन्न संस्थाओं के द्वारा औपचारिक बैंकिंग सुविधाओं का लाभ देता है. इससे उन्हें दीर्घकालीन लक्ष्यों

व अप्रत्याशित आपदाओं से निपटने में सहायता और जीवन-यापन की सुविधाएं प्राप्त होती हैं. सामान्य व्यक्ति और लघु व्यवसायी इसके अन्तर्गत बचत, बीमा, पेंशन और ऋण राशि का समुचित उपयोग करते हुए अपने स्वास्थ्य, शिक्षा जोखिम और व्यवसाय का प्रबंध कर सकते हैं.इससे उनके जीवन स्तर में समग्ररूप से सुधार परिलक्षित होता है.

वित्तीय समावेशन की अवधारणा: उद्गम और विकास

वित्तीय समावेशन वस्तुत: गांधीवादी दर्शन ''अंत्योदय से सर्वोदय'' का प्रतिबिम्ब है जिसमें समग्र विकास की भावना 'समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति के उत्थान से सभी लोगों के कल्याण में' अंतर्निहित है.

भारत अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही जनोन्मुखी आर्थिक नीतियों के द्वारा इस दिशा में अप्रत्यक्ष रुप से सतत प्रयत्नशील रहा है. भारत में वित्तीय समावेशन की यात्रा 1947 में ही आरम्भ हो गयी थी. वर्ष 1956 से जीवन बीमा कम्पनियों की स्थापना, 1969 और 1980 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के उपरांत इसे और भी विस्तार मिला. इसी प्रकार 1970 में अग्रणी बैंक योजना का कार्यान्वयन, 1972 में प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र के लक्ष्यों का निर्धारण, 1975 में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की स्थापना, आईआरड़ीपी,पीएम आर वाई जैसी विभिन्न सरकारी ऋण योजनाएं इत्यादि से वित्तीय समावेशन अभियान को आगे बढ़ाने में सहायता मिली. वित्तीय समावेशन के औपचारिक कार्यक्रम की घोषणा वर्ष 2005 में हुई जिसे 15 अगस्त 2014 से आरम्भ हुई प्रधानमंत्री जनधन योजना से उल्लेखनीय ऊंचाई प्राप्त हुई है.

प्रधानमंत्री जनधन योजना-एक राष्ट्रीय मिशन: हालांकि वित्तीय समावेशन की अवधारणा भारत में प्रत्यक्ष रुप से 2005 में शुरु हुई किंतु इसमें निर्णायक प्रगति 2014-15 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में भारत सरकार द्वारा आरम्भ की गई प्रधानमंत्री जनधन योजना से दृष्टिगोचर हुई है. इस योजना की शुरुआत 15 अगस्त 2014 से दो चरणों में हुई. पहला चरण 15 अगस्त 2014 से 14अगस्त 2015 तक और दूसरा चरण 15 अगस्त 2015 से 14 अगस्त 2018 तक प्रभावी था.यह योजना अपने आरम्भ से ही देश की बैंकिंग रहित और कम आय वाली आबादी के वित्तीय समावेशन में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है. प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत वंचित और कमजोर वर्गों के लिए विभिन्न वित्तीय सेवाएं जैसे बुनियादी बचत खाता, आवश्यकता-आधारित ऋण, बीमा, पेंशन इत्यादि उपलब्ध कराये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था. इस योजना के मुख्य लाभ निम्नानुसार हैं:

1. बैंकिंग सुविधा से वंचित व्यक्ति का एक बुनियादी बचत खाता हो.
2. इस खाते में न्यूनतम बकाया राशि के रख-रखाव की आवश्यकता नहीं.
3. जमा पर ब्याज की प्राप्ति.
4. रुपै डेबिट कार्ड की उपलब्धता.
5. रुपै डेबिट कार्ड धारकों के लिए रु. 2 लाख तक की दुर्घटना बीमा सुविधा.
6. पात्र खाताधारकों के लिए रु. 10000 तक ओवरड्राफ्ट सुविधा की उपलब्धता.
7. प्रधानमंत्री जनधन योजना के हितग्राहियों को प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी), प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, एपीवाई, मुद्रा योजना की सुविधा.

प्रधानमंत्री जनधन योजना में 18.10.2023 तक की प्रगति

कुल हितग्राही	जमाराशि	हितग्राहियों को जारी रुपै डेबिट कार्ड	शाखा रहित बैंकिंग सेवाओं की अदायगी करने वाले बैंक मित्रों की संख्या
50.76 करोड़	206786.06 करोड़	34.46 करोड़	8.50 लाख

स्रोत:पीएमजेडीवाई.गव.इन

इस योजना में प्रत्येक परिवार को बैंकिंग सहित औपचारिक वित्तीय सेवाओं की परिधि में लाने की जो परिकल्पना की गई थी उसे काफी हद तक सरकार ने अपने संकल्प से साकार करने में सिद्धि प्राप्त कर ली है. इस योजना का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि पीएमजेडीवाई के कुल हितग्राहियों में से महिला हितग्राही लगभग 56 प्रतिशत हैं. यह भारत की परम्परागत समाज व्यवस्था में एक क्रांतिकारी बदलाव है.

वित्तीय समावेशन पर मुख्य समितियां

1. **रंगराजन समिति 2008:**

भारतीय रिजर्व बैंक के तत्कालीन गवर्नर डॉ. सी. रंगराजन की अध्यक्षता में गठित समिति ने वित्तीय समावेशन को कमजोर और निम्न आय वर्गों के लोगों को उनकी आवश्यकतानुसार कम लागत

तथा उचित समय पर वित्तीय सेवाएं तथा पर्याप्त ऋण उपलब्ध कराये जाने के सशक्त माध्यम के रुप में निरुपित किया है. इस समिति ने वित्तीय वंचन के स्तर,मांग बढ़ाने की आवश्यकता, वित्तीय समावेशन के लिए राष्ट्रीय मिशन, प्रौद्योगिकी फण्ड का विकास, स्वयं-सहायता समूह की स्थापना, सूक्ष्म-बीमा, सहकारी समितियों की मजबूती, प्रक्रियाओं का सरलीकरण, आवधिक समीक्षा इत्यादि पर जोर दिया है.

2. दीपक मोहंती समिति 2015

वित्तीय समावेशन के मध्यावधि मार्ग पर गठित इस समिति ने वित्तीय समावेशन के विजन को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि लघु और सीमांत किसानों तथा कम आय वाले परिवारों को कम लागत पर पर्याप्त वित्तीय सेवाएं, बीमा सुरक्षा, पेंशन इत्यादि उपलब्ध हों, इसके लिए प्रौद्योगिकी का अधिकाधिक उपयोग किया जाना चाहिए.

वित्तीय समावेशन के मुख्य उत्पाद:

वित्तीय समावेशन के मार्ग में चुनौतियां:

वित्तीय समावेशन के प्रभावी विस्तार के मार्ग में मुख्य चुनौतियों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:

1. **आय में कमी:** ग्रामीण और सुदूर इलाकों की अधिकांश जनता की आय का पर्याप्त और सरप्लस न होना उन्हें बैंकिंग प्रणाली से जोड़ने और बैंक- ग्राहक के सम्बंधों को कायम रखने में एक बड़ी चुनौती है. उन्हें मिशन के तहत एक बार जोड़ा जा सकता है. वे कुछ समय के लिए इससे जुड़े भी रह सकते हैं. लेकिन नियमित और पर्याप्त आय के अभाव में कालांतर में उन्हें औपचारिक वित्तीय व्यवस्था से बाहर होने के लिए मजबूर होना पड़ता है.

2. **अपर्याप्त अधोसंरचना:** ग्रामीण क्षेत्र,पहाड़ी क्षेत्र, सुदूर भौगोलिक इलाके, सीमित परिवहन सुविधा,प्रशिक्षित स्टाफ की कमी इत्यादि के कारण ग्राहकों तक वित्तीय सेवाओं की पहुंच सम्भव नहीं हो पाती है.

3. **कमजोर कनेक्टेविटी:** वर्तमान युग में वित्तीय सेवाओं को जन-जन तक पहुंचाने में प्रौद्योगिकी का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है.ऐसे में टेलीफोन और इंटरनेट कनेक्टिविटी का अपर्याप्त और कमजोर होना,वित्तीय समावेशन के प्रभावी विस्तार में एक बड़ी बाधा है.

4. **जटिल और अस्पष्ट प्रक्रिया:** जटिल और लम्बी प्रक्रिया, ग्राहकों विशेषकर अनिश्चित आय वाले ग्राहकों को वित्तीय समावेशन की परिधि में ला पाने में एक बड़ी रुकावट है. इन प्रक्रियाओं को इसप्रकार से सरलीकृत किए जाने की आवश्यकता है कि सावधानी और सरलता के बीच एक समाधानमूलक संतुलन बिठाया जा सके.

5. **सामाजिक- सांस्कृतिक बाधाएं:** समाज के कुछ वर्गों में प्रचलित जीवन-मूल्य एवं मान्यताएं औपचारिक वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को हासिल करने में बाधा उत्पन्न करते हैं. अब भी कुछ ऐसे स्थान हैं जहाँ महिलाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक बंदिशों के कारण वित्तीय सेवाओं के चुनाव की स्वतंत्रता प्राप्त नहीं है.

6. **जागरुकता की कमी:** भारत के ग्रामीण और सुदूर इलाकों में वित्तीय शिक्षा, ज्ञान और जानकारी की कमी की वजह से अनेक लोगों में इस औपचारिक वित्तीय प्रणाली पर विश्वास उत्पन्न नहीं हो पाया है जिसके कारण वे अभी भी स्थानीय साहूकारों से कर्ज का लेनदेन करना पसंद करते हैं.

7. **डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा:** इससे सम्बंधित कानूनी प्रावाधानों को पारदर्शी, सुस्पष्ट,व्यापक और असरदार बनाने की आवश्यकता है. डेटा के दुरुपयोग सम्बंधी बढ़ती घटनाएं ग्राहकों को डिजीटल वित्तीय सेवाएं प्राप्त करने से रोकती हैं और कुछ मामलों में तो उचित समाधान प्राप्त ना होने पर ग्राहक व्यथित होकर समूची वित्तीय सेवाओं की परिधि से बाहर आ जाते हैं.

इन चुनौतियों को एक भिन्न दृष्टिकोण से निम्नानुसार प्रकट कर सकते हैं:

मांग आधारित चुनौतियां	**आपूर्ति आधारित चुनौतियां**
पर्याप्त आय की कमी	बैंकिंग और भुगतान सुविधाओं की अधोसंरचना में कमी
वित्तीय साक्षरता का अभाव	कमजोर कनेक्टीविटी
सामाजिक- सांस्कृतिक मान्यताएं	जटिल प्रक्रियाएं और संदिग्ध डेटा सुरक्षा

वित्तीय समावेशन के लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल

1. **वित्तीय शिक्षण के लिए राष्ट्रीय रणनीति 2020-25:** सर्वसाधारण को वित्तीय मामलों में आवश्यक ज्ञान और कौशल से परिपूर्ण बनाने में वित्तीय साक्षरता और शिक्षा केंद्रित कार्यक्रमों की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है. वित्तीय कौशल और ज्ञान सम्पन्न होकर वे गैर मान्यता प्राप्त और शोषण की आशंका वाले वित्तीय माध्यमों की बजाय, मान्यता प्राप्त विकल्पों का उपयोग करने पर होने वाले फायदों को समझ सकते हैं. इन कार्यक्रमों के माध्यम से उत्पन्न जागरुकता की मदद से वे सही वित्तीय निर्णय ले सकते हैं तथा अपने वित्तीय बजट की एक प्रभावी रुपरेखा भी बना सकते हैं.

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के उप-गवर्नर ने 20 अगस्त 2020 को एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज का लोकार्पण किया जिसे वित्तीय शिक्षण के लिए राष्ट्रीय रणनीति के नाम से जाना जाता है. इस दस्तावेज में उल्लिखित विजन और रणनीतिक उद्देश्य निम्नानुसार हैं:

प्रथम आयाम	शिशु	युवा	युवा वयस्क	काम-काजी वयस्क	वरिष्ठ नागरिक
द्वितीय आयाम	ग्रामीण क्षेत्र	आकांक्षी जिले, एलडब्लूई, एनईआर, पहाड़ी राज्य	शहरी गरीब और सीमांत जनता पर केंद्रित शहरी क्षेत्र		
तृतीय आयाम	लघु और सीमांत कृषकों पर केंद्रित कृषि क्षेत्र	कुशल/ अकुशल श्रमिक/ असंगठित क्षेत्र के दस्तकारों पर केंद्रित एमएसएमई	स्वयं सहायता समूह		

इस दस्तावेज में “5 सी” की अवधारणा के आधार पर पूरे देश में वित्तीय शिक्षण के प्रचार-प्रसार पर जोर दिया गया है. (1.कंटेंट यानी विषय-वस्तु, 2.केपेसिटी यानी क्षमता, 3.कम्युनिटी यानी समुदाय, 4.कम्यूनिकेशन यानी सम्प्रेषण और 5.कोलाबरेशन यानी सहयोग)

2. **वित्तीय समावेशन के लिए राष्ट्रीय रणनीति 2019-24**

वित्तीय क्षेत्र के सभी स्टेकहोल्डरों को ध्यान में रखते हुए वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया को आसान बनाने तथा उसके लक्ष्यों- उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, वित्तीय समावेशन की राष्ट्रीय रणनीति 2019-24, एक महत्त्वपूर्ण पहल है.

यह राष्ट्रीय रणनीति, वित्तीय समावेशन सलाहकार समिति की सलाह पर बनाई गई है जिसमें भारत सरकार, आरबीआई, सेबी, बीमा,पेंशन नियामक संस्थाओं, नाबार्ड, वाणिज्यिक बैंक,कारपोरेट बीसी इत्यादि के सुझावों को शामिल किया गया है.

यह दस्तावेज न केवल वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता के लिए रोडमेप देता है बल्कि उपभोक्ता सरंक्षण, वित्तीय साक्षरता इत्यादि को प्रोत्साहित करते हुए वित्तीय समावेशन पर एक गहरी, व्यावहारिक और व्यापक दृष्टि भी देता है. इसके मुख्य उद्देश्य निम्नानुसार हैं:

- बुनियादी वित्तीय उत्पादों की उपलब्धता
- वित्तीय सेवाओं तक आम नागरिक की पहुंच
- प्रभावी समन्वय
- साक्षरता और शिक्षण
- जीविका की उपलब्धता
- उपभोक्ता संरक्षण

3. **जाम त्रिकोण (जाम ट्रिनिटी)** प्रधानमंत्री जनधन खातों को मोबाइल और आधार से लिंक करते हुए एक सशक्त संरचना तैयार

की गई है जिसे हम जाम त्रिकोण के नाम से जानते हैं.इसके माध्यम से खाताधारक रुपै डेबिट कार्ड का इस्तेमाल करते हुए ड़ीबीटी, सामाजिक सुरक्षा,पेंशन, ऋण सुविधा, डिजीटल भुगतान इत्यादि का लाभ ले सकता है. इस लिहाज से यह त्रिकोण सुरक्षित और वित्तीय रुप से सशक्त समाज निर्माण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में वित्तीय समावेशन की अवधारणा के तहत अपना एक महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है.

4. **पीएम स्वनिधि योजना:** यह योजना कोविड-19 के दुष्प्रभाव से अपनी आजीविका की समस्या से जूझ रहे गलियों-सड़कों पर व्यवसाय कर रहे हॉकरों और छोटे विक्रेताओं को सूक्ष्म वित्तीय सहायता (रु. 50000/-तक) प्रदान करने के उद्देश्य से 01जून 2020 को आरम्भ की गई थी. टाइम्स आफ इंडिया में दिनांक 25 अक्तूबर 2023 को प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार इस योजना ने प्रधानमंत्री जनधन खातों में बढ़ोत्तरी करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है. भारतीय स्टेट बैंक द्वारा किये गये एक सघन अध्ययन की विस्तृत रिपोर्ट में यह कहा गया है कि अनेक सूचकांक यह बताते हैं कि पीएम स्ट्रीट वेंड़र स्वनिधि योजना ने औपचारिक ऋण में जबर्दस्त वृद्धि दर्ज करते हुए वित्तीय समावेशन कार्यक्रम को उल्लेखनीय विस्तार दिया है. इस योजना से लाभांवित होने वाले 50 लाख हितग्राही अपने जनधन खाते का सक्रिय परिचालन कर रहे हैं.पीएम स्वनिधि खाताधारकों का औसत डेबिटकार्ड खर्च, ऋण की किस्त चुकाने के बाद 50प्रतिशत बढ़ा है. यह उनके वित्तीय व्यववहार में सुधार का सूचक है. प्रधानमंत्री जी ने 24 अक्तूबर 2023 को जारी अपने एक ट्वीट में कहा है कि “यह अध्ययन पीएम स्वनिधि के गुणात्मक प्रभाव की स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करता है.”

5. **डिजीटल वित्तीय समावेशन और प्रौद्योगिकी:** विश्व बैंक की यह मान्यता है कि डिजीटल वित्तीय समावेशन में प्रौद्योगिकी का एक अहम योगदान है. इसके माध्यम से वित्तीय सेवाओं का व्यापक विस्तार, पारदर्शिता में वृद्धि, नकली मुद्रा के चलन में कमी, तत्काल वित्तीय निर्णय, त्वरित ऋण, तुरंत भुगतान की सुविधा, सेवा प्रदाताओं के लिए रोजगार का सृजन जैसे अनेक लाभ प्राप्त किए जा सकते हैं और वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया को निर्णायक गति दी जा सकती है. इस दिशा में निम्नलिखित प्रौद्योगिकीय उत्पाद और सेवाओं की भूमिका मुख्य रुप से उल्लेखनीय है:

- **मोबाइल बैंकिंग:** यह सुविधा वित्तीय सेवाओं की एक वृहद श्रंखला उपलब्ध कराती है जिसमें खातों में बकाया राशि की जांच,धन राशि का अंतरण, बिलों का भुगतान, ऋण-सुविधा के लिए आवेदन इत्यादि शामिल है. इन सेवाओं को प्राप्त करने के लिए बैंक की किसी शाखा में जाने की आवश्यकता नहीं है बल्कि स्मार्टफोन के माध्यम से विभिन्न प्रकार के वित्तीय लेनदेन “कभी भी और कहीं भी” सम्पन्न किये जा सकते हैं.आउटलुक बिजनेस मनी पत्रिका में दिनांक 27 सितम्बर 2023 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार मोबाइल लेनदेन में वर्ष 2023 की प्रथम छमाही में 52.15 बिलियन की वृद्धि हुई है जो कि वर्ष 2022 की प्रथम छमाही की तुलना में 55.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है.
- यूपीआई: यूपीआई का प्लेट्फार्म वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करने में एक कारगर कदम सिद्ध हुआ है. उदाहरण के लिए पहले चाय की दुकान चलाने वाला व्यक्ति जो ग्राहकों से नकद भुगतान लेता था ,वह अब उनसे यूपीआई एप के मार्फत सीधे अपने खाते में भुगतान स्वीकार कर रहा है. इससे न केवल वह अपने प्रधानमंत्री जनधन खाते को सक्रिय रखते हुए योजना में उपलब्ध सुविधा का लाभ प्राप्त कर रहा है बल्कि इससे अपने क्रेडिट स्कोर को भी उच्च स्तर पर ले जा पाने में भी समर्थ हो रहा है. आउटलुक बिजनेस मनी पत्रिका में दिनांक 27 सितम्बर 2023 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार यूपीआई लेनदेन में वर्ष 2023 की प्रथम छमाही में, वर्ष 2022 की प्रथम छमाही की तुलना में 62 प्रतिशत की जबर्दस्त वृद्धि हुई है. यह संख्या गत वर्ष 31.95 बिलियन थी जो इस वर्ष बढ़कर 51.91 बिलियन हो गयी है.
- वित्तीय साक्षरता एप: वित्तीय शिक्षण और साक्षरता को प्रोत्साहन देने के लिए यह एप ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से रोचक तरीकों से जानकारी उपलब्ध कराता है.इसमें उपलब्ध शैक्षणिक मॉड्यूल्स, बजटिंग एवं निवेश के सम्बंध में जानकारी हासिल करते हुए उपयोगकर्ता(यूजर्स) अपनी वित्तीय समझ को बढ़ा सकते हैं तथा अपनी वित्तीय जरुरतों को पूरा करने के लिए स्वयं ही उचित निर्णय ले सकते हैं.

6. **फिनटेक कम्पनी और वित्तीय समावेशन:** भारत के दुर्गम और सुदूर इलाकों में वित्तीय समावेशन को विस्तार देने में फिनटेक कम्पनियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है. फिनटेक प्रणाली अपनाये जाने वाले देशों मे भारत आज एक अग्रणी देश बन चुका है तथा पिछले कुछ वर्षों में कई फिनटेक कम्पनियों ने अभूतपूर्व प्रगति की है. इस दशक के आरम्भ में जिन क्षेत्रों में इनकी उपस्थिति नगण्य थी वहाँ आज लगभग 10000 फिनटेक कम्पनियां कार्यरत हैं. एक आकलन के अनुसार भारत में लगभग 90प्रतिशत ऐसी सूक्ष्म इकाइयां हैं जो अभी भी औपचारिक ऋण-प्रणाली से बाहर हैं, असम्पृक्त हैं.लघु उद्योग के साथ-साथ यह वर्ग भी बैंक और

फिनटेक सेवा-प्रदाताओं के सहयोग से लाभ उठा सकता है.

7. **डिजीटल आनबोर्डिंग और वित्तीय समावेशन:** बैंकिंग के क्षेत्र में डिजीटल आनबोर्डिंग एक स्वचालित प्रक्रिया है जो ग्राहकों को वित्तीय उत्पाद और सेवाएं सुलभ कराती है. इस सम्बंध में केवाईसी रजिस्ट्रेशन एक महत्त्वपूर्ण कदम है. एक अनुमान के अनुसार अबतक 100 मिलियन से अधिक केवाईसी रिकार्ड इस प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं. इस आनलाइन प्लेटफार्म पर बैंक खाता खोलना,ऋण की प्राप्ति इत्यादि गतिविधियां त्वरित और आसान रुप से सम्पन्न होती हैं जिससे वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में उल्लेखनीय सहायता प्राप्त हो रही है.

8. **वित्तीय समावेशन सूचकांक:** भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वर्ष 2021 में इस सूचकांक को विकसित किया गया जिसे प्रति वर्ष जुलाई में जारी किया जाता है. वित्तीय समावेशन सूचकांक एक व्यापक सूचकांक है जिसमें बैंकिंग, बीमा, पेंशन,निवेश और डाक विभाग शामिल हैं. इसका उद्देश्य समाज के कम आय वर्ग को उचित समय तथा कम लागत पर वित्तीय सेवाएं और ऋण की उपलब्धता की निगरानी करना है.इस सूचकांक की गणना सरकार और सम्बंधित क्षेत्रों के परामर्श से की जाती है. वित्तीय समावेशन सूचकांक जो मार्च 2021में 53.9 प्रतिशत था वह 15 सितम्बर 2023 को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी वक्तव्य के अनुसार मार्च 2023 में 60.1 प्रतिशत हो गया है.

9. **अंतर्दृष्टि डेशबोर्ड:** भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर श्री शक्तिकांत दास ने दिनांक 05 जून 2023 को अंतर्दृष्टि डेशबोर्ड का शुभारम्भ किया जो कि आवश्यक डेटा एकत्रित करते हुए वित्तीय समावेशन की प्रगति का मूल्यांकन और उसकी निगरानी करेगा. यह टूल समूचे भारत में स्थानीय स्तर पर वित्तीय -वंचन के सही आकलन को भी सम्भव बनायेगा. वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारतीय रिजर्व बैंक विभिन्न नीतिगत उपायों के द्वारा अपनी भूमिका का निर्वाह करा रहा है जिनमें से अंतर्दृष्टि ड़ेशबोर्ड की शुरुआत इस दिशा में एक सार्थक कदम है.

बिजनेस स्टेंडर्ड अखबार में दिनांक 05 मई 2023 की रिपोर्ट के अनुसार संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारियों और अर्थशास्त्रियों ने यह रेखांकित किया है कि भारत डिजीटल क्रांति का कर्णधार है और वित्तीय समावेशन की दिशा में इसकी यात्रा विश्व के अन्य विकासशील देशों के लिए एक अनुपम उदाहरण है.इसी प्रकार वित्तीय समावेशन के लिए वैश्विक साझेदारी पर मुम्बई में दिनांक 14-16 सितम्बर 2023 के बीच आयोजित जी20 की चौथी बैठक में एमएसएमई की वृद्धि, डिजीटल वित्तीय साक्षरता और उपभोक्ता संरक्षण के माध्यम से ग्राहकों के सशक्तीकरण पर विस्तार से हुई चर्चा इस बात का सूचक है कि डिजिटलाइजेशन से भारत के वित्तीय समावेशन कार्यक्रम के लिए उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं. इस अवसर पर प्रस्तुत रिपोर्ट में यह बात भी मानी गई है कि भारत की डिजीटल सार्वजनिक संरचना ने देश में समग्र रुप से एक उल्लेखनीय एवं गुणात्मक परिवर्तन किया है.

भावी दिशा

वित्तीय उद्योग जगत वित्तीय उत्पाद और सेवाओं के समग्र प्रचार-प्रसार के लिए नई रणनीति के साथ नई दिशाओं में आगे बढ़ रहा है और अक्सर अपने मुनाफे का निवेश वित्तीय समावेशन के विस्तार में कर रहा है ताकि जनसामान्य और लघु संस्थान के साथ ही उन्हें भी लाभ प्राप्त हो सके.

जी 20, संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्व बैंक ने वित्तीय समावेशन को वैश्विक विकास का एक महत्त्वपूर्ण नियामक माना है.संतुलित, समावेशी और न्यायसंगत विकास के लिए आज वित्तीय समावेशन एक महत्त्वपूर्ण एजेंडा है.दुनिया भर में हुए अनुसंधान इस बात की ओर इंगित करते हैं कि विकसित और समावेशित वित्तीय प्रणालियां तीव्रतर वृद्धि और बेहतर आय वितरण से सम्बद्ध हैं. 2030 के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा सतत विकास लक्ष्यों में वित्तीय समावेशन को गरीब और हाशिए के वर्गों की आय तथा उनके जीवन स्तर में सुधार के लिए एक प्रमुख प्रवर्तक माना गया है.

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि वित्तीय समावेशन देश के आर्थिक विकास में एक निर्णायक योगदान दे रहा है.वर्तमान समय में वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में टिकाऊ व्यवसायिक माडल, प्रौद्योगिकी, सेवा प्रदाता और नियामक संस्थाओं के बीच उचित तालमेल स्थापित हो रहा है. आम जनता तक वित्तीय सेवाओं की पहुंच हमारे देश में विदेशी निवेशकों को आकर्षित कर रही है.इससे स्वाभाविक रुप से रोजगार सृजन और व्यवसाय के अवसर पैदा होंगे. दरअसल, वित्तीय समावेशन समाज के समावेशी विकास का एक मुख्य स्रोत है जिसमें देश की सामान्य जनता, आर्थिक और सामाजिक बदलाव की प्रक्रियाओं में अधिक प्रभावी रुप से हिस्सेदारी करने में अपनी भूमिका निभा रही है. यदि इसकी प्रगति की रफ्तार ऐसी ही रही तो भारत समूचे विश्व को वित्तीय समावेशन के प्रभावी कार्यांवयन के लिए एक स्पष्ट दिशा व समर्थ नेतृत्व दे सकता है.

भारतीय रिजर्व बैंक के उप गवर्नर डॉ. माइकल देबब्रत पात्र ने 24 दिसम्बर 2021 को कहा था कि "जैसे जैसे वित्तीय साक्षरता के प्रयास तेज होंगे वैसे वैसे एक सम्मिलित और जागरुक आबादी

मौद्रिक नीति निर्धारण और कार्यान्वयन में भागीदार बनेगी. अपनी वित्तीय जरुरतों को तर्कसंगत बनायेगी और नीतिगत फायदों को वित्तीय प्रणाली में अधिक प्रभावी रुप से विस्तार देने हेतु वित्तीय संस्थाओं को प्रेरित करेगी." यह वक्तव्य वित्तीय समावेशन में वित्तीय जागरुकता के महत्त्व को न केवल रेखांकित करता है बल्कि वित्तीय समावेशन के मार्ग में आने वाली मांग और आपूर्ति आधारित चुनौतियों के समाधान हेतु उपयोगी सूत्र भी देता है.वित्तीय साक्षरता और जागरुकता से जहाँ एक ओर ग्राहक अपना वित्तीय ज्ञान विकसित करते हुए अनेक प्रकार की भ्रांतियों और संकुचित मानसिकता से दूर होंगे वहीं दूसरी ओर सेवा प्रदाता भी उन्हें अच्छी, त्वरित और पारदर्शी सेवा देने को बाध्य होंगे.

यदि हम सब योजनाबद्ध तरीकों से वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संकल्प और सकारात्मक उर्जा के साथ, मिल-जुलकर सघन, सतत और सुसंगत प्रयास करें तो निश्चित रूप से हमें सर्वोत्कृष्ट परिणाम प्राप्त होंगे.

प्रमुख संदर्भ स्रोत:

1. आरबीआई वेबसाइट
2. पीएमजेडीवाई.गव.इन
3. बिजिनेस स्टेंडर्ड
4. इकोनामिक टाइम्स
5. टाइम्स ऑफ इंडिया
6. विश्व बैंक वेबसाइट
7. इकोनामिक एंड़ पोलिटीकल वीकली
8. आउटलुक बिजिनेस मनी

प्रदीप पाटिल
सहायक महाप्रबंधक, एस एस बी, चेन्नै

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 08.01.2024 हमारे राजकोट क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया. निरीक्षण की झलकियां.

संसदीय समिति के दिनांक 10.01.2024 को बडौदा आगमन पर माननीय संसद सदस्यों का स्वागत करते हुए माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा जी एवं साथ में सुश्री पॉपी शर्मा, महाप्रबंधक, केन्द्रीय कार्यालय.

घरों को सशक्त बनाती - पीएम - सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना

भारतीय संस्कृति और जीवनशैली में पर्यावरण सुरक्षा को विशेष महत्व दिया गया है. पेरिस समझौते के तहत भारत ने अपनी 40 प्रतिशत ऊर्जा उत्पादन क्षमता गैर-जीवाश्म स्त्रोतों से सन 2030 तक प्राप्त करने का लक्ष्य रखा था. भारत ने इस लक्ष्य को नौ साल पहले ही सन 2021 में प्राप्त कर लिया है और रिन्यूएबल एनर्जी के मामले में भारत दुनिया के शीर्ष चार देशों में शामिल हो गया है. आज जब रिन्यूएबल एनर्जी की ओर ट्रांजिशन को लेकर दुनिया में चर्चा होती है तो भारत को मॉडल के रूप में देखा जाता है.

जनभागीदारी और सामूहिक प्रयासों से हम ऊर्जा आत्मनिर्भरता सुनिश्चित करने और भारत को उर्जा निर्यातक बनाने में सफल हो रहे हैं. सौर-ऊर्जा 21वीं सदी की ऊर्जा आवश्यकताओं का एक बड़ा माध्यम बनकर उभरा है. सौर ऊर्जा को जनभागीदारी से जोडने की दिशा में प्रधानमंत्री महोदय द्वारा पीएम - सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना आरंभ की गई है.

पीएम - सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना - पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का शुभारंभ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा दिनांक 13 फरवरी 2024 को किया गया. जिसका बजट केन्द्र सरकार द्वारा 75,000 करोड रूपये रखा गया है. इस परियोजना के अंतर्गत एक करोड़ घरों के छतों पर रूफटॉप सोलर पैनल लगाकर ऊर्जा उत्पादन किया जाएगा. यह परियोजना भारत की हरित ऊर्जा के लक्ष्यों को पूरा करने में भी आवश्यक भूमिका निभाएगी.

उपभोक्ताओं को लाभ - छत पर सौर पैनल स्थापित करने से एक घर को 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली की मासिक आपूर्ति होगी और छत की क्षमता और खपत के आकार के आधार पर 15000 से 18000 रूपये की वार्षिक बचत होगी. ग्रामीण क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक दोपहिया/तिपहिया वाहनों, कारों के लिए चार्जिंग स्टेशन स्थापित करके भी लाभ लिया जा सकता है.

आवेदक की योग्यता - सभी परिवार आवेदन कर सकते हैं लेकिन सब्सीडी तीन किलोवाट (3000 वाट) तक की क्षमता वाले रूफटॉप सिस्टम के लिए ही उपलब्ध है. आवेदन https://pmsuryaghar.gov.in पर किया जा सकता है. पोर्टल छत प्रणाली की उचित क्षमता और उसके लाभों के बारे में भी जानकारी देता है.

पूर्व शर्तें - सब्सिडी पात्र होने के लिए परिवारों को भारत में निर्मित सौर पेनलों का उपयोग करना होगा तथा पोर्टल पर उपलबध सरकार द्वारा सूचीबध्द विक्रेताओं से सिस्टम स्थापित करवाना होगा. यदि कोई परिवार सब्सिडी चाहता है तो बैटरी भंडारण की अनुमति नहीं है.

रूफटॉप सोलर के लिए आवेदन करने की पध्दति -

स्टेप-1 निम्नलिखित विवरण के साथ पोर्टल में पंजीकरण करें.

क. अपना राज्य चुनें.

ख. अपनी विद्युत वितरण कंपनी का चयन करें.

ग. अपना बिजली उपभोक्ता क्रमांक दर्ज करें.

घ. मोबाइल नंबर दर्ज करें.

पोर्टल के निर्देशानुसार अपना पंजीकरण पूरा करें.

स्टेप-2 उपभोक्ता संख्या और मोबाइल नंबर के साथ लॉगिन करें.

फार्म के अनुसार रूफटॉप सोलर के लिए आवेदन करें.

स्टेप-3 डिस्कॉम से व्यवहार्यता अनुमोदन (फिजिबिलिटी अप्रूवल) की प्रतिक्षा करें.

व्यवहार्यता अनुमोदन प्राप्त होने पर अपने डिस्कॉम में किसी भी पंजीकृत विक्रेता से संयंत्र स्थापित करवाएं.

स्टेप- 4 एक बार इंस्टालेशन पूर्ण हो जाने पर प्लांट का विवरण जमा करें तथा नेटमीटर के लिए आवेदन करें.

स्टेप - 5 नेटमीटर लगने व निरिक्षण के पश्चात पोर्टल से कमीशनिंग प्रमाणपत्र तैयार करें.

स्टेप - 6 कमीशनिंग रिपोर्ट प्राप्त होने पर पोर्टल के माध्यम से बैंक खाते का विवरण और एक कैंसल चेक जमा करें. तीस दिन के भीतर आपके बैंक खाते में सब्सिडी जमा हो जाएगी.

सब्सिडी - वित्तीय सहायता केवल तीन किलोवाट क्षमता तक की प्रणालियों के लिए ही उपलब्ध है. सब्सिडी दो किलोवाट क्षमता तक

पुण्यवान लोग ही दुख पाते हैं - भट्ट नारायण

की प्रणाली की लागत की 60 प्रतिशत और दो से तीन किलोवाट क्षमता के बीच की प्रणाली के लिए अतिरिक्त लागत का 40% है, जो कि एक किलोवाट क्षमता के सिस्टम के लिए लगभग 30,000 रूपये, दो किलोवाट के लिए 60,000 रूपये और तीन किलोवाट या अधिक क्षमता के लिए 78,000 रूपये होगी.

छत पर पैनल स्थापित होने तथा सरकारी अधिकारी द्वारा उचित निरिक्षण के पश्चात सब्सिडी का भुगतान सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में किया जाएगा.

रूफटॉप सिस्टम की लागत - रूफटॉप सिस्टम की लागत सोलर पैनलों की संख्या और उसके आकार तथा विशिष्टताओं के साथ-साथ दक्षता के अनुसार तय होती है. माउंटिंग और इलेक्ट्रॉनिक्स की गुणवत्ता के अनुसार भी लागत तय होती है. एक किलोवाट रूफटॉप सिस्टम की लागत 50,000 रूपये या अधिक और तीन किलोवाट की इकाई की लागत 1.6 लाख से अधिक हो सकती है.

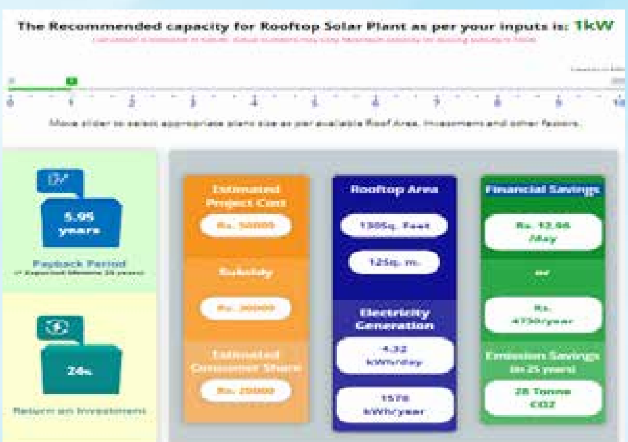

एक किलोवाट रूफटॉप सिस्टम का पूर्ण विवरण. (अनुमानित)

रूफटॉप सिस्टम में शामिल चीजें - सोलर पैनल्स, सोलर माउंटिंग स्ट्रेस्चर, सोलर इन्वर्टर, कैबल्स, फ्युजस, एमसीबीज (MCBs) और डिस्ट्रीब्युशन बॉक्सेस. आमतौर पर अधिकतम सौर किरणों के लिए एक किलोवाट रूफटॉप सिस्टम के लिए 130 वर्गफीट समतल, छाया मुक्त क्षेत्र की तथा तीन किलोवाट रूफटॉप सिस्टम के लिए 300-350 वर्गफीट की जगह की आवश्यकता होती है.

सोलर पैनलों की संख्या - अधिकांशत: एक किलोवॉट सिस्टम में 250-300 वाट के 3-4 सोलर पैनल लगते है. उच्च दक्षता वाले पैनल रेटेड बिजली उत्पादन उत्पन्न करने के लिए आवश्यक संख्या को कम कर देते है. क्षमता बढने पर पैनलों की संख्या बढती है.

कार्यप्रणाली - सौर पैनल सूर्य के प्रकाश से डी.सी. (D.C.) करेंट उत्पन्न करते हैं जिसे सोलर इनवर्टर द्वारा 220 वोल्ट के अल्टरनेट करेंट (A.C.) में परिवर्तित किया जाता है और मुख्य वितरण/ जंक्शन बॉक्स के माध्यम से घरेलु तारों में प्रवाहित किया जाता है.

बिजली उत्पादन - उत्पादन में स्थान और प्राप्त सूर्यप्रकाश की मात्रा अहम है. औसतन एक किलोवाट का सिस्टम साफ, धुप वाले दिन में 4-5 यूनिट या प्रति माह 120 यूनिट बिजली उत्पन्न करता है. एक तीन किलोवाट सिस्टम प्रतिदिन लगभग 12 यूनिट बिजली उत्पन्न कर सकता है.

उपकरण जो इसपर चलाए जा सकते हैं - एक किलोवाट का सिस्टम एक छोटे टीवी, फ्रिज, कुछ लाईटस् और अन्य बुनियादी उपकरणों को बिजली देने के लिए 800 वाट तक का भार संभाल सकता है. इन्हें एक साथ चलाया जा सकता है कि नही यह उनकी पावर रेटिंग पर निर्भर करता है. तीन किलोवाट का रूफटॉप सिस्टम एयर-कंडिशनर, वाशिंग मशीन सहित छोटे घरों का पूर्ण ऊर्जा भार संभाल सकता है.

बिजली उत्पादन की गणना - यह नेट मीटरिंग द्वारा किया जाता है जो कन्जुमर को "प्रोज्यूमर" में बदल देता है और रूफटॉप सिस्टम वाले घरों की शेष ऊर्जा उपयोगिता (युटिलिटी) ग्रिड को बेचने की अनुमती देता है.

नेट मीटरिंग कैसे काम करता है - जब सौर ऊर्जा का उत्पादन कम होता है, तो नियमित कनेक्शन के माध्यम से ग्रिड से बिजली ली जाती है और उपभोक्ता से उपयोग की गई यूनिटों की संख्या के लिए शुल्क लिया जाता है. जब सौर उर्जा उत्पादन भार से अधिक हो जाता है तो अधिशेष ग्रिड कनेक्शन के माध्यम से वितरण नेटवर्क में प्रवाहित होता है.

बिलिंग चक्र के अंत में यदि किसी घर ने आपूर्ति से अधिक बिजली का उपयोग किया हो तो उनसे शुल्क लिया जाता है और यदि उपयोग से अधिक ग्रिड को बिजली दी है तो दी गई यूनिटों की संख्या के आधार पर उनको भुगतान किया जाता है. पॉजिटीव बेलेंस को अगले बिलिंग चक्र में भी आगे बढाया जा सकता है.

ऋण (लोन) विकल्प:- जो परिवार सब्सिडी के अतिरिक्त खर्चे को वहन करने में असमर्थ है वे बैंकों से वित्तीय सहायता ले सकते है. बहुत से सरकारी बैंक तीन किलोवाट तक का रूफटॉप सोलर पैनल लगाने के लिए सात प्रतिशत की दर से ऋण उपलब्ध कर रहे है.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया 10 किलोवाट तक के रूफटॉप सोलर पैनल लगाने के लिए 6 लाख रूपये तक का ऋण मुहैया कर रहा है, जिसमें तीन किलोवाट तक के लिए ब्याज दर 7 प्रतिशत होगी.

उपसंहार:

पीएम - सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना (अनुमानित) 1000 बिलियन यूनिट हरित उर्जा उत्पन्न करेगी. इस योजना से कार्बन डाय ऑक्साइड (CO_2) समकक्ष उत्सर्जन में 25 वर्षों के दौरान 720 मिलियन टन की कमी आएगी. घरेलू क्षेत्र में (अनुमानित) तीस गीगावाट (30 GW) अतिरिक्त सौर क्षमता उत्पन्न करेगी.

इस योजना से विनिर्माण, लॉजिस्टिक आपूर्ति श्रृंखला, बिक्री, स्थापना, रखरखाव आदि में सत्रह लाख प्रत्यक्ष रोजगार का निर्माण होगा साथ ही साथ यह उपभोक्ताओं को सशक्त भी बनाएगी तथा भारत का 2070 तक 'नेट जीरो' का लक्ष्य प्राप्त करने में अहम भूमिका निभायेगी.

यह योजना हमारे कार्बन फुटप्रिंट को कम करके जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी.

"सौर ऊर्जा न केवल बिजली उत्पादन का साधन है बल्कि यह हमारे भविष्य की ऊर्जा स्वायत्तता की कुंजी भी है."

श्री राकेश कुमार सैनी
मुख्य प्रबंधक/संकाय सदस्य
सर एसपीबीटी महाविद्यालय, मुंबई

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा हमारे पणजी क्षेत्रीय कार्यालय का राजभाषा संबंधी सफल निरीक्षण किया गया. निरीक्षण की झलकियां

Digital Banking: A New Era of Financial Services and the CENT NEO Project's Pioneering Role

In last ten years, the financial sector has witnessed a paradigm shift with the advent of digital banking, a phenomenon that has redefined the way banking services are delivered and consumed. Starting from RTGS and NEFT, to digital transactions, banking field has changed completely. As better Customer Service is motto of our beloved bank, the innovative CENT NEO project spearheaded by the Central Bank of India will prove to be a milestone in the history of our bank.

Introduction

Digital banking, also known as electronic banking, has become the cornerstone of modern financial services. It encompasses the digitization of all traditional banking activities, enabling customers to manage their finances through digital channels such as the internet, mobile applications, and ATMs.

The CENT NEO project is an ambitious initiative by the Central Bank of India aimed at revolutionizing its digital banking services. In this initiative, bank will work on paperless branches, in a pilot run. Thereafter, this initiative will be extended to all suitable branches. Looking to the changing banking needs of customers and advances in banking technology, technological development have become the backbone of any bank.

The Evolution of Digital Banking

The evolution of digital banking can be traced back to the introduction of automated teller machines (ATMs) and has since progressed to sophisticated online and mobile banking platforms. The journey has been marked by significant technological advancements, including the development of secure transaction protocols, user-friendly interfaces, and real-time processing capabilities.

Advantages of Digital Banking

Digital banking offers a multitude of advantages that have contributed to its widespread adoption:

- **Accessibility:** Customers can access banking services 24/7 from any location with internet connectivity. Since India is large country and very often, customers have to visit branches for accessing banking facilities. This not only results in cost and time implications, but also causes inconvenience and delays in service delivery. By digitalizing the product and processes, this problem can be resolved.

- **Efficiency:** Digital banking streamlines processes, reducing the time and effort required for transactions. Specialized staff can be assigned the duty to deliver the service without being present there. Also, due to increased competition, banks are under pressure of maintaining their profitability.
- **Cost Reduction:** With passing time, cost involved with maintenance of branch infrastructure has increased significantly. It allows banks to operate with fewer physical branches, lowering overhead costs. Cent Neo will also aid in reducing the requirement of maintaining large branches for accommodating large number of customers visiting the branches.
- **Customization:** Banks can offer personalized services based on customer data and behavior. With increased use, bank can analyze the customer needs better and accordingly develop better suited products, resulting in better customer satisfaction and increased profitability.
- **Innovation:** Digital banking fosters the development of innovative financial products and services. With better developed tools available for calculation, bank can simulate future conditions and accordingly plan better for the future.

Challenges and Risks

Like every other development, Digital banking have benefits and challenges simultaneously. Despite its numerous benefits, digital banking also presents several challenges and risks:

- **Security Threats:** The digital landscape is susceptible to various cyber threats, including hacking, phishing, and identity theft. Customers of Indian Markets are not very educated and vulnerable to frauds. Digital mode of banking is relatively new for them and hence poses a risk of misguiding by wrong doers and fraudsters.
- **Technological Barriers:** Not all customers have access to or are comfortable with using digital banking tools.
- **Regulatory Hurdles:** Banks must navigate complex regulatory environments to ensure compliance.
- **Operational Risks:** The reliance on technology introduces risks related to system failures and data breaches.

The CENT NEO Project

The CENT NEO project is a testament to the Central Bank of India's commitment to enhancing its digital banking capabilities. The project involves the deployment of cutting-edge technologies to create a robust and scalable digital banking platform.

Objectives of the CENT NEO Project

The CENT NEO project aims to achieve several key objectives:

- **Modernization:** To modernize the bank's digital infrastructure, ensuring it is equipped to handle the demands

of contemporary banking. This will also help in modernization of branches as well as change the style of service delivery.

- **Security Enhancement:** To bolster the security framework, protecting customer data and transactions from cyber threats. Every bank branch has many security items like records, documents and valuables. When records and documents will be maintained in electronic form, it will reduce the risk as well as expenses for safekeeping of these items.
- **Service Agility:** To increase the agility of service delivery, enabling the rapid introduction of new features and products. With new technology, our bank will be able to cater the banking needs of customers residing in farthest and remotest place of country as well as out of country.Resulting in better customer retention and better banking experience.
- **Customer Experience:** To improve the overall customer experience, making digital banking more intuitive and user-friendly. With increase in number of banks and globalization, expectations of customers have increased from all banks. New age customer do not want to approach bank for every task and they are techno-savvy too, digital delivery of services is their first demand, generally.

Impact of the CENT NEO Project

The CENT NEO project is poised to have a significant impact on the bank's operations and its customers:

- **Operational Efficiency:** The project will streamline operations, leading to increased efficiency and reduced transaction times, modernization of branches as well as change the style of service delivery.
- **Enhanced Security:** By implementing advanced security measures, the project will enhance the trust and confidence of customers in digital banking. Latest security measures will help in boosting the trust of customers.
- **Competitive Edge:** The project will provide the Central Bank of India with a competitive edge in the digital banking space. In the banking sector, all banks are working towards digitalization and our bank can remain in frontrunners.
- **Innovation Drive:** The CENT NEO project will serve as a catalyst for innovation, encouraging the development of new banking services and products. Our workforce will also get a chance to work in most advanced workplace and this will enhance their ability and skills.

While Our bank is working for digitalization of banking services, few challenges are also there, which will have to be dealt with, for successful implementation of the project.

Rural and Semi Urban Branches- Bank is having a large number of branches in Rural and semi urban, where customers are still habitual of brick and mortar banking. Transition to Neo banking can

result in their approach towards the bank. Bank will also take in account the needs of such centres.

Large number of illiterate or Traditional Customers-Since the newer technology demands technological understanding from customer also, which may be difficult or not possible for the aged and illiterate customers. Bank will have to plan accordingly for such customers' and ensure better customer service to all type of customers.

The Future of Digital Banking

The future of digital banking as well as our bank is bright, with ongoing technological advancements promising to bring even more convenience and security to the customers' of financial services. Emerging technologies such as artificial intelligence, blockchain, and the Internet of Things (IoT) are set to play pivotal roles in shaping the future of financial services.

Conclusion

Digital banking has emerged as a transformative force in the financial sector, offering a host of benefits while also posing certain challenges. The CENT NEO project is a prime example of how our bank is embracing technology to enhance our services and meet the evolving needs of customers. As digital banking continues to advance, our bank being a public sector bank, will undoubtedly play a crucial role in the growth and development of the economy as well as of all stakeholders , staff, customers and society.

Ravikant Sharma
Senior Manager
LDC, Mumbai

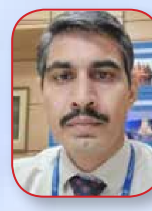

दिनांक 29 फरवरी 2024 को सेवानिवृत्त स्वर्गीय श्री राजेश कुमार, महाप्रबंधक.

संतोष से सर्वोत्तम सुख प्राप्त होता है - पतंजलि

दिनांक 04 एवं 5 मार्च 2024 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया,केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा भोपाल अधिकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय में 14वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया. सम्मेलन की झलकियां

दिनांक 04 एवं 5 मार्च 2024 को सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया,केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा भोपाल अधिकारी प्रशिक्षण महाविद्यालय में 14वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया सम्मेलन की झलकियां.

विद्वानों की संगति जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है - रामतीर्थ

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के विभिन्न अंचलों द्वारा महिला दिवस का आयोजन

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई में महिला दिवस का आयोजन

कर्म ही भाग्य का द्वार होते हैं.

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

भारत निर्वाचन आयोग
Election Commission of India

चुनाव का पर्व
DESH KA GARV
LOK SABHA ELECTION 2024

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

Indian Banks' Association

जैसे आपका हर रुपया मायने रखता है,

वैसे ही हर वोट मायने रखता है

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में गर्व के साथ मतदान करें।

#IVoteForSure

ऑनलाइन पंजीकरण करें या अपना विवरण
voters.eci.gov.in पर सत्यापित करें

स्कैन करें और मतदाता प्रतिज्ञा लें

इस QR कोड को स्कैन करके दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में अपनी प्रतिज्ञा को अहम बनाएं और #IVoteForSure की मदद से अपने सोशल मीडिया हैंडल्स पर शेयर करें।

fb.com/ECI | @ecisveep | youtube.com/eci | @ecisveep | Election Commission of India